प्रज्ञा

प्रथमो भागः

नवमकक्षायाः संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

संपादक

डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जुलाई 2002
श्रावण 1924

ISBN 81-7450-046-1

PD 5T ML

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110 016	बेंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	24 परगना 743 179

प्रकाशन सहयोग

संपादन : एम.लाल
उत्पादन : अरुण चितकारा
सुनील कुमार

आवरण

बालकृष्ण

रु. 43.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, के-5 मालवीय नगर, नई दिल्ली 110 017 द्वारा मुद्रित।

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रमपाठ्यपुस्तकादि-सामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धान-प्रशिक्षणपरिषदः सामाजिक-विज्ञान-मानविकी-शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे नवमवर्गीयच्छात्राणां कृते प्रमुखेभ्यः गद्य-पद्य नाटक - ग्रन्थेभ्यः प्रतिनिधिभूतान् पाठ्यांशान् संकलय्य सम्पाद्य च राष्ट्रियान्दोलनविषयकं पर्यावरण विषयकं निबन्धपाठौ च विरच्य भूमिका-टिप्पणी-प्रश्नाभ्यास-योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते **प्रज्ञा** *प्रथमो भागः* नाम पाठ्यपुस्तकम्। अत्र संस्कृतसाहित्यस्य विविधविधानां गद्य-पद्य-नाटकानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। छात्राः संस्कृते निहितं जीवनोपयोगिज्ञानं संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयुः तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेत् एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकार्तज्ञं प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

जगमोहनसिंहराजपूतः

निदेशकः

राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

नवदेहली

जनवरी, 2002

पाठ्य-पुस्तक-निर्माण-समिति

पाठ्यसामग्री-निर्माण-समिति

कमलाकान्त मिश्र, प्रोफेसर, संस्कृत (संयोजक)

श्रीमती उर्मिल खुंगर सिलेक्शन ग्रेड, लेक्चरर, संस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी रीडर, संस्कृत

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग

पाण्डुलिपि-समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. **प्रो. विद्यानिवास मिश्र**
   पूर्व कुलपति,
   सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. **प्रो. आद्याप्रसाद मिश्र**
   पूर्व कुलपति,
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
3. **प्रो. पंकज चांदे**
   कुलपति, कविकुलगुरु कालिदास
   संस्कृत विश्वविद्यालय
   रामटेक,नागपुर
4. **प्रो. राजेन्द्र मिश्र**
   कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत
   विश्वविद्यालय, वाराणसी
5. **प्रो. मानसिंह**
   सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
6. **डॉ. योगेश्वर दत्त शर्मा**
   रीडर संस्कृत,
   हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली
7. **डॉ. लक्ष्मीनिवास पाण्डेय**
   रीडर, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी
8. **श्रीमती शशिप्रभा गोयल**
   सेवानिवृत्त रीडर
   रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
9. **डॉ. विजय शुक्ल**
   शोध अधिकारी,
   आई.जी.एन.सी.ए.
   नई दिल्ली
10. **श्री रामेश्वरदयाल शर्मा**
    सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य,
    केन्द्रीय विद्यालय, गुड़गाँव
11. **श्रीमती संतोष कोहली**
    सेवानिवृत्त उपप्रधानाचार्या,
    सर्वोदय कन्या विद्यालय,
    कैलाश एन्कलेव, रोहिणी, दिल्ली
12. **डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय**
    पी.जी.टी., संस्कृत, रा.उ.मा.बा.विद्यालय,
    एस.पी.रोड, नांगलोई
13. **श्री ओमप्रकाश ठाकुर**
    सेवानिवृत्त उपप्रधानाचार्य,
    रा.उ.मा.बा.विद्यालय, रोहिणी, दिल्ली
14. **श्री परमानन्द झा**
    पी.जी.टी. संस्कृत, राजकीय उच्चतर माध्यमिक
    बाल विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली
15. **डॉ. सुगन्ध पाण्डेय**
    टी.जी.टी., संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय,
    बी.एच.ई.एल., हरिद्वार
16. **श्रीमती लता अरोड़ा**
    टी.जी.टी., संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय,
    आर.के.पुरम्, सेक्टर - IV नई दिल्ली
17. **श्रीमती रेखा झा**
    टी.जी.टी., संस्कृत
    दिल्ली पुलिस पब्लिक स्कूल
    सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली
18. **डॉ. दया शंकर तिवारी**
    प्रोजेक्ट फेलो, संस्कृत, सा.वि.मा.शि.वि.
    रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। भाषावैज्ञानिकों के मतानुसार यह भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आधारशिला है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुराण, भूगोल, राजनीति एवं विज्ञान का मूल स्रोत होने के कारण यह भारतवर्ष का गौरव एवं प्राण है। मानवता के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु मानवीय मूल्यों की उदात्त व्याख्या कर **वसुधैव कुटुम्बकम्** की स्थापना करना मानव समाज को संस्कृत की मौलिक देन है। सम् उपसर्गपूर्वक कृ धातु से निष्पन्न संस्कृत शब्द का प्रयोग आदिकवि वाल्मीकि ने सुन्दरकाण्ड में इस प्रकार किया है –

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।। (सु.का. 5/14)

अवान्तरकाल में भी प्राकृत आदि बोलचाल की भाषाओं से पृथक् करते हुए भी इसे संस्कृत कहा गया। महाकवि दण्डी के काव्यादर्श से इसकी पुष्टि होती है –

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।। (काव्यादर्श 1/33)

आगे चलकर संस्कृत दो रूपों में विभक्त हुई - वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत। वैदिक साहित्य के अंतर्गत संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रंथ आते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद (चारों वेद) संहिता कहलाते हैं। संहिताओं में जिन मंत्रों का संकलन है उनकी कर्मकाण्डपरक व्याख्या करने वाले ग्रंथों को 'ब्राह्मण' कहा जाता है।

आरण्यकों की रचना वनों में हुई। इनमें कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या की गई है। इसी प्रकार 'उपनिषद्' वैदिक साहित्य के अंतिम अंश माने जाते हैं। इनका दूसरा नाम वेदान्त है, क्योंकि इनमें वेद अर्थात् ज्ञान का प्रौढ़तम रूप प्राप्त होता है। उपनिषद 12 माने जाते हैं, किंतु कालांतर में शताधिक उपनिषदों की रचना हुई। वैदिक साहित्य की दुर्बोधता को दूर करने के लिए वेदाङ्गों की रचना हुई। यास्क के मतानुसार वैदिक अर्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव करने वाले लोगों ने सुविधा के लिए वेदाङ्गों की रचना की। वेदाङ्ग 6 माने जाते हैं - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्यौतिष।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु।।

वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य के बीच की कड़ी पुराण हैं। पुराण शब्द का अर्थ है पुराना आख्यान **(पुराणमाख्यानम्)**। सम्भवतः इनकी प्राचीनता के कारण इनका नाम पुराण पड़ गया। पुराण का लक्षण है –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

अर्थात् सर्ग या सृष्टि, प्रतिसर्ग अर्थात् सृष्टि का प्रलय, वंशावली, मन्वन्तर अर्थात् किस मनु का समय कब रहा और उस काल में कौन सी महत्त्वपूर्ण घटना हुई तथा वंशानुचरित अर्थात् प्रसिद्ध राजाओं की वंश परम्परा का वर्णन - यही पुराणों के पाँच वर्ण्य विषय हैं। पुराण हमारे समाज के प्रतिबिम्ब हैं तथा आदर्श इतिहास के रूप में प्रस्तुत हैं। पुराणों की संख्या मुख्य रूप से अट्ठारह है –

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापल्लिङ्गकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

अर्थात्-

मकार से दो पुराण	-	मत्स्य एवं मार्कण्डेय
भकार से दो पुराण	-	भविष्य और भागवत
ब्रयुक्त तीन पुराण	-	ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त एवं ब्रह्म
वकार से चार पुराण	-	वामन, वराह, विष्णु एवं वायु
अनापल्लिङ्गकूस्कानि	-	अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरूड, कूर्म तथा स्कन्द

इन पुराणों के अतिरिक्त 18 उपपुराण भी मिलते हैं।

संस्कृत साहित्य के विकास की परंपरा में नए अध्याय का आरंभ आदिकवि वाल्मीकि से होता है जिन्होंने लोकनायक मर्यादापुरुषोत्तम राम के चरित्र को केंद्रबिंदु मानकर 'रामायणम्' की रचना की। यह भारतीय संस्कृति का दर्पण ग्रंथ है। इसी तरह कौरवों एवं पाण्डवों के जन्म से लेकर स्वर्ग गमन तक की कथा का वर्णन करते हुए महर्षि वेदव्यास ने 'महाभारत' नामक महाग्रंथ का प्रणयन किया जिसमें जीवन की प्रत्येक दशा का सजीव एवं स्पष्ट चित्रण है। इसमें वर्णित तत्कालीन भारतीय समाज की जीवन पद्धति आज भी लोगों का दिशानिर्देश करती है। महाभारत के विषय में कहा जाता है कि **यन्न भारते तन्न भारते, यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्** अर्थात् जो इसमें है वह अन्यत्र भी है किंतु जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है। रामायण और महाभारत को आधार मानते हुए परवर्ती विद्वानों ने कालांतर में अनेकों रचनाएँ की हैं।

इसी क्रम में कविकुलगुरु महाकवि कालिदास के अभ्युदय के साथ ही संस्कृत-साहित्य में नए-नए सर्जन की ओर कवियों की अभिरुचि बढ़ी। 19 वीं शताब्दी तक अनेकानेक कवियों एवं महाकवियों की रचनाएँ (महाकाव्य,

खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नीतिकथा, चम्पूकाव्य, नाटक तथा शास्त्रीय रचनाओं के रूप में) प्रकाश में आईं। इस प्रकार कालिदास (कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत, ऋतुसंहार) , अश्वघोष (बुद्धचरित, सौन्दरनन्द), भारवि (किरातार्जुनीय) भट्टि (भट्टिकाव्य या रावणवध), माघ (शिशुपालवध), श्रीहर्ष (नैषधीयचरित), जयदेव (गीतगोविन्द) , भर्तृहरि (शृङ्गारशतक, नीतिशतक, वैराग्यशतक), अमरुक (अमरुकशतक) तथा क्षेमेन्द्र (दशावतारचरित) आदि कवियों का नाम महाकाव्य तथा खण्डकाव्य के प्रणेताओं के रूप में प्रसिद्ध है। महाकवि विल्हण (विक्रमाङ्कदेवचरित), सुबन्धु (वासवदत्ता), वाणभट्ट (हर्षचरित, कादम्बरी) तथा पं. अम्बिकादत्त व्यास (शिवराजविजय) आदि विद्वानों का नाम गद्य कवियों के रूप में प्रख्यात है। पं. विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्र), नारायण पण्डित (हितोपदेश) गुणाढ्य (बृहत्कथा), क्षेमेन्द्र (बृहत्कथामञ्जरी) तथा सोमदेव (कथासरित्सागर) आदि विद्वानों का नाम कथाकवियों के रूप में विशेषेण जाना जाता है। त्रिविक्रमभट्ट (नलचम्पू, मदालसा चम्पू), भोज (रामायण चम्पू), नीलकण्ठदीक्षित (नीलकण्ठविजय चम्पू), तिरुमलाम्बा (वरदाम्बिकापरिणयचम्पू) तथा जीवगोस्वामी (पारिजातहरण चम्पू) प्रभृति विद्वान् चम्पूकाव्य के प्रसिद्ध प्रणेता माने जाते है। महाकवि भास (प्रतिमानाटक, अभिषेकनाटक, बालचरित, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार, उरुभङ्ग सहित 13 नाटक), कालिदास (मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल), अश्वघोष (शारिपुत्रप्रकरण), शूद्रक (मृच्छकटिक), विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), हर्ष (प्रियदर्शिका, नागान्द तथा रत्नावली), भवभूति (उत्तररामचरित) तथा भट्टनारायण (वेणीसंहार) प्रभृति कवि प्रमुख नाटककारों के रूप में प्रख्यात हैं। इसी प्रकार अमरसिंह, हलायुध,हेमचन्द्र प्रभृति विद्वान् कोशकारों के रूप में जाने जाते हैं। इसी प्रकार छन्दःशास्त्र के विद्वानों, वैय्याकरणों, दार्शनिकों, धर्मशास्त्रज्ञों, राजनीतिशास्त्रज्ञों, नीतिशास्त्रविशारदों, शिल्पशास्त्रज्ञो, रत्नशास्त्रविशारदो, चिकित्सावैज्ञानिकों द्वारा रचित प्रामाणिक ग्रन्थों की लम्बी परम्परा मिलती है। इसके अतिरिक्त काव्यशास्त्रविदों की

शास्त्रीय रचनाओं का प्राचुर्य आचार्य भरतमुनि से लेकर पंडितराज जगन्नाथ तक प्राप्त होता है।

प्रस्तुत संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यालयी शिक्षा की रूपरेखा - 2000 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में विकसित संस्कृत-पाठ्यक्रम के अनुरूप नवम कक्षा के लिए ***प्रज्ञा*** प्रथमो भागः नामक पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। छात्रों के संस्कृत-ज्ञान को पुष्ट करने, उनमें राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर नैतिक मूल्यों के विकासहेतु इसमें संस्कृत-वाङ्मय की प्रसिद्ध रचनाओं-हितोपदेश, चाणक्यनीति, कथासरित्सागर, नीतिशतक (भर्तृहरि), वेतालपञ्चविंशति, दूतवाक्य, श्रीमद्भगवद्गीता, छान्दोग्योपनिषद् तथा रामायण से पाठ्यांश लिए गए हैं।

प्रस्तुत संकलन में कुल 12 पाठ रखे गए हैं, जिनमें 10 पाठ उपर्युक्त ग्रंथों से तथा दो पाठ निबंध के रूप में समाविष्ट किए गए हैं। पाठ्यांशों को यथासम्भव मूल रूप में ही लिया गया है, किंतु कथासरित्सागर एवं छान्दोग्योपनिषद् से संकलित अंशों को संपादित कर संवाद रूप में लिखा गया है। दो पाठ पर्यावरणरक्षणम् तथा लोकमान्यः तिलकः ललित निबंध के रूप में लिखे गए हैं। संस्कृत वाङ्मय के जिन ग्रंथों से पाठ्यांश लिए गए हैं उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

1. हितोपदेश - हितोपदेश नीति की शिक्षा देने वाले संस्कृत कथा साहित्य के ग्रंथों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसकी रचना नारायण पण्डित द्वारा पञ्चतन्त्र के आधार पर की गई है। इनका समय 14वीं शताब्दी ई. माना जाता है। इसकी 43 कथाओं में 25 कथाएं पञ्चतन्त्र से ली गई हैं। हितोपदेश में चार परिच्छेद हैं - मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह तथा सन्धि। एक कथा से दूसरी

कथा को आरंभ करने की इसकी पद्धति भी पञ्चतन्त्र के ही समान है। इसमें अनेक शिक्षाप्रद श्लोक आए हैं, जिनकी भाषा अत्यंत सरल है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन को समुन्नत एवं उदात्त बनाने के लिए अपेक्षित सामग्री से युक्त होने के कारण यह ग्रन्थ बालकों के लिए अत्यंत उपादेय है।

2. चाणक्यनीति - इस ग्रंथ के प्रणेता चाणक्य हैं। यह नीतिविषयक ग्रंथ है। इसमें 17 अध्याय तथा 340 श्लोक हैं। इसमें राजनीति शास्त्रोक्त नियमों के अनुसार वर्णित है। चाणक्यनीति ज्ञान का भण्डार है जिसे प्राप्तकर छात्र अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। कौटिलीय अर्थशास्त्र जैसे अपूर्व ग्रंथ की रचना कर चाणक्य ने संस्कृत-साहित्य के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया।

3. कथासरित्सागर - यह वृहत्कथा का सबसे बड़ा संस्करण है जिसमें 24,000 श्लोक हैं। लोकजीवन में प्रचलित कथाओं का इनमें सरल एवं मनोहारी चित्रण है। इस ग्रंथ का विभाजन लम्बको और तरंगों में किया गया है। इसमें अंधविश्वास, जादूगरी, शैवमत, बौद्धमत, कर्मवाद, शिवपूजा तथा मातृपूजा का बहुत कुशलता के साथ चित्रण किया गया है। इसके प्रणेता सोमदेव कश्मीर के निवासी थे।

4. चरकसंहिता - उपलब्ध आयुर्वेदीय संहिताओं में चरकसंहिता सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। यह चिकित्साप्रधान ग्रंथ है। इस ग्रंथ में चिकित्सा-विज्ञान के मौलिक तत्त्वों का उत्तम विवेचन है। इसमें आठ खण्ड तथा तीस अध्याय हैं जिनमें आहार, रोग, रोगविज्ञान, शरीरविज्ञान, भ्रूणविज्ञान, निदान एवं सामान्य चिकित्सा विज्ञान वर्णित है। यह ग्रंथ सूत्ररूप में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा (आस्तिक दर्शनों) के साथ चार्वाक आदि नास्तिक दर्शनों तथा परोक्ष रूप से व्याकरण आदि वेदाङ्गों की झाँकी भी प्रस्तुत करता है। इसीलिए इस ग्रंथ को अखिलशास्त्रविद्याकल्पद्रुम कहा जाता है। इसके प्रणेता आचार्य चरक है।

5. नीतिशतक - संस्कृत साहित्य में भर्तृहरि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपने अनुभवों के आधार पर इन्होंने नीतिशतक, शृङ्गारशतक तथा वैराग्यशतक नामक ग्रंथों की रचना की। प्रत्येक में सौ-सौ श्लोक हैं। नीति-शतक में विद्या, वीरता, सज्जनता, मानव व्यक्तित्व आदि वृत्तियों की प्रशंसा है। इसमें मूर्खता, लोभ, दुर्जनता आदि दुर्गुणों की निन्दा भी सरल संस्कृत श्लोकों में की गई है। नीतिशतक के श्लोक जनमानस को आज भी जीवन-संबंधी नीति का निदर्शन करते हैं।

6. वेतालपञ्चविंशतिका - यह अत्यंत ही लोकप्रिय 25 कथाओं का संग्रह है। इसका प्राचीनतम रूप बृहत्कथामञ्जरी तथा कथासरित्सागर में प्राप्त होता है। इसका प्रथम संस्करण शिवदास का है जिसमें कहीं कहीं श्लोक भी मिलते हैं। दूसरा संस्करण जम्भलदत्त द्वारा निर्मित है जो पूर्णरूपेण गद्यात्मक है। इसकी कथाएँ इतनी लोकप्रिय हैं की भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद प्राप्त होता है।

7. दूतवाक्य - महाकवि भास ने 13 नाटक लिखे हैं। इनमें प्रतिमानाटक तथा अभिषेक वाल्मीकिकृत रामायण पर आधारित है। बालचरित, पाञ्चरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार तथा उरुभङ्ग व्यासकृत महाभारत पर आधारित है। प्रतिज्ञायौगन्धरायण तथा स्वप्नवासवदत्त उदयन और वासवदत्ता की कथा पर आधारित हैं। अविमारक तथा चारुदत्त कल्पित रूपक है। दूतवाक्य में भगवान् कृष्ण का पाण्डवों के दूत के रूप में दुर्योधन की सभा में जाने का वर्णन है। सुन्दर एवं सरल संवादों से संवलित भास का यह नाटक अत्यन्त ही मनोहारी एवं छात्रों के लिए उपयोगी है।

8. श्रीमद्भगवद्गीता - यह ग्रन्थ वास्तव में व्यासकृत महाभारत का ही अंश है। इसमें कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य युद्ध आरम्भ होने के समय स्वजनों को देखकर युद्ध से विमुख अर्जुन को भगवान् कृष्ण द्वारा निष्काम भाव से कर्म करने के साथ अन्यान्य उपदेश दिए गए हैं। कृष्ण के उपदेश कठिनाइयों में

पड़े मानव-समाज को अनेक प्रकार से प्रेरित कर उनकी समस्याओं का स्पष्ट समाधान प्रस्तुत करते है। इसमें 18 अध्याय हैं।

9. छान्दोग्योपनिषद् - यह ग्रन्थ सामवेदीय तलवकार ब्राह्मण के अन्तर्गत है। इसमें तत्त्वज्ञान और तदुपयोगी कर्म तथा उपासनाओं का अत्यन्त विशद एवं युक्तियुक्त वर्णन है। उपासना और ज्ञान को सुगमता से समझाने के लिए स्थान स्थान पर आख्यायिकाओं का आश्रय लिया गया है। इसमें आठ अध्याय हैं। 'तत्त्वमसि' का निरूपण छठे अध्याय में किया गया है। यह उपनिषद् सभी स्तर के छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

10. रामायण - संस्कृत साहित्य में रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। इसके प्रणेता वाल्मीकि आदिकवि कहे जाते है। स्वयं रामायण से ही इस तथ्य की पुष्टि होती है –

रामायणं चादिकाव्यं स्वर्गमोक्षप्रदायकम्॥

रामायण में वर्णित विषय-वस्तु परवर्ती संस्कृत कविता की आधारशिला है। इसके सात काण्डों में वाल्मीकि ने मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का अत्यन्त ही मनोहारी एवं मार्मिक रूपांकन प्रस्तुत किया है। इसमें वर्णित भरत एवं राम का भ्रातृ-स्नेह, राम की पितृभक्ति, हनुमान एवं लक्ष्मण का सेवाभाव, राम एवं सीता की दाम्पत्य-निष्ठा, विभीषण की शरणागति, सुग्रीव एवं राम की मैत्री, निषाद, शबरी तथा पक्षिराज जटायु की भगवन्निष्ठा आदि प्रसंग मानव-मन की सूक्ष्मता का विवेचन करते हैं।

12 पाठों की यह पुस्तक दो सत्रों की परीक्षा के लिए विकसित की गई है। पुस्तक को छात्रों के लिए रुचिकर बनाए रखने के लिए पुस्तक में श्लोक (पद्य), संवाद, कथा, नाटक तथा निबन्ध पाठों का विविधता के क्रम में समायोजन किया गया है। पाठ के साथ आवश्यक चित्र देकर पाठ्यवस्तु को रोचक बनाने का प्रयास किया गया है।

पाठों के आरंभ में पाठ-संदर्भ दिया गया है, जिससे संकलित अंशों के प्रसंग से परिचित होकर छात्र निर्धारित पाठ्यांश को सरलता से हृदयंगम कर सकें। अर्जित ज्ञान के दृढ़ीकरण एवं परीक्षण के लिए वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरीय तथा निबंधात्मक रूपों में अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं। संस्कृत में अभिव्यक्ति को विकसित करने के उद्देश्य से प्रत्येक पाठ के साथ मौखिक प्रश्न दिए गए हैं। छात्रों की सुविधा के लिए पाठों में आए नवीन एवं कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिए गए हैं। 'अस्माभिः किम् अधीतम्' शीर्षक के अंतर्गत पाठ के मुख्य बिंदुओं को सार रूप में पाठों के साथ ही स्पष्ट किया गया है। तदनंतर योग्यता-विस्तार के अंतर्गत ग्रंथ तथा कवि के परिचय के साथ ही साथ ज्ञान की अग्रिम दिशा का दिग्दर्शन कराने का प्रयास किया गया है। पुस्तक के अंत में 'शब्दार्थः' शीर्षक के अन्तर्गत समस्त कठिन शब्दों के व्याकरणात्मक टिप्पणीसहित संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ देकर छात्रों को शब्दकोश देखने की दिशा में प्रवृत्त करने की प्रेरणा देने का प्रयास किया गया है।

इस संकलन द्वारा छात्रों को यथासंभव संस्कृत की शिक्षा संस्कृत माध्यम से प्रदान करने का प्रयास किया गया है फिर भी पाठ-परिचय तथा शब्दों के अर्थ हिन्दी में देकर संस्कृत की शिक्षा को सुगम एवं उपयोगी बनाने का व्यावहारिक प्रयास किया गया है।

विगत वर्षों में संस्कृत अध्ययन-अध्यापन की परंपरा पर दृष्टिपात कर ऐसा अनुभव किया गया है कि इस स्तर पर संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन, व्याकरण एवं अनुवाद विधि से हो रहा है, जिससे छात्रों को संस्कृत का अपेक्षित ज्ञान नहीं हो पाता है। वे उच्चस्तरीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनंतर भी संस्कृत बोलने में अक्षम रहते हैं। अतः व्याकरण एवं अनुवाद विधि के स्थान पर प्रत्यक्ष-विधि को उपयोग में लाना उपयोगी होगा; किंतु एकाएक प्रत्यक्ष-विधि या संप्रेषण-विधि से विद्यालय में उपलब्ध-कालांशों एवं अध्ययन

में लगने वाले समय को ध्यान में रखते हुए प्रत्यक्ष-विधि या संप्रेषण-विधि से संस्कृत पढ़ना छात्रों को अरुचिकर होने के साथ ही साथ अधिक श्रमसाध्य भी हो सकता है। अतः प्रत्यक्ष विधि/संप्रेषण-विधि तथा व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि को अपनाकर संस्कृत पढ़ाने के उद्देश्य से इस संकलन को तैयार किया गया है जिससे छात्रों के संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन के क्रम में रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि संकलन को छात्रोपयोगी एवं स्तर के अनुरूप बनाने का प्रयास किया गया है तथापि इसे छात्रों के लिए और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत-अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

विषयानुक्रमणिका

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

वन्दना

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः

त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।

वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम

त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।।1।।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः

प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।

नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः

पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।2।।

त्वमन्तकः स्थावरजङ्गमानां

त्वया जगत् प्राणिति देव! विश्वम्।

त्वं योगिनां हेतुफले रुणत्सि

त्वं कारणं कारणकारणानाम्।।3।।

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः।

अर्हन्नित्यथजैनशासनरता कर्मेति मीमांसकाः

सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।4।।

भावार्थ : हे विराट पुरुष ! तुम आदि (सर्वप्रथम) देव हो, पुरातन पुरुष हो। तुम इस संसार के सर्वश्रेष्ठ आश्रय हो। तुम ज्ञाता हो, तुम्ही ज्ञेय (जानने योग्य) हो और परमधाम हो। हे अनंतरूप! तुम्हारे द्वारा यह संसार व्याप्त है ।।1।।

तुम वायु, यम, अग्नि, वरुण तथा चंद्र हो। तुम प्रजापति (प्रजाओं के स्वामी) तथा प्रपितामह (ब्रह्मा) हो। तुम्हें हजारों बार प्रणाम और तुम्हें पुनः पुनः प्रणाम। ॥2॥

तुम चर–अचर (जगत्) के संहारक हो। हे देव ! तुम्हारे द्वारा ही संसार प्राण धारण करता है (जीवित रहता है), तुम योगियों के कर्म–फल के नाशक हो। तुम (इस) संसार के कारणों के भी कारण (हेतु) हो ॥3॥

शैव (शिवभक्त) जिनकी उपासना शिव के रूप में करते हैं, वेदांती जिनकी उपासना ब्रह्म के रूप में करते हैं, बुद्ध को मानने वाले जिनकी उपासना बुद्ध के रूप में करते हैं, प्रमाणपटु नैय्यायिक जिनकी उपासना कर्त्ता के रूप में करते हैं, जैनमतावलंबी जिनकी उपासना अर्हंत के रूप में करते हैं और मीमांसक जिनकी उपासना कर्म के रूप में करते हैं, वे तीनों लोकों के स्वामी हरि हमें मनोवाञ्छित फल प्रदान करें। ॥4॥

प्रथमः पाठः

दुर्बुद्धिः विनश्यति

[प्रस्तुत पाठ नारायणपंडित द्वारा रचित 'हितोपदेश' नामक ग्रंथ के संधि-खंड की एक कथा है। इसमें अपने मित्र हंसों के मना करने पर भी अन्य सरोवर को जाने की योजना बनाने वाले कछुए के प्राणांत की कथा का रोचक एवं मार्मिक वर्णन है। इस कथा द्वारा उत्तम मित्रों के हितकारी वचनों को स्वीकार करने और सर्वदा तदनुकूल आचरण करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।]

अस्ति मगधदेशे फुल्लोत्पलाभिधानं सरः। तत्र संकटविकटनामानौ हंसौ चिरं निवसतः। कम्बुग्रीवनामा तयोर्मित्रम् एकः कूर्मोऽपि तत्रैव प्रतिवसति। अथ एकदा धीवरैरागत्य तत्रोक्तम् यदत्र "अस्माभिः श्वः मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः।" तदाकर्ण्य कूर्मो हंसौ आह – "सुहृदौ ! श्रुतोऽयं धीवराणामालापः। अधुना किं मया कर्तव्यम्?" हंसौ अवदताम् – "प्रातः यद् उचितं तत्कर्तव्यम्" इति। कूर्मो ब्रूते – "मैवम्। यतः उक्तम्"–

अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा।
द्वावेतौ सुखमेधेते यद्भविष्यो विनश्यति।। इति।

तद् यथाऽहमन्यं ह्रदं प्राप्नोमि तथा क्रियताम्। हंसौ अवदताम् – "जलाशयान्तरं गते तव कुशलम्, किन्तु स्थले गच्छतस्ते को विधिः?" कूर्म आह – "यथाहं भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण यामि तथा क्रियताम्।"

हंसौ ब्रूतः – "कथमुपायः सम्भवति?" कच्छपो वदति – "युवाभ्यां चञ्चुधृतं काष्ठखण्डमेकं मया मुखेन अवलम्बितव्यम्। ततश्च युवयोः पक्षबलेन अहमपि सुखेन गमिष्यामि।" हंसौ ब्रूतः – "सम्भवत्येष उपायः। किन्तु उपायं

चिन्तयन् प्राज्ञो ह्यपायमपि चिन्तयेत्।" आवाभ्यां नीयमानं त्वामवलोक्य लोकैः किञ्चिद् वक्तव्यमेव। यदि त्वमुत्तरं दास्यसि तदा तव मरणं निश्चितम्। तत् सर्वथा अत्रैव स्थीयताम् इति। कूर्मः सकोपं वदति – किमहं मूर्खः? कस्मैचित् अपि उत्तरं न दास्यामि। न किमपि मया तदानीं वक्तव्यम् इति।

एवमनुष्ठिते तथाविधं कूर्मं दृष्ट्वा सर्वे गोपलकाः पश्चाद् धावन्ति वदन्ति च – "अहो महदाश्चर्यम् ! पक्षिभ्यां कूर्मो नीयते।" कश्चिद् वदति – यद्ययं कूर्मो निपतति तदा अत्रैव पक्त्वा खादितव्यः। अन्यो वक्ति – "सरस्तीरे दग्ध्वा खादितव्यः"। अपरः कथयति– "गृहं नीत्वा भक्षणीयः" इति।
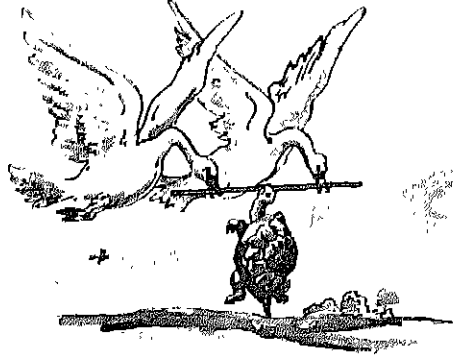
तेषां तद् वचनं श्रुत्वा कोपेन आविष्टो विस्मृतपूर्ववचनः कूर्मः प्राह – "युष्माभिः भस्म खादितव्यम्।" इति वदन् एव सः पतितः, तैर्व्यापादितश्च। अत एवोक्तम् –

सुहृदां हितकामानां वाक्यं यो नाभिनन्दति।
स कूर्म इव दुर्बुद्धिः काष्ठाद् भ्रष्टो विनश्यति।। इति ।।

शब्दार्थाः

ग्राह्याः	– *स्वीकरणीयाः*	– ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य
धीवरैः	– *मत्स्यजीविभिः*	– मछली पकड़ने वालों के द्वारा
व्यापादयितव्याः	– *मारयितव्याः*	– वध करना चाहिए, मारना चाहिए
आकर्ण्य	– *श्रुत्वा*	– सुनकर
आलापः	– *संवादः*	– बातचीत
एधेते	– *वर्धेते*	– (दो) बढ़ते हैं

ह्रदम्	—	*जलाशयम्*	—	तालाब को
गच्छतः	—	*चलतः*	—	जाते-जाते, चलते-चलते
उपायः	—	*साधनम्*	—	साधन, उपाय
पक्षबलेन	—	*पक्षशक्त्या*	—	पंखों की शक्ति के द्वारा
अपायम्	—	*विनाशकं तत्त्वम्*	—	विनाशक तत्त्व को, विनाश के उपाय को
नीयमानम्	—	*उह्यमानम्*	—	लिये जाते हुए
स्थीयताम्	—	*अवस्थानं क्रियताम्*	—	रुक जाइए, बैठिए
अनुष्ठिते	—	*सम्पादिते, कृते*	—	किए जाने पर
तथाविधम्	—	*तादृशम्*	—	वैसे
गोपालकाः	—	*गोचारकाः*	—	ग्वाले
नीयते	—	*उह्यते*	—	ले जाया जा रहा है
पक्त्वा	—	*पाकं कृत्वा*	—	पकाकर
दग्ध्वा	—	*भर्ज्जनं कृत्वा*	—	जलाकर, भूनकर
सुहृदाम्	—	*मित्राणाम्*	—	मित्रों के

अस्माभिः किम् अधीतम्?

- मगधदेशे फुल्लोत्पलं नाम सर आसीत्।
- तत्र संकटविकटनामानौ हंसौ तयोः एकं मित्रं कूर्मश्च वसन्ति स्म।
- एकदा धीवरैः कथितम् — "श्वः आगत्य मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः।"
- कूर्मः प्रतिकारोपायं चिन्तयित्वा अकथयत् यत् काष्ठखण्डम् एकम् हंसौ चञ्च्वा धारयताम्, कूर्मश्च मुखेन। एवं हंसयोः पक्षबलेन कूर्मोऽपि सुखेन गमिष्यति।
- योजनानुसारं हंसयोः पक्षबलेन गच्छन्तं कूर्मं दृष्ट्वा लोकाः विविधं वदन्ति स्म — "यदि अयं कूर्मः पतति तदा पक्त्वा, दग्ध्वा, नीत्वा वा खादयिष्यामः" इति।
- एतत् श्रुत्वा क्रोधेन कूर्मोऽवदत् — "युष्माभिः भस्म खादितव्यम्" एवं वदन् एव कूर्मः पतितः, लोकैश्च व्यापादितः।

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानां एकेनैव पदेन उत्तराणि वदत

क. कूर्मस्य नाम किम् आसीत्?

ख. कौ सुखमेधेते?

ग. कूर्मः आकाशमार्गेण काभ्यां सह अगच्छत्?

घ. उपायं चिन्तयन् प्राज्ञः अन्यत् किं चिन्तयेत्?

ङ. गोपालकानां वचः श्रुत्वा केन आविष्टः कूर्मः वक्तुमारभत?

लिखितः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. मगधदेशे किं नाम सर आसीत्?

ख. धीवरैरागत्य किम् उक्तम्?

ग. कच्छपः मुखेन कस्य अवलम्बनम् अकरोत्?

घ. गोपालकानां वचः श्रुत्वा कोपाविष्टः कूर्मः किं प्राह?

2. सन्धिं / सन्धिविच्छेदं कुरुत

क.	**यथा –**	**हित**	**+**	**उपदेशः**	**=**	**हितोपदेशः**
		फुल्ल	+	उत्पलम्	=	________
		______	+	________	=	तत्रोक्तम्
		एव	+	________	=	एवोक्तम्
ख.	**यथा –**	**तत्र**	**+**	**एव**	**=**	**तत्रैव**
		अत्र	+	एव	=	________
		मा	+	________	=	मैवम्
ग.	**यथा –**	**तयोः**	**+**	**मित्रम्**	**=**	**तयोर्मित्रम्**
		धीवरैः	+	आगत्य	=	________
		तैः	+	व्यापादितः	=	________
घ.	**यथा –**	**कूर्मः**	**+**	**ब्रूते**	**=**	**कूर्मो ब्रूते**
		यद्भविष्यः	+	विनश्यति	=	________

____	+	____	=	को विधिः
____	+	____	=	कूर्मो नीयते

3. यथानिर्देशं परिवर्तनं कुरुत

क. **यथा – कूर्मः तत्र प्रतिवसति** **(द्विवचने)**

कूर्मौ तत्र प्रतिवसतः।

मत्स्याः व्यापादयितव्याः (एकवचने)

अहं सुखेन गमिष्यामि। (बहुवचने)

ख. **यथा – अहं सुखेन गमिष्यामि** **(लट् लकारे)**

अहं सुखेन गच्छामि।

कथमुपायः सम्भवति। (लृट् लकारे)

उपायं चिन्तयन् प्राज्ञः अपायमपि चिन्तयेत्। (लट् लकारे)

ग. **यथा – अहमन्यं ह्रदं प्राप्नोमि।** **(प्रथमपुरुषे)**

सोऽन्यं ह्रदं प्राप्नोति।

अहम् आकाशमार्गेण यामि। (प्रथमपुरुषे)

अहं सुखेन गमिष्यामि। (मध्यमपुरुषे)

4. घटनाक्रमम् अनुसृत्य कथां लिखत

क. हंसौ ब्रूतः – "कथमुपायः सम्भवति" इति।

ख. कूर्मो ब्रूते – "यथाऽहमन्यं ह्रदं प्राप्नोमि तथा क्रियताम्" इति।

ग. काष्ठखण्डं चञ्च्वा अवलम्ब्य युवयोः पक्षबलेन अहमपि यास्यामि।

घ. धीवरैः उक्तम् – "अस्माभिः श्वः मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः" इति।

ङ. "आवाभ्यां नीयमानं त्वामवलोक्य लोकैः किञ्चिद् वक्तव्यमेव।" कूर्मो वदति – "उत्तरं नैव दास्यामि" इति।

च. गोपालकानां वचः श्रुत्वा कूर्मः कोपाविष्टः प्राह – "युष्माभिः भस्म खादितव्यम्।" एवं वदन् एव सः पतितः।

छ. सुहृदां हितवाक्यं यो नाभिनन्दति सः विनश्यति।

ज. तथाविधं कूर्मं दृष्ट्वा गोपालका धावन्ति वदन्ति च – "अहो महदाश्चर्यम् यद्येषः पतति, तदा पक्त्वा, दग्ध्वा वा खादितव्यः" इति।

5. अधोलिखितानि वचनानि कस्य कृते कः कथयति

	कः	कस्यकृते
यथा – सुहृदौ ! श्रुतोऽयं धीवराणामालापः। अधुना किं मया कर्तव्यम्?	**कूर्मः**	**हंसयोः कृते**
क. प्रातः यद् उचितं तत्कर्तव्यम्?	____	____
ख. किन्तु स्थले गच्छतस्ते को विधिः?	____	____
ग. युवयोः पक्षबलेन अहमपि सुखेन गमिष्यामि।	____	____
घ. किमहं मूर्खः? उत्तरं न दास्यामि।	____	____
ङ. अहो महदाश्चर्यम् ! पक्षिभ्यां कूर्मो नीयते।	____	____
च. युष्माभिः भस्म खादितव्यम्।	____	____

6. क. अधोलिखितपदानां यथोचितम् अर्थमेलनं कुरुत

सरः	इदानीम्
व्यापादयितव्याः	वर्धते
आकर्ण्य	गच्छामि
अधुना	सक्रोधम्
एधते	हृदम्
यामि	कुमतिः
सकोपम्	मित्राणाम्
सुहृदाम्	मारयितव्याः
दुर्बुद्धिः	श्रुत्वा

ख. अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितपदानि आदाय पदानां समक्षं विलोमपदं लिखत

प्रश्नः आनीयते, उत्पतति, अपायः, तत्र, दुःखम्, तदानीम्, सुबुद्धिः, जन्म, मूर्खः

- उपायः
- सुखम्
- अधुना
- प्राज्ञः
- उत्तरम्
- मरणम्
- अत्र
- नीयते
- दुर्बुद्धिः
- निपतति

7. क. **भवद्भ्यां सह आकाशमार्गेण यामि।**

ख. **कस्मैचिद् अपि न दास्यामि।**

उपरिलिखितयोः वाक्ययोः क. सह शब्द योगे तृतीया विभक्तिः
ख. दा धातु योगे च चतुर्थी विभक्तिः प्रयुक्ता।

अत्र क भागे प्रयुक्ता उपपदविभक्तिः ख भागे च कारकविभक्तिः।

विशिष्टपदानां योगे या विभक्तिः प्रयुज्यते, सा उपपदविभक्तिः कथ्यते।

यथा –

- सह, साकम्, सार्धम्, समम्, पदानांयोगे तृतीया भवति।
- दा धातु प्रयोगे यस्मै किंचित् दीयते तत् सम्प्रदानम् तत्र चतुर्थी प्रयुज्यते।

उदाहरणानि अनुसृत्य कोष्ठके प्रदत्तपदं प्रयुज्य वाक्यानि रचयत।

i. मित्राणि मित्रैः सह क्रीडन्ति।
ii. ________ (सह)
iii. ________ (सार्धम्)
iv. रक्षाबन्धनपर्वणि भ्राता भगिन्यै उपहारं ददाति।
v. ________ (ददाति)
vi. ________ (ददामि)

8. **कश्चिद् वदति .... भक्षणीयः इति।** सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

हितोपदेशस्य रचयिता नारायणपण्डितोऽस्ति। तस्य आश्रयदाता बंगप्रदेशीयः राजा धवलचन्द्र आसीत्। हितोपदेशस्य आधारग्रन्थः पञ्चतन्त्रं विद्यते। अस्य 43 कथासु 24 कथाः पञ्चतन्त्रात् सङ्कलिताः। एतत् तु अस्य प्रस्तावनायां स्वीकृतम् "पञ्चतन्त्रात्तथाऽन्यस्माद् ग्रन्थादाकृष्य लिख्यते।"

ख. ग्रन्थपरिचयः

हितोपदेशो नीतिशिक्षायाः प्रमुखो ग्रन्थः। अस्य ग्रन्थस्य मूलाधारः पञ्चतन्त्रम् अस्ति। अयं ग्रन्थः मित्रलाभः, सुहृद्भेदः, विग्रहः सन्धिश्चेति चतुर्षु भागेषु विभक्तः। पशु-पक्षि-कथामाध्यमेन बालेभ्यो नीतिशिक्षाः प्रदत्ता वर्तन्ते। तासाम् अद्यापि महत्त्वं विद्यत एव।

ग. भाषिकविस्तारः

पर्यायवाचिनः

सरोवरः	–	जलाशयः, सरः, ह्रदः।
श्रुत्वा	–	आकर्ण्य, निशम्य, कर्णगोचरीकृत्य।
मित्रम्	–	सुहृद्, सखा, वयस्यः।
प्राज्ञः	–	बुद्धिमान्, ज्ञानवान्, मनीषी।

तव्यत् - प्रत्ययस्य प्रयोगः

तव्यत् – प्रत्ययस्य प्रयोगे कर्तृपदं तृतीयायां विभक्तौ कर्मपदं च प्रथमायां भवति।

तव्यत् – प्रत्ययस्य प्रयोगे वाक्यं कर्मवाच्यगतं भाववाच्यगतं वा भवति न तु कर्तृवाच्यगतम्। यदि कर्मपदं वर्तते तर्हि विशेषणरूपा क्रिया कर्मपदानुसारं चलति। यदि वाक्ये कर्मपदं नास्ति तर्हि क्रियावाचकं कृदन्तं प्रथमाविभक्तेः नपुंसकलिङ्गे एकवचने भविष्यति।

तव्यत् – प्रत्ययान्तपदानि त्रिषु लिङ्गेषु प्रयुज्यन्ते।

यथा –				
	i.	अस्माभिः श्वः	मत्स्यकूर्मादयो	व्यापादयितव्याः।
	ii.	अधुना मया	किं	कर्तव्यम्।
	iii.	मया मुखेन	एककाष्ठखण्डम्	अवलम्बितव्यम्।
	iv	युष्माभिः	भस्म	खादितव्यम्।
		कर्तृपदानि	*कर्मपदानि*	*क्रियापदानि*

यत्र कर्म न विद्यते तत्र तव्यत् प्रयोगः

i. मया तदानीं वदितव्यम्।

ii. त्वाम् अवलोक्य लोकैः अवश्यं वक्तव्यम्।

कर्तृपदम् क्रियापदम्

कतिपयानि तव्यत् – प्रत्ययान्तरूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु दीयन्ते

	पुंल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
√पठ्	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
√भू	भवितव्यः	भवितव्या	भवितव्यम्
√श्रु	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्
√कथ्	कथयितव्यः	कथयितव्या	कथयितव्यम्
√चिन्त्	चिन्तयितव्यः	चिन्तयितव्या	चिन्तयितव्याम्
√खाद्	खादितव्यः	खादितव्या	खादितव्यम्
√कृ	कर्तव्यः	कर्तव्या	कर्तव्यम्
√क्री	क्रेतव्यः	क्रेतव्या	क्रेतव्यम्
√गम्	गन्तव्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्
√हस्	हसितव्यः	हसितव्या	हसितव्यम्
√लिख्	लेखितव्यः	लेखितव्या	लेखितव्यम्
√वद्	वदितव्यः	वदितव्या	वदितव्यम्
√नम्	नन्तव्यः	नन्तव्या	नन्तव्यम्

द्वितीयः पाठः

नीतिमौक्तिकानि

[संस्कृत साहित्य में नीति-ग्रंथों की समृद्ध परंपरा है, जिनमें सरस एवं मनोरंजक ढंग से नैतिक शिक्षाएँ प्रदान की गई हैं। इनका सार सुभाषितों या नीति - श्लोकों में मिलता है। मनोहर एवं बहुमूल्य सुभाषित/नीति रत्नों से मानव अपने जीवन को समृद्ध एवं सफल बना सकता है। चाणक्यनीति से संकलित इन 9 पद्यों में क्रमशः वाससंबंधी नीति, प्रियवादी किंतु कपटी मित्र का त्याग, आचार की महत्ता विद्या की महिमा, आत्म-सम्मान तथा वास्तविक बांधव आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है।]

यस्मिन्देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
न च विद्यागमोऽप्यस्ति न तत्र दिवसं वसेत्।।1।।
परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।2।।
आचारः कुलमाख्याति, देशमाख्याति भाषणम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्।।3।।
रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।4।।
कोऽतिभारः समर्थानां, किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां, कः परः प्रियवादिनाम्।।5।।
विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च।।6।।

अधमा धनमिच्छन्ति धनमानौ च मध्यमाः।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम्॥ 7॥
सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः॥ 8॥
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ 9॥

शब्दार्थाः

मौक्तिकानि	–	*मुक्ताः*	–	मोती
वृत्तिः	–	*जीविका*	–	आजीविका, नौकरी
पयोमुखम्	–	*दुग्धयुक्तम् मुखम्*	–	जिसके मुख में दूध लगा है
आख्याति	–	*कथयति*	–	कहता है
सम्भ्रमः	–	*आदरः*	–	आदर
निर्गन्धाः	–	*गन्धरहिताः*	–	गन्ध से हीन
परोक्षे	–	*अक्ष्णोः परम्*	–	अनदेखे, भूतकाल में
व्यवसायिनाम्	–	*उद्योगिनाम्*	–	उद्योग करने वालों का
सविद्यानाम्	–	*विद्यायुक्तानाम्*	–	विद्वानों का
प्रवासेषु	–	*परदेशेषु*	–	विदेशों में
महताम्	–	*महापुरुषाणाम्*	–	महापुरुषों का
जलबिन्दुनिपातेन	–	*जलबिन्दूनां पतनेन*	–	पानी की बूँदों के गिरने से

अस्माभिः किमधीतम्?

- यत्र मनुष्यस्य सम्मानः जीविकाप्रबन्धः, बान्धवाः, ज्ञानप्राप्तिश्च न सन्ति तत्र निवासः न करणीयः।
- यः प्रत्यक्षे प्रियं वदति परोक्षे च कार्यहन्ता, पयोमुखं विषकुम्भम् इव तस्य परित्यागः कर्तव्यः।

- विद्याविहीनाः जनाः निर्गन्धकिंशुकवत् न शोभन्ते।
- नीचजनाः केवलं धनम् एव इच्छन्ति किन्तु उत्तमाः जनाः सम्मानम् एव श्रेठं धनं मन्यन्ते।
- सत्यं, ज्ञानं, धर्मः, दया, शान्तिः क्षमा च षडेते (मनुष्यस्य) माता, पिता, भ्राता, सखा,पत्नी, पुत्र इव बान्धवाः भवन्ति।
- यथा घटः जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते तथैव विद्यार्जनं धनार्जनं च क्षणशः कणशश्च पूर्यते।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकनैव पदेन वदत**
   - क. आचारः किम् आख्याति?
   - ख. वपुः किम् आख्याति?
   - ग. प्रवासेषु किं मित्रम्?
   - घ. व्याधितस्य किं मित्रम्?
   - ङ. अधमाः किम् इच्छन्ति?
   - च. महतां धनं किम् अस्ति?
   - छ. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः कः पूर्यते?
   - ज. कोऽस्माकं भ्राता?

लिखितः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन संस्कृतभाषया लिखत**
   - क. मनुष्यः कस्मिन् देशे दिवसं न वसेत्?
   - ख. मनुष्यः कीदृशं मित्रं वर्जयेत्?
   - ग. कीदृशाः जनाः निर्गन्धाः किंशुकाः इव न शोभन्ते?
   - घ. केऽस्माकं षड् बान्धवाः सन्ति?
   - ङ. घटः क्रमशः केन पूर्यते?

2. **सन्धिं/सन्धिच्छेदं च कुरुत**

क. **यथा —**	**मित्रम्**	**+**	**विषकुम्भम्**	**=**	**मित्रं विषकुम्भम्**
i.	दिवसम्	+	वसेत्	=	________
ii.	________	+	________	=	कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे
iii.	________	+	________	=	किं दूरम्
ख. **यथा —**	**सम्मानः**	**+**	**न**	**=**	**सम्मानो न**
i	पयः	+	मुखम्	=	________
ii.	________	+	________	=	को विदेशः
iii.	________	+	________	=	धर्मो मित्रम्

ग. **संयोगमसंयोगं वा कुरुत**

यथा – कुलम्	+	आख्याति	=	कुलमाख्याति
देशम्	+	————	=	देशमाख्याति
————	+	आख्याति	=	स्नेहमाख्याति
————	+	————	=	धनमिच्छन्ति

3. **श्लोकांशान् मेलयत**

क	ख
यस्मिन्देशे न सम्मानो	निर्गन्धा इव किंशुकाः।
आचारः कुलमाख्याति	क्रमशः पूर्यते घटः।
कोऽतिभारः समर्थानाम्	धर्मो मित्रं मृतस्य च।
अधमा धनमिच्छन्ति	विषकुम्भं पयोमुखम्।
जलबिन्दुनिपातेन	धनमानौ च मध्यमाः।
व्याधितस्यौषधं मित्रम्	देशमाख्याति भाषणम्।
विद्याहीना न शोभन्ते	न वृत्तिर्न च बान्धवाः।
वर्जयेत्तादृशं मित्रम्	किं दूरं व्यवसायिनाम्।

4. **अधोलिखितवाक्येषु कर्मपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत**

क. मनुष्यः परोक्षे कार्यहन्तारं ———————— वर्जयेत्।

ख. सम्भ्रमः ———————— आख्याति।

ग. उत्तमाः ———————— इच्छन्ति।

घ. वपुः ———————— आख्याति।

ङ मध्यमाः ———————— इच्छन्ति।

5. **विशेष्यैः सह उचितानि विशेषणानि योजयत**

विशेष्याणि	**विशेषणानि**
विषकुम्भम्	निर्गन्धाः
धर्मः	सम्भ्रमः
स्नेहस्य परिचायकः	मृतस्य मित्रम्
किंशुकाः	पयोमुखम

6. **तत् पदं रेखाङ्कितं कुरुत**

क. **यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति**

व्यवसायिनाम्, महताम्, सर्वविद्यानाम्, प्रियवादिनम्

ख. **यत्र द्वितीया विभक्तिः नास्ति**
कार्यहन्तारम्, प्रियवादिनाम्, औषधम्, मानम्

ग. **यत्र प्रथमा विभक्तिः नास्ति**
विद्यागमः, वपुः, वृत्तिः, इव

घ. **यत्र सप्तमी विभक्तिः नास्ति**
परोक्षे, प्रत्यक्षे, पूर्यते, भोजने।

7. **अधः श्लोकानाम् अपूर्णोऽन्वयः प्रदत्तः। पाठमाधृत्य रिक्तस्थानेषु अन्वयं पूरयत**

क. प्रवासेषु मित्रं ______, गृहेषु च ______ भार्या, ______ मित्रम् औषधम्, ______

ख. ______ क्रमशः ______ पूर्यते। स ______ धर्मस्य ______ च हेतुः ______ (अस्ति)।

ग. समर्थानां ______, व्यवसायिनां किं ______, सविद्यानां कः ______, ______ कः परः (भवति)।

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

'नीतिमौक्तिकानि' इति पाठः 'चाणक्यनीतिः' इति ग्रन्थात् सङ्कलितः। अस्य प्रणेता आचार्यः चाणक्योऽस्ति। स एको महान् मनीषी राजनीतिज्ञश्च आसीत्। स चन्द्रगुप्तमौर्यस्य प्रधानामात्य आसीत्। स मगधदेशीयनन्दैः शासितां राज्यसत्तां विनाश्य तत्स्थाने मौर्यसाम्राज्यम् अस्थापयत्। नन्दानां शासनकालः शतवर्षाणि यावत् आसीत्। चाणक्योऽन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु अष्टनन्दानां संहारम् अकरोत्। कौटिल्यो, विष्णुगुप्तः कौटिलेयश्चेत्यादीनि चाणक्यस्य अपराणि नामानि। राजनीतिविषयकमपूर्वम् अर्थशास्त्राख्यं ग्रन्थं रचयित्वा चाणक्यः संस्कृतसाहित्येऽमरत्वं प्राप। अर्थशास्त्रस्य अन्ते तेन स्वविषये लिखितम्

येन शस्त्रं च शास्त्रं च नन्दराजगता च भूः।
अमर्षेणोद्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम् ॥

ख. ग्रन्थपरिचयः

'चाणक्यनीतिः' राजनीतिशास्त्रविषयको ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे सप्तदश अध्यायाः, 340 श्लोकाश्च सन्ति। अस्मिन् राजनीतिः धर्मशास्त्रोक्तनियमानुसारं वर्णिता। शास्त्ररचनाया आरम्भे एव चाणक्येन स्वयमेव उद्घोषितम्

तदहं सम्प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया।
यस्य विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते॥

नूनं ज्ञानसागर एष चाणक्यनीतिनामा ग्रन्थः। अस्य पठनेन नरो व्यवहारकुशलो जायते।

ग. 'इव' शब्दस्य तुल्यार्थे प्रयोगः

निर्गन्धाः इव किंशुकाः।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत्।
चक्रारपंक्तिरिव (चक्रारपंक्तिः + इव) गच्छति भाग्यपंक्तिः।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव (छाया + इव) मैत्री खलसज्जनानाम्।

घ. व्यवसायिन्, प्रियवादिन्, विद्यार्थिन् इत्यादिषु नकरान्तशब्देषु द्वितीयाविभक्तेः एकवचने षष्ठीविभक्तेः बहुवचने च केवलं मध्ये अकारमात्रभेदो वर्तते। अत एतादृशाः प्रयोगा अवधानपूर्वकं कर्त्तव्याः —

शब्दाः	द्वितीयैकवचनम्	षष्ठीबहुवचनम्
व्यवसायिन्	व्यवसायिनम्	व्यवसायिनाम्
प्रियवादिन्	प्रियवादिनम्	प्रियवादिनाम्
विद्यार्थिन्	विद्यार्थिनम्	विद्यार्थिनाम्
दानिन्	दानिनम्	दानिनाम्
गुणिन्	गुणिनम्	गुणिनाम्

ङ विविधविषयकानि अधोदत्तानि पद्यानि पठनीयानि स्मरणीयानि च

सुहृद्

- अविचार्यं प्रियं कुर्यात् तन्मित्रं मित्रमुच्यते।
- आपत्काले तु सम्प्राप्ते यन्मित्रं मित्रमेव तत्॥ (पञ्चतन्त्रम्)
- आपत्सु मित्रं जानीयाद् युद्धे शूरं धने शुचिम्।
  भार्यां क्षीणेषु वित्तेषु, व्यसनेषु च बान्धवान्॥ (हितोपदेशः)
- न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपुः।
  व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा॥ (हितोपदेशः)
- न विश्वसेद् कुमित्रे च मित्रे चापि न विश्वसेत्।
  कदाचित्कुपितं मित्रं सर्वं गुह्यं प्रकाशयेत्॥ (चाणक्यनीतिः)

विद्या

- किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्तु यो नरः।
- क्षणत्यागे कुतो विद्या, कणत्यागे कुतो धनम्। (समया.)
- विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा। (सु.र.भा.)
- विद्यारत्नेन यो हीनः स हीनः सर्ववस्तुषु। (हितो.)
- अनभ्यासे विषमविद्या। (चाणक्यः)

धर्मः

- सर्वेषामपि धर्माणां सदाचारः प्रशस्यते।
- धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः। (हितो.)
- चलाचले हि संसारे धर्म एको हि निश्चलः। (चाणक्यनीतिः)
- धर्मस्य त्वरिता गतिः। (पञ्चतन्त्रम्)
- धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
  धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

विद्वान्

- झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः। (नैषध.)
- विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। (हितो.)
- विद्वान् प्रशस्यते लोके विद्वान् सर्वत्र गौरवम्। (चाणक्यनीति.)
- अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः। (पञ्चतन्त्रम्)
- यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः। (मनुस्मृतिः)
- यत्र विद्यागमो नास्ति, यत्र नास्ति धनागमः।
  यत्र देहसुखं नास्ति, न तत्र निमिषं वसेत् ॥ (नराभरणम्,18)

तृतीयः पाठः

सिकतासेतुः

[प्रस्तुत पाठ सोमदेवरचित कथासरित्सागर के सप्तम लम्बक पर आधारित है। यहाँ तपोबल से विद्या पाने के लिए प्रयत्नशील तपोदत्त नामक किसी द्विज की कथा वर्णित है। उसको समुचित मार्गदर्शन हेतु वेष बदलकर इंद्र उसके पास आते हैं और पास ही गंगा में बालू से सेतुनिर्माण के कार्य में जुट जाते हैं। उन्हें वैसा करते देख तपोदत्त उनका उपहास करता हुआ कहता है – 'अरे ! किसलिए गंगा के जल में व्यर्थ ही बालू से पुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हो?' इंद्र उन्हें उत्तर देते हैं – यदि पढ़ने, सुनने और अक्षरों की लिपि के अभ्यास के बिना तुम विद्या पा सकते हो तो बालू से पुल बनाना भी संभव है। इंद्र के अभिप्राय को जानकर तपोदत्त तपस्या करना छोड़कर गुरुजनों के मार्गदर्शन में विद्या का ठीक-ठीक अभ्यास करने के लिए गुरुकुल चल देता है।]

(एकाङ्कम्)

(ततः प्रविशति तपस्यारतः तपोदत्तः)

तपोदत्तः : अहमस्मि तपोदत्तः। बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि विद्यां नाऽधीतवानस्मि। तस्मात् सर्वैः कुटुम्बिभिः मित्रैः ज्ञातिजनैश्च गर्हितोऽभवम्।

(ऊर्ध्वं निःश्वस्य)

हा विधे! किमिदम्मया कृतम्? कीदृशी दुर्बुद्धिरासीत्तदा! एतदपि न चिन्तितं यत् –

परिधानरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते ।
नरो निर्मणिभोगीव सभायां यदि वा गृहे ॥1॥

(किञ्चिद् विमृश्य)

भवतु, किमेतेन? दिवसे उद्भ्रान्तः सन्ध्यां यावद् यदि गृहमुपैति तदपि वरम्। नाऽसौ भ्रान्तो मन्यते। एष इदानीं तपश्चर्यया विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽस्मि।

(जलोच्छलनध्वनिः श्रूयते)

अये कुतोऽयं कल्लोलोच्छलनध्वनिः? महामत्स्यो मकरो वा भवेत्। पश्यामि तावत्।

(पुरुषमेकं सिकताभिः सेतुनिर्माणप्रयासं कुर्वाणं दृष्ट्वा सहासम्)

हन्त! नास्त्यभावो जगति मूर्खाणाम्! तीव्रप्रवाहायां नद्यां मूढोऽयं सिकताभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते!

(साट्टहासं पार्श्वमुपेत्य)

भो महाशय! किमिदं विधीयते! अलमलं तव श्रमेण। पश्य,

रामो बबन्ध यं सेतुं शिलाभिर्मकरालये ।
विदधद्बालुकाभिस्तं यासित्वमतिरामताम्॥2॥

चिन्तय तावत्। सिकताभिः क्वचित्सेतुः कर्तुं युज्यते?

पुरुषः : भोस्तपस्विन्! कथं मामुपरुणत्सि। प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति? काऽवश्यकता शिलानाम्? सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि स्वसंकल्पदृढतया।

तपोदत्तः : आश्चर्यम् ! सिकताभिरेव सेतुं करिष्यसि? सिकता जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्? भवता चिन्तितं न वा?

पुरुषः : (सोत्प्रासम्) चिन्तितं चिन्तितम्। सम्यक् चिन्तितम्। नाहं सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि। समुत्प्लुत्यैव गन्तुं क्षमोऽस्मि।

तपोदत्तः : (सव्यङ्ग्यम्)
साधु साधु ! आञ्जनेयमप्यतिक्रामसि !

पुरुषः : (सविमर्शम्)
कोऽत्र सन्देहः? किञ्च,
विना लिप्यक्षरज्ञानं तपोभिरेव केवलम्।
यदि विद्या वशे स्युस्ते, सेतुरेष तथा मम ॥3॥

तपोदत्तः : (सवैलक्ष्यम् आत्मगतम्)
अये ! मामेवोद्दिश्य भद्रपुरुषोऽयम् अधिक्षिपति ! नूनं सत्यमत्र पश्यामि। अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यमवाप्तुम् अभिलाषामि ! तदियं भगवत्याः शारदाया अवमानना। गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो मया करणीयः। पुरुषार्थैरेव लक्ष्यं प्राप्यते।
(प्रकाशम्)
भो नरोत्तम ! नाऽहं जाने यत् कोऽस्ति भवान्। परन्तु भवद्भिः उन्मीलितं मे नयनयुगलम्। तपोमात्रेण विद्यामवाप्तुं प्रयतमानोऽहमपि सिकताभिरेव सेतुनिर्माणप्रयासं करोमि। तदिदानीं विद्याध्ययनाय गुरुकुलमेव गच्छामि।
(सप्रणामं गच्छति)

शब्दार्थाः

सिकता	–	*बालुका*	–	रेत
सेतुः	–	*बन्धः*	–	पुल

तपस्यारतः	–	*तपःकुर्वन्*	–	तपोलीन
पितृचरणैः	–	*तातपादैः*	–	पिताजी के द्वारा
क्लेश्यमानः	–	*संताप्यमानः*	–	व्याकुल किया जाता हुआ
अधीतवान्	–	*अध्ययनं कृतवान्*	–	पढ़ा
कुटुम्बिभिः	–	*परिवारजनैः*	–	कुटुम्बियों द्वारा
ज्ञातिजनैः	–	*बन्धुबान्धवैः*	–	बन्धु-बान्धवों द्वारा
गर्हितः	–	*निन्दितः*	–	अपमानित किया
निश्वस्य	–	*दीर्घश्वासं गृहीत्वा*	–	लम्बी साँस लेकर
दुर्बुद्धिः	–	*दुर्मतिः*	–	दुष्ट बुद्धिवाला
पराधीनैः	–	*परतन्त्रैः*	–	सोचकर
उद्भ्रान्तः	–	*पथभ्रष्टः*	–	उचित मार्ग से दूर
उपैति	–	*प्राप्नोति, समीपं गच्छति*	–	जाता है, समीप जाता है
भ्रान्तः	–	*भ्रमयुक्तः*	–	भ्रमयुक्त
तपश्चर्यया	–	*तपसा*	–	तपस्या के द्वारा
जलोच्छलनध्वनिः	–	*जलोर्ध्वगतेः शब्दः*	–	पानी के उछलने की आवाज
कल्लोलोच्छलन-ध्वनिः	–	*तरङ्गोच्छलनस्य-शब्दः*	–	तरंगों के उछलने की ध्वनि
कुर्वाणम्	–	*कुर्वन्तम्*	–	करते हुए
सहासम्	–	*हासपूर्वकम्*	–	हँसते हुए
सोत्प्रासम्	–	*उपहासपूर्वकम्*	–	खिल्ली उड़ाते हुए, चुटकी लेते हुए
साट्टहासम्	–	*अट्टहासपूर्वकम्*	–	जोर से हँसकर
अट्टम्	–	*अट्टालिकाम्*	–	अटारी को
अधिरोढुम्	–	*उपरिगन्तुम्*	–	चढ़ने के लिए

आञ्जनेयम्	– *हनुमन्तम्*	–	अञ्जनिपुत्र हनुमान्
सविमर्शम्	– *विचारसहितम्*	–	सोच-विचार कर
सवैलक्ष्यम्	– *सलज्जम्*	–	लज्जापूर्वक
वैदुष्यम्	– *पाण्डित्यम्*	–	विद्वत्ता
उन्मीलितम्	– *उद्घाटितम्*	–	खोल दी

अस्माभिः किमधीतम्?

- बाल्यकाले पुनःपुनः पित्रा उक्तोऽपि तपोदत्तः विद्याध्ययनं न अकरोत् तस्मात् सर्वैः निन्दितोऽभवत्। अधुना च तपस्यया विद्वान् भवितुम् इच्छति।
- दिवसे उद्भ्रान्तोऽपि जनः सन्ध्यां यावद् यदि गृहं प्रत्यागच्छति तदा भ्रान्तः न कथ्यते।
- तीव्रप्रवाहायां नद्यां सिकताभिः सेतुनिर्माणरतं पुरुषं दृष्ट्वा तपोदत्तः तम् उपहसति।
- पुरुषश्च तं कथयति – "यदि बिना लिप्यक्षरज्ञानेन केवलं तपोभिः एव विद्या तव वशे स्यात् तदा मम सेतुरपि निसन्देहं सिकताभिरेव पूर्णताम् एष्यति" इति।
- तपोदत्तः विचारयितुं विवशः भवति यत् तपोमात्रेण विद्वान् भवितुं मम कल्पनाऽपि सिकतासेतुवदेव अस्ति।
- एवं विमृश्य तपोदत्तः विद्याग्रहणाय गुरुकुलं गतः।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत**
    क. 'सिकतासेतुः' इति पाठः कस्मिन् ग्रन्थे आधृतः?
    ख. निरक्षरः नरः कः इव सभायां गृहे वा न शोभते?
    ग. तपोदत्तः कथं विद्यामवाप्तुं प्रवृत्तोऽभवत्?
    घ. नद्याः तीव्रप्रवाहे पुरुषः काभिः सेतुं निर्मातुं प्रयतते स्म?
    ङ. कः शिलाभिः मकरालये सेतुं बबन्ध?
    च. किं बिना वैदुष्यस्य अवाप्तिः न सम्भवति?
    छ. इन्द्रेण तपोदत्तस्य किम् उन्मीलितम्?
    ज. केन सर्वं सिद्धं भवति?

2. **भिन्नप्रकृतिपदं वदत**
    क. अधिरोढुम्, गन्तुम्, सेतुम्, निर्मातुम्।
    ख. कुतः, प्रवृत्तः, भूषितः, गर्हितः।
    ग. चिन्तिता, उन्मीलिता, तपोरता, सिकता।
    घ. निःश्वस्य, चिन्तय, विमृश्य, उपेत्य।
    ङ. विश्वसिमि, पश्यामि, करिष्यामि, अभिलाषामि।

लिखितः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत**
    क. अनधीतः तपोदत्तः कैः गर्हितोऽभवत्?
    ख. कः उद्भ्रान्तः न मन्यते?
    ग. तपोदत्तः पुरुषस्य कां चेष्टां दृष्ट्वा अहसत्?
    घ. केन लक्ष्यं प्राप्यते?
    ङ. यः तपोमात्रेण विद्याम् आप्तुं प्रयतते तस्य प्रयासःकीदृशः कथितः?

2. **रेखाङ्कितानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?**
    क. अलमलं **तव** श्रमेण।
    ख. न **अहं** सोपानमार्गैरट्टमधिरोढुं विश्वसिमि।
    ग. यदि विद्या वशे स्युः **ते** सेतुरेष तथा मम।

घ. चिन्तितं **भवता** न वा।

ङ. गुरुगृहं गत्वैव विद्याभ्यासो **मया** करणीयः।

3. अधोलिखितानि कथनानि कः कं कथयति?

कथनानि	*कः*	*कम्*
क. हा विधे! किमिदं मया कृतम्?	______	______
ख. भो महाशय! किमिदं विधीयते!	______	______
ग. भोस्तपस्विन्! कथं माम् उपरुणत्सि।	______	______
घ. सिकताः जलप्रवाहे स्थास्यन्ति किम्?	______	______
ङ नाहं जाने कोऽस्ति भवान्?	______	______

4. पाठम् आधृत्य रिक्तस्थानानां पूर्तिं कुरुत —

क. सिकताभिरेव सेतुं करिष्यामि ______________।

ख. अये कुतोऽयं ______________।

ग. गुरुगृहं गत्वा एव ______________ मया करणीयः।

घ. बाल्ये पितृचरणैः क्लेश्यमानोऽपि ______________ अधीतवानस्मि।

ङ. दिवसे ________ सन्ध्यां यावद् यदि ________ तदपि वरम्।

5. अधोलिखितानि वाक्यानि अनुसृत्य कोष्ठके निर्दिष्टान् अव्ययान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत —

i. यथा देशः तथा वेषः।
______________ (यथा-तथा)

ii. साधु साधु! त्वं तु हनुमन्तम् अपि अतिक्रामसि।
______________ (साधु साधु)

iii. त्वया सम्यक् चिन्तितम्।
______________ (सम्यक्)

iv. एषा पत्रिका अधीता भवता न वा?
______________ (न वा)

v. लिप्यक्षरज्ञानं विना विद्या न सिध्यति।
______________ (विना)

vi. हन्त् ! नास्ति अभावो जगति मूर्खाणाम्।

________________ (हन्त)

vii. यावद् अग्निः ज्वलति तावत् धूमः निर्गच्छति।

________________ (यावत्-तावत्)

viii विचित्रे संसारे क्वचित् अतिवृष्टिः क्वचित् अनावृष्टिः।

________________ (क्वचित्)

6. उदाहरणम् अनुसृत्य अधोलिखितविग्रहपदानां समस्तपदानि रचयत

	विग्रहपदानि	समस्तपदानि
यथा —	संकल्पस्य + सातत्येन	संकल्पसातत्येन
क.	अक्षराणां + ज्ञानम्	________
ख.	सिकतायाः + सेतुः	________
ग.	पित्रोः + चरणैः	________
घ.	गुरोः + गृहम्	________
ङ.	विद्यायाः + अभ्यासः	________

▪ उदाहरणम् अनुसृत्य अधोलिखितसमस्तपदानां विग्रहं कुरुत

	समस्तपदानि	*विग्रहः*
यथा —	नयनयुगलम्	नयनस्य + युगलम्
क.	जलप्रवाहे	________
ख.	तपश्चर्यया	________
ग.	जलोच्छलनध्वनिः	________
घ	ज्ञातिजनैः	________
ङ.	सेतुनिर्माणप्रयासः	________

7. क. अव्ययपदैः अन्वयं पूरयत

i. यदि परिधानैः अलङ्कारैः भूषितः ________ नरः निर्मणिभोगी ________ सभायां गृहे ________ शोभते।

ii. लिप्यक्षरं ________ तपोभिः ________ ते वशे विद्याःस्युः ________ मम ________ एषः सेतुः।

ख. **तृतीयान्तपदैः अन्वयं पूरयत**

iii. रामः मकरालये यं सेतुं ________ बबन्ध तं ________ विदधद् त्वम् अतिरामताम् यासि।

8. **सप्रसङ्गं व्याख्यां कुरुत**

क. i. विदधद्बालुकाभिस्तं यासि त्वमतिरामताम्।

ii. परिधानैरलङ्कारैर्भूषितोऽपि न शोभते।

iii. प्रयत्नेन किं न सिद्धं भवति।

iv. तदियं भगवत्या शारदाया अवमानना।

ख. i. अलमलं तव श्रमेण। ('अलम्' – योगे तृतीया)

ii. माम् एव उद्दिश्य अधिक्षिपति। (अधि योगे द्वितीया)

iii. अक्षरज्ञानं विनैव वैदुष्यं प्राप्तुमभिलाषसि। (विनायोगे द्वितीया)

iv. आञ्जनेयम् अपि अतिक्रामसि। (अति योगे द्वितीया)

उपरिलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि उपपदविभक्तेःउदाहरणानि सन्ति। (अधोऽभ्यासार्थं वाक्यानि दीयन्ते)

निर्देशानुसारं कोठकात् पदम् आदाय रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – अलम् चिन्तया।

i. अलम् ________ (भय)

ii. त्वं व्यर्थम् एव ________ अधिक्षिपसि। (मित्र)

iii. किं ________ विना परीक्षाम् उत्तरिष्यसि। (परिश्रम)

iv. बालकः ________ विना पाठं पठति। (अर्थज्ञान)

v. सूर्यस्य प्रकाशः सर्वान् ________ अतिक्रामति। (प्रकाश)

ग. **तपोमात्रेण .... गुरुकुलमेव गच्छामि इति।** सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

श्रीसोमदेवभट्टः कश्मीरवासिनः श्रीरामभट्टस्य पुत्र आसीत्। तदा अनन्तदेवः कश्मीरनरेश आसीत्। तस्य पत्न्याः सूर्यमत्याः दुःखनिवारणार्थं मनोविनोदाय च कविना अष्टादशलम्बकेषु कथासरित्सागराख्यो ग्रन्थो विरचितः। अस्य ग्रन्थस्य मूलं महाकवेर्गुणाढ्यस्य बृहत्कथा वर्तते।

ख. ग्रन्थपरिचयः

कथासरित्सागरो नाम ग्रन्थः श्रीसोमदेवेन विरचितः। ग्रन्थोऽयम् अनेकासां कथानां महासमुद्र एव। नानाकथाजालप्रसारेण लोकानुरञ्जनमेव कवेः चरमं लक्ष्यम् विविधकाव्योपकरणैरलङ्कृतेऽस्मिन् ग्रन्थेऽष्टादशलम्बकाः सन्ति । मूलकथापुष्ट्यर्थम् अनेका उपकथा वर्णिताः। प्रस्तुतकथा रत्नप्रभानामकात् लम्बकात् सङ्कलिता । गुरोः समीपं गत्वा श्रमेण लिप्यक्षरादिज्ञानार्जनं कर्त्तव्यं, न केवलं तपश्चर्ययैव तत् कर्तुं शक्यत इत्यस्याः कथाया उपदेशः।

ग. पर्यायवाचिनः शब्दाः

इदानीम्	–	अधुना, साम्प्रतम्, सम्प्रति।
जलम्	–	वारि, उदकम्, सलिलम्।
नदी	–	सरित्, तटिनी, तरङ्गिणी।
पुरुषार्थः	–	उद्योगः, उद्यमः, परिश्रमः।

घ. विलोमशब्दाः

दुर्बुद्धिः	–	सुबुद्धिः
गर्हितः	–	प्रशंसितः
प्रवृत्तः	–	निवृत्तः
अभ्यासः	–	अनभ्यासः
सत्यम्	–	असत्यम्

ङ. कृत्-प्रत्ययाः

क्त्वा प्रत्ययस्य प्रयोगः – 'क्त्वा' इति प्रत्ययः पूर्वकालिकक्रियां बोधयति । अस्य 'क्त्वा' इत्येष एवांशोऽवशिष्यते। यथा –

√दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा
√गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा

ल्यप् प्रत्यय प्रयोगः – यदि धातोः पूर्वम् उपसर्गः प्रयुज्यते तदा क्त्वा इत्येतस्य प्रत्ययस्य स्थाने ल्यप् भवति। य इत्येवांशोऽवशिष्टः भवति।

यथा –	निः	+	√श्वस्	+	ल्यप्		=	निःश्वस्य
	वि	+	√मृश्	+	ल्यप्		=	विमृश्य
	उप	+	√इ	+	ल्यप्		=	उपेत्य
	उत्	+	√दिश्	+	ल्यप्		=	उद्दिश्य

तुमुन्-प्रत्यय प्रयोगः – 'तुमुन्' इत्येतस्य 'तुम्' इत्येव भागोऽवशिष्यते।

यथा –	√कृ	+	तुमुन्				=	कर्तुम्
	√गम्	+	तुमुन्				=	गन्तुम्
	अधि	+	√रुह्	+	तुमुन्		=	अधिरोढुम्
	निर्	+	√मा	+	तुमुन्		=	निर्मातुम्
	अव	+	√आप्	+	तुमुन्		=	अवाप्तुम्

च. आत्मगतम्

एषः नाटकेषु प्रयुक्तः पारिभाषिकः शब्दः। यदा नटोऽभिनेता वा रंगमञ्चे स्वकथनम् अन्यान् श्रावयितुं न इच्छति, मनसि एव चिन्तयति तदा तत् कथनम् आत्मगतम् इति भण्यते।

छ. प्रकाशम्

यदा नटोऽभिनेता वा रंगमञ्चे स्ववार्तां मनसि चिन्तयित्वा दर्शकानां समक्षं प्रकटीकरोति तदा तस्य सा वार्ता प्रकाशम् इति शब्देन संसूच्यते।

ज. अतिरामताम्

राममतिक्रम्य अतिरामम्, तस्य भावोऽतिरामता, ताम्। रामस्य अतिक्रमणं। अत्र रामस्य सागरे प्रस्तरैः सेतुनिर्माणस्य घटनायाः संक्षेपो वर्तते। तपोदत्तस्य अस्य कथनस्य अभिप्रायोऽयं वर्तते यत् रामस्तु लङ्कां गन्तुं पाषाणैः समुद्रे सेतुनिर्माणम् अकरोत् परं हे द्विजश्रेष्ठ ! भवता तु सिकताभिः नद्यां सेतुनिर्माणेन रामोऽपि अतिक्रान्तः।

झ. आञ्जनेयम्

अञ्जनायाः पुत्रः इति आञ्जनेयः हनुमान् इत्यर्थः,तम्। हनुमान् उत्प्लुत्य कुत्रापि गन्तुं समर्थः आसीत् अतः यदा इन्द्रः कथयति यदहं सोपानगमने विश्वासं न करोमि अपितु उत्प्लुत्य एव गन्तुं समर्थोऽस्मि इति तदा तपोदत्तः पुनरुपहासं करोति यत् पूर्वं त्वम् सेतुनिर्माणे रामं सम्प्रति च उत्प्लवने हनुमन्तम् अतिक्रान्तुम् इच्छसि।

ञ. अक्षरज्ञानस्य माहात्म्यम्

- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
- विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
- विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्।
- विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।
- विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय।।
- गतेऽपि वयसि ग्राह्या विद्या सर्वात्मना बुधैः।
यद्यपि स्यान्न फलदा सुलभा सान्यजन्मनि।।
- किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।
- विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
- यः पठति लिखति पश्यति परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयति।
तस्य दिवाकर किरणैः नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धि।।

चतुर्थः पाठः

षड्रसाः

[प्रस्तुत पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'चरकसंहिता' से संकलित किया गया है। इसमें मधुर, अम्ल, लवण, कटुक, तिक्त तथा कषाय – इन छः रसों के सम्यक् प्रयोग से होने वाले लाभों तथा अत्यधिक प्रयोग से होने वाली हानियों का प्रतिपादन किया गया है, जिससे इनके अतिशय उपयोग से जायमान हानियों से बचते हुए तथा समुचित उपयोग से लाभ उठाया जा सके। इस प्रकार इस पाठ में छः रसों के विषय में अतिमहत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई है।]

मधुरः, अम्लः, लवणः, कटुकः, तिक्तः, कषायश्च इति षड्रसा भवन्ति। तत्र मधुरो रसः रुधिरमांसास्थिवर्धनः आयुष्यः केश्यः कण्ठ्यः दाहमूर्च्छाप्रशमनश्च। अत्यर्थमुपयुज्यमानश्चायं स्थूलतां आलस्यमतिस्वप्नं दौर्बल्यम् इत्येवमादीन् विकारानुपजनयति।

अम्लो रसो भुक्तं रोचयति, अग्निं दीपयति, देहम् ऊर्जयति, बलं वर्धयति, हृदयं च तर्पयति। अत्यर्थमुपयुज्यमानस्त्वयं दन्तान् तर्षयति, रक्तं दूषयति, कायं शिथिलीकरोति, परिदहति कण्ठमुरो हृदयं च।

लवणो रसः पाचनः, वातहरः, सर्वरसविरोधी, सर्वशरीरावयवान् मृदूकरोति, रोचयत्याहारं च। अत्यर्थमुपयुज्यमानश्चायं मूर्च्छयति, तापयति, विषं च वर्धयति।

कटुको रसो वक्त्रं शोधयति, चक्षुर्विरेचयति, व्रणानवसादयति, कृमीन् हिनस्ति। अत्यर्थमुपयुज्यमानश्चायं कण्ठं परिदहति, शरीरतापमुपजनयति, बलं क्षिणोति, तृष्णां च जनयति।

तिक्तो रसः विषघ्नः कृमिघ्नो ज्वरघ्नः पाचनश्च। अत्यर्थमुपयुज्यमानश्चायं रुधिरमांसमुच्छोषयति, बलमादत्ते, कर्शयति, मोहयति वातविकारान् चोपजनयति।

कषायो रसः संशमनः सन्धानकरः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता रुक्षःशीतश्च। अत्यर्थमुपयुज्यमानस्त्वयं हृदयं पीडयति,वाचं निगृह्णाति, कर्शयति च।

इत्येवमेते षड्रसाः पृथक्त्वेनैकत्वेन वा मात्रशः सम्यगुपयुज्यमाना शरीरस्य उपकाराय भवन्ति।

शब्दार्थाः

रुधिरम्	–	*रक्तम्*	–	खून
अस्थि	–	*अस्थि*	–	हड्डी
आयुष्यः	–	*आयुवर्धकः*	–	आयु देने वाला
केश्यः	–	*केशेभ्यः हितकरः*	–	केशवर्धक
कण्ठ्यः	–	*कण्ठेभवः*	–	कण्ठ से बोला जाने वाला
अत्यर्थम्	–	*अत्यधिकम्*	–	अत्यधिक
उपजनयति	–	*उत्पादयति*	–	उत्पन्न करता है
भुक्तम्	–	*खादितम्*	–	खाया हुआ
रोचयति	–	*रुचिकरं करोति*	–	रोचक बनाता है
दीपयति	–	*वर्धयति*	–	बढ़ाता है
तर्षयति	–	*तृषां ददाति*	–	प्यास बढ़ाता है
अवयवान्	–	*अङ्गानि*	–	अंगों को
मृदूकरोति	–	*कोमलीकरोति*	–	कोमल बनाता है
वक्त्रम्	–	*मुखम्*	–	मुख को
शोधयति	–	*शुद्धिं करोति*	–	शुद्धि करता है
विरेचयति	–	*विरेचनं करोति*	–	पचाता है
अवसादयति	–	*व्याकुलयति*	–	व्याकुल करता है
कृमीन्	–	*कीटान्*	–	कीड़ों को
हिनस्ति	–	*नाशयति*	–	नष्ट करता है
क्षिणोति	–	*दुर्बलीकरोति*	–	दुर्बल करता है, कम करता है
विषघ्नः	–	*विषं हन्ति इति*	–	विष का नाशक

उच्छोषयति	–	*शोषम् उत्पादयति*	–	सूजन उत्पन्न करता है
कर्शयति	–	*कृशं करोति*	–	कृश बनाता है
संशमनः	–	*शान्तिकारकः*	–	शान्त करने वाला
सन्धानकरः	–	*आधायकः*	–	जोड़ने वाला, बढ़ाने वाला
क्लेदस्य	–	*स्वेदस्य*	–	पसीने का
रुक्षः	–	*अक्लिन्नः*	–	रूखा
निगृह्णाति	–	*वशीकरोति*	–	पकड़ता है, रोकता है
मात्रशः	–	*अंशशः*	–	मात्रा के अनुसार

अस्माभिः किम् अधीतम्?

- षड्रसानां नामानि – मधुरः, अम्लः, लवणः, कटुकः, तिक्तः, कषायः चेति।
- सर्वेषां रसानां समुचितप्रयोगः लाभकरः भवति, अधिकप्रयोगेण च शरीरं विविधं कष्टम् अनुभवति।

***

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत

क. कति रसाः भवन्ति?
ख. कः रसः रुधिरमांसास्थिवर्धनः?
ग. कः रसः भुक्तं रोचयति?
घ. वातहरः कः रसः भवति?
ङ. कृमीन् कः रसः हिनस्ति?
च. विषघ्नः कः रसः अस्ति?
छ. अत्यर्थम् उपयुज्यमानः कः रसः हृदयं पीडयति?
ज. सम्यगुपयुज्यमानाः षड्रसाः कस्य उपकाराय भवन्ति?

लिखितः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. अयं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् संकलितः? कश्च तस्य लेखकः?
ख. मधुरः कदा स्थूलतादीन् विकारान् उपजनयति?
ग. अम्लः रसः किं किं हितं करोति?
घ. कटुकः रसः व्रणान् किं करोति?
ङ. तिक्तस्य रसस्य के गुणाः सन्ति?
च. कः रसः शरीरक्लेदस्योपयोक्ता अपि भवति?
छ. षड्रसाः कदा उपकाराय भवन्ति?
ज. षड्रसाः कदा दोषकरा भवन्ति?

2. क. **सन्धिं कुरुत**

मधुरः	+	रसः	=	________
कटुकः	+	रसः	=	________
पाचनः	+	च	=	________
कषायः	+	च	=	________
शीतः	+	च	=	________

ख. सन्धिविच्छेदं कुरुत

यथा – रोचयत्याहारम् = रोचयति + आहारम्

इत्येवम् = ______ + ______

इत्यादिः = ______ + ______

अत्यर्थम् = ______ + ______

4. कोष्ठकाद् उचितपदम् आदाय रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत

क. मधुरः रसः आयुष्यः केश्यः ______ च भवति। (कण्ठ्य/वातहरः)

ख. अम्लो रसः ______ दीपयति। (शरीरतापम्/अग्निम्)

ग. अत्यर्थमुपयुज्यमानः ______ मूर्च्छयति। (लवणः/कटुकः)

घ. तिक्तः रसः विषघ्नः ______ च भवति। (बलघ्नः/कृमिघ्नः)

ङ. अत्यर्थमुपयुज्यमानः ______ हृदयं पीडयति। (कषायः/अम्लः)

5. अर्थमेलनं कुरुत

क	ख
क. उरः	भोजनम्
ख. रुधिरम्	नेत्रम्
ग. आहारम्	कायम्
घ. चक्षुः	क्षीणताम्
ङ. देहम्	वक्षःस्थलम्
च. दौर्बल्यम्	रक्तम्

6. अधोलिखितैः क्रियापदैः वाक्यानि पूरयत

रोचयति, वर्धयति, जनयति, पीडयति, कर्शयति, दूषयति, हिनस्ति

यथा – अम्लः रसः भुक्तम् रोचयति।

क. मधुरस्य आधिक्यम् आलस्यं ______।

ख. कटुकः रसः कृमीन् ———————।

ग. अधिकः कषायः रसः हृदयं ———————।

घ. अम्लः रसः बलं ———————।

ङ. अधिकं प्रयुक्तः तिक्तः रसः ———————।

7. अत्र मञ्जूषायां प्रत्येकं रसस्य त्रयो गुणाः त्रयो दोषाः च प्रदत्ताः सन्ति। तान् प्रत्येकं रसस्य समक्षं लिखत

क. बलवर्धकः, अग्निदीपकः, हृदयतर्पकः, रक्तदूषकः, हृदयदाहकः, कण्ठदाहकः।
ख. आयुष्यः, केश्यः, कण्ठ्यः, आलस्यकरः, स्थूलताजनकः,दौर्बल्यकारकः।
ग. वक्त्रशोधकः, नेत्रविरेचकः, कृमिनाशकः, बलक्षयकारकः, कण्ठपरिदाहकः, शरीरतापकरः।
घ. विषघ्नः, कृमिघ्नः, ज्वरघ्नः, रुधिरमांसशोषकः, कर्शकः, वातविकारजनकः।
ङ संशमनः, रूक्षः, शीतः, हृदयपीडकः, वाङ्निग्रहकरः, कर्शकः।
च. पाचनः, वातहरः, आहाररोचकः, मूर्च्छाकरः, तापकरः, विषवर्धकः।

गुणाः (सम्यक् प्रयोगे) दोषाः (अधिकप्रयोगे)

यथा — मधुरः — आयुष्यः, केश्यः, कण्ठयः च आलस्यकरः, स्थूलताजनकः, दौर्बल्यकारकः च

क. अम्लः — ———, ———, ——— च ———, ———, ——— च

ख. लवणः — ———, ———, ——— च ———, ———, ——— च

ग. कटुकः — ———, ———, ——— च ———, ———, ——— च

घ. तिक्तः — ———, ———, ——— च ———, ———, ——— च

ङ. कषायः — ———, ———, ——— च ———, ———, ——— च

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

चरकः आयुर्वेदस्य 'चरकसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अयं विशुद्धनाम्नः ऋषेः पुत्रः अनन्तसंज्ञकनागस्य चावतारः आसीत्। अतोऽयं नागवंशीय एव सम्भाव्यते। भारतस्य पश्चिमोत्तरप्रदेशस्य वर्णनम् अस्मिन् ग्रन्थेऽनेकत्र दृश्यते। अनेन प्रतीयते यत् चरकः तस्यैव प्रदेशस्य निवासी आसीत्।

ख. ग्रन्थपरिचयः

उपलब्धासु आयुर्वेदीयसंहितासु सर्वश्रेठः कायचिकित्साप्रधानोऽयं ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे चिकित्साविज्ञानस्य मौलिकतत्त्वानां यादृशम् उत्तमं विवेचनं लभ्यते तादृशं न अन्यत्र कुत्रचिदपि अवलोक्यते।

ग. भावविस्तारः

षड्रस सम्बन्धिवस्तूनि

घ. भाषिकविस्तारः

i. अस्मिन् पाठे बहूनि प्रेरणार्थकक्रियापदानि प्रयुक्तानि। धातोः प्रेरणार्थके णिच् – प्रत्यये कृते सति प्रेरणार्थकं क्रियापदं जायते यथा शिक्षकः छात्रं पाठयति; अत्र 'पाठयति' इति प्रेरणार्थकं क्रियापदम् वर्तते –

धातवः	सामान्यं क्रियापदम्	प्रेरणार्थकं क्रियापदम्
√जन्	जायते	जनयति
√रुच्	रोचते	रोचयति
√वृध्	वर्धते	वर्धयति
√गम्	गच्छति	गमयति
√तप्	तपति	तापयति
√दीप्	दीप्यते	दीपयति
√मूर्च्छ्	मूर्च्छति	मूर्च्छयति

ii. **अधोलिखितपदानां विग्रहवाक्यानि समासनामानि च अवगच्छत –**

पदानि	विग्रहवाक्यानि	समासनामानि
क. शरीरतापम्	शरीरस्य+तापम्	षष्ठीतत्पुरुषः
ख. रुधिरमांसास्थिवर्धनः	रुधिरम् च मांसम् च अस्थि च रुधिरमांसास्थीनि तेषां वर्धनम्	द्वन्द्वसमासः
ग. दाहमूर्च्छाप्रशमनः	दाहः च मूर्च्छा च दाहमूर्च्छे तयोः प्रशमनः	द्वन्द्वसमासः
घ. अतिस्वप्नम्	अत्यधिकः स्वप्नः तम्	कर्मधारय
ङ. रुधिरमांसम्	रुधिरं च मांसं च	द्वन्द्वसमासः

पञ्चमः पाठः

लोकमान्यः तिलकः

[स्वतंत्रता-संग्राम में हमारे देश के जिन महापुरुषों ने भाग लिया उनमें लोकमान्य तिलक का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। वे संस्कृत के प्रख्यात विद्वान थे। उन्होंने भारत की जनता को एक नारा दिया – **स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।** तिलक के इस नारे ने स्वतंत्रता-सेनानियों को इतना प्रेरित किया कि उनका आंदोलन आग की चिंगारी की तरह पूरे देश में फैल गया। फलस्वरुप दासता की जंजीरें जर्जर होने लगीं और अंग्रेज़ शासक काँप उठे। तिलक जैसे राष्ट्रभक्तों के सत्प्रयासों से ही कालान्तर में हमारा देश स्वतंत्र हुआ। तिलक अग्रणी स्वतंत्रता-सेनानी होने के साथ साथ संस्कृत तथा गणित-ज्योतिष के प्रकांड पंडित थे। इनके द्वारा निश्चित किया गया वेदों का काल-निर्णय बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।]

श्रीबालगङ्गाधरतिलकः महान् राष्ट्रसेवी देशभक्तश्च आसीत्। अस्य जन्म 1856 खिस्ताब्दे जुलाईमासस्य त्रयोविंशे दिने महाराष्ट्रस्य रत्नगिरिनामके ग्रामेऽभवत्। बाल्यकालादेव सः प्रखरबुद्धिःसूक्ष्मदृष्टिश्च आसीत्। कालान्तरे स गणितस्य, ज्योतिश्शास्त्रस्य संस्कृतव्याकरणस्य च प्रकाण्डः पण्डितः समजायत। विधिस्नातकपरीक्षाम् उत्तीर्य स देशस्य पारतन्त्र्यदुःखं निवारयितुं तत्परोऽभूत्।

असौ एकां शिक्षासमितिं स्थापयित्वा महाराष्ट्रे महान्तं शिक्षाप्रचारम् अकरोत्। जनजागरणाय 'केसरी' 'मराठा' चेति द्वयोः पत्रयोः सम्पादनमपि अकरोत्। तिलकः शिवाजिगणेशोत्सवौ च प्रारभत। तस्य एवंविधैः प्रयासैः देशस्य जनाः प्रबुद्धाः जाताः। विविधं विभक्ते समाजे स्नेहसहयोगसमत्वभावना चापि समुत्पन्ना।

वैदेशिकानामत्याचारैः पीडितानां भारतीयानां समुद्धाराय भारतस्य स्वातन्त्र्यमभिलक्ष्य राष्ट्रभक्तः तिलकः अघोषयत् यत् – "स्वराज्यं गृहीत्वा एव शान्ता भविष्याम। कार्यं वा साधयिष्यामः, देहं वा पातयिष्यामः। स्वराज्यमस्माकं जन्मसिद्धोऽधिकारः" इति।

तिलकस्येयं घोषणा हतोत्साहेषुहृदयेषु अपि उत्साहम् अजनयत्। तच्छ्रुत्वा निखिलोऽपि भारतदेशः स्वराज्यप्राप्तये प्रयत्नशीलः सञ्जातः। परिणामतोऽसौ ब्रिटिशशासनेन कारागारे निक्षिप्तः। कारागारे स्थितस्तिलकमहोदयः 'गीतारहस्यम्', 'दि ओरियन्', इत्याख्यस्य ग्रन्थद्वयस्य निर्माणमप्यकरोत्। एतद् ग्रन्थद्वयमेव तस्य महतीं वैदुषीम् प्रकटयति। एतैः सर्वैः कारणैरेव तिलकमहोदयो लोके 'लोकमान्य' इत्युपाधिना प्रसिद्धो जातः।

लोकमान्यस्य तत्सदृशानामन्येषां च महापुरुषाणां प्रयत्नैरेव अस्माकं देशः 1947 वार्षस्यागस्तमासे स्वतन्त्रो जातः। अस्माकं दौर्भाग्याद् अयं महापुरुषः 1920 खिस्ताब्दे दिवं गतः। एवंविधानाम् एव महापुरुषाणां विषये केनापि सत्यमेवोक्तम् –

परोपकारैकधियः स्वसुखाय गतस्पृहाः।
जगद्धिताय जायन्ते मानवाः केऽपि भूतले।।

शब्दार्थाः

प्रखरबुद्धिः	— *तीव्रबुद्धिः*	— तीव्र बुद्धि वाला, बुद्धिमान्
सूक्ष्मदृष्टिः	— *विवेकपूर्णदृष्टिः*	— प्रत्येक कार्य को ध्यान से देख-कर करने वाला
पारतन्त्र्यदुःखम्	— *पराधीनतायाः क्लेशम्*	— परतंत्रता के दुःख को
जनजागरणाय	— *जनानां प्रबोधनाय*	— जनता में जागृति लाने के लिए
स्नेहसहयोगसमत्व-भावना	— *प्रेम्णः परस्परं सहकारित्वस्य समत्वस्य च भावः*	— स्नेह, सहयोग तथा समता की भावना
अभिलक्ष्य	— *दृष्टौ कृत्वा*	— दृष्टि में रखकर,देखकर
हतोत्साहेषु	— *उत्साहहीनेषु*	— उत्साह रहितों में
परोपकारैकधियः	— *परहितमात्रबुद्धयः*	— केवल परोपकार करने में संलग्न
गतस्पृहाः	— *इच्छारहिताः*	— इच्छारहित, निष्काम
निक्षिप्तः	— *न्यस्तः*	— रखा हुआ
निखिलः	— *समस्तः*	— सारा, संपूर्ण

अस्माभिः किमधीतम्?

- तिलकस्य जन्मसमयः 23.7.1856 ई० आसीत्। जन्मस्थानञ्च महाराष्ट्रस्य रत्नगिरिनामा ग्रामः।
- तिलकः बाल्यकालादेव प्रतिभासम्पन्नः कालान्तरे गणितस्य, ज्योतिश्शास्त्रस्य संस्कृतव्याकरणस्य च विद्वान् अभवत्।
- तिलकमहाभागेन घोषणा कृता – 'स्वराज्यमस्माकं जन्मसिद्धो अधिकारः' इति।
- तिलकमहाभागेन कृतानि कार्याणि—
  - क. महाराष्ट्रे शिक्षाप्रचाराय शिक्षासमितेः स्थापना।
  - ख. जनजागरणाय 'केसरी' 'मराठा' चेति पत्रयोः सम्पादनम्।
  - ग. गणेशोत्सवस्य, शिवाज्युत्सवस्य चारम्भः।
  - घ. कारागारे 'गीतारहस्यम्', 'दि ओरियन' इति ग्रन्थयोः रचना। एतैः सर्वैः कारणैः लोकेन सम्मानितः सः 'लोकमान्य' इत्युपाधिना प्रसिद्धोऽभवत्।

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत

क. बालगङ्गाधरतिलकस्य जन्म कस्मिन् ग्रामेऽभवत्?

ख. बालगङ्गाधरतिलकः कां परीक्षाम् उत्तीर्णाम् अकरोत्?

ग. लोकमान्यः कां समितिं स्थापयित्वा शिक्षाप्रचारम् अकरोत्?

घ. तिलकः कं कम् उत्सवम् आरभत?

ङ. तिलकस्य घोषणा केषु हृदयेषु उत्साहम् अजनयत्?

च. तिलकः गीताविषयकस्य कस्य ग्रन्थस्य रचनाम् अकरोत्?

छ. तिलकः द्वयोः ग्रन्थयोः रचनां कुत्र अकरोत्?

लिखितः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. लोकमान्यतिलकः कस्य कस्य विषयस्य प्रकाण्डः पण्डितः आसीत्?

ख. लोकमान्यतिलकः जनजागरणाय किम् अकरोत्?

ग. तिलकस्य घोषणा का आसीत्?

घ. सः कयोः ग्रन्थयोः निर्माणम् अकरोत्?

ङ. लोकमान्यतिलकसदृशानां महापुरुषाणां विषये केनापि किम् उक्तम्?

च. लोकमान्यस्य प्रयासैः विभक्ते समाजे कीदृशी भावना समुत्पन्ना?

2. सन्धिम्/सन्धिविच्छेदं च कुरुत

क. यथा –		देशभक्तः	+	च	=	देशभक्तश्च
	i.	______	+	च	=	तीक्ष्णदृष्टिश्च
	ii.	सर्वः	+	च	=	______
ख. यथा –		उत्सवम्	+	च	=	उत्सवं च
	i.	एवम्	+	विधैः	=	______
	ii.	______	+	______	=	कार्यं वा

3. उदाहरणानुसारं पर्यायेण रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – जनजागरणार्थम् – जनजागरणाय

क. समुद्धारार्थम् – ____________

ख. सुखार्थम् – ____________

ग. जगद्धितार्थम् – ____________

4. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत यत्र

क. **लङ्लकारः नास्ति –**

अकरोत्, अघोषयत्, अजनयत्, अभूत्।

ख. **षष्ठी विभक्तिः नास्ति**

पीडितानाम्, भारतीयानाम्, महापुरुषाणाम्, सम्पादनम्।

ग. **क्त्वा प्रत्ययः नास्ति**

तच्छ्रुत्वा, गृहीत्वा, अभिलक्ष्य, स्थापयित्वा।

5. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमेण योजयत

क. लोकमान्यतिलकः ब्रिटिशशासनेन कारागारे निक्षिप्तः।

ख. तिलकस्य जन्म रत्नगिरिनामके ग्रामेऽभवत्।

ग. तिलकस्य प्रयासैः जनाः प्रबुद्धा जाताः।

घ. अस्माकं दौर्भाग्यादयं 1920 ख्रिस्ताब्दे दिवं गतः।

ङ सः गणितस्य, ज्योतिश्शास्त्रस्य, संस्कृतव्याकरणस्य च प्रकाण्डः पण्डितः समजायत।

च. कारागारे सः ग्रन्थद्वयस्य रचनामकरोत्।

छ. जनजागरणाय सः द्वयोः पत्रयोः सम्पादनमकरोत्।

ज. बाल्यकालादेव सः प्रखरबुद्धिः तीक्ष्णदृष्टिश्च आसीत्।

6. अधोलिखितवाक्येषु कर्मपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत

क. तिलकः विधिस्नातकस्य ____________ उत्तीर्णाम् अकरोत्।

ख. असौ एकां ____________ स्थापयित्वा महाराष्ट्रे महान्तम् ____________ अकरोत्।

ग. राष्ट्रभक्तः तिलकः अघोषयत् यत् वयं ____________ गृहीत्वा एव शान्ता भविष्यामः।

घ. तिलकस्य घोषणा हतोत्साहेषु हृदयेषु ____________ अजनयत्।

ङ. सः ग्रन्थद्वयस्य ____________ अपि अकरोत्।

7. **रचनाभ्यासः**

क. **अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य लोकमान्यतिलकस्य विषये पञ्चवाक्यानि संस्कृतेन लिखत**

देशभक्तः, रत्नगिरिनामके, द्वयोः पत्रयोः, प्रयासैः जन्मसिद्धः, स्वराज्यप्राप्तये, कारागारे, ग्रन्थद्वयस्य, पातयिष्यामः, 1920 खिस्ताब्दे

ख. **लोकमान्यस्य .... गतः इति। सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत**

योग्यताविस्तारः

क. **भावविस्तारः**

न विकाराय विश्वस्योपकारायैव निर्मिताः।
स्फुरत्कारुण्यपीयूष वृष्टयस्तत्त्वदृष्टयः॥

(ज्ञानसार 19.8)

जीवने यस्य जीवन्ति मित्राणीष्टाः सबान्धवाः।
सफलं जीवितं तस्य आत्मार्थे को न जीवति॥

(चाणक्यराजनीतिशास्त्र 1.24)

स जीवति गुणो यस्य धर्मो यस्य स जीवति।
गुणधर्मविहीनो यः जीवितं तस्य निष्फलम्॥

(चाणक्यराजनीतिशास्त्रम् 1.23)

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते॥

(पञ्चतन्त्रम्)

ख. **भाषिकविस्तारः**

कर्मधारयसमासः

यदि कस्मिन्नपि समस्तपदे पूर्वपदं विशेषणम्, उत्तरपदं न विशेष्यं भवति तत्र कर्मधारयसमासः भवति यथा –

प्रखरबुद्धिः – प्रखरा च सा बुद्धिः
सूक्ष्मदृष्टिः – सूक्ष्मा च सा दृष्टिः
महापुरुषः – महांश्चासौ पुरुषः

यदि च एभिरेव पदैः अन्यपदस्य प्राधान्यम् अभिलक्ष्यते तदा तत्र बहुव्रीहिसमासः भवति। यथा उपर्युक्तपदेषु एव प्रखरबुद्धिः, सूक्ष्मदृष्टिः च एतयोः पदयोः प्रयोगः लोकमान्यतिलकमहाभागेभ्योभवत् अतः विग्रह एवं भविष्यति –

प्रखरा बुद्धिः – प्रखरा बुद्धिः यस्य सः
सूक्ष्मदृष्टिः – सूक्ष्मा दृष्टिः यस्य सः
महापुरुषदेशः – महान्तः पुरुषाः यस्मिन् सः देशः

इत्थं वयं पश्यामः यत् विग्रहभेदेन एव समासाः स्पष्टरूपेण ज्ञायन्ते। एकस्मिन् एव समस्तपदे विग्रहभेदेन भिन्नः समासः भवितुं शक्नोति।

ग. णिच् प्रत्ययप्रयोगः

यत्र कर्ता स्वयं कार्यं न करोति अपितु अन्यं कर्तुं प्रेरयति तत्र क्रियायां णिच्-प्रत्ययः प्रयुज्यते।

- णिच्-प्रत्ययस्य 'अय्' इत्यवशिष्टांशो धातुना सह प्रयुज्यते।
- अय्-युक्ताः सर्वेऽपि धातवः चुरादिगणीयाः भवन्ति।
- आकारान्तैः धातुभिः सह 'अय्' पूर्वं 'प' इति योज्यते।
- णिच्-प्रत्यय-युक्त-धातूनां क्त्वा-ल्यप्-तुमुन्-प्रत्ययान्तरूपाणि अपि चुरादिगणीयधातुवत् चलन्ति।

यथा –

धातुः	+	प्रत्ययः	लट्लकारे	क्त्वा/ल्यप्	तुमुन्
√पत्	+	णिच्	पातयति	पातयित्वा	पातयितुम्
√स्था	+	णिच्	स्थापयति	स्थापयित्वा	स्थापयितुम्
√साध्	+	णिच्	साधयति	साधयित्वा	साधयितुम्
√चुर्	+	णिच्	चोरयति	चोरयित्वा	चोरयितुम्
√जन्	+	णिच्	जनयति	जनयित्वा	जनयितुम्
नि + √वृ	+	णिच्	निवारयति	निवार्य	निवारयितुम्
√भू	+	णिच्	भावयति	भावयित्वा	भावयितुम्
√दा	+	णिच्	दापयति	दापयित्वा	दापयितुम्
√हस्	+	णिच्	हासयति	हासयित्वा	हासयितुम्
√पठ्	+	णिच्	पाठयति	पाठयित्वा	पाठयितुम्

षष्ठः पाठः

भर्तृहरेः भारती

[सूक्ति-साहित्य में भर्तृहरि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'वैराग्यशतक', 'शृङ्गारशतक' और 'नीतिशतक' इनके अतीव प्रसिद्ध शतक-काव्य हैं। प्रस्तुत पाठ के पद्य उनके 'नीतिशतक' नामक ग्रंथ से उद्धृत हैं। इनमें जीवनोपयोगी शाश्वत मूल्यों, सज्जनों का स्वभाव, परोपकारियों का व्यवहार, महात्माओं की प्रकृति, उत्तम मित्रों के कर्त्तव्य, सज्जनों की मैत्री, धन का सदुपयोग, उत्तम व्यक्ति की क्रियाशीलता, मनस्वी की जीवनचर्या तथा वक्तृत्व की महिमा जैसे विषयों पर विचार व्यक्त किए गए हैं।]

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥1॥

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥2॥

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥3॥

पापान्निवारयति योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥4॥

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्धपरार्ध-भिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥5॥

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ 6 ॥

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते केन जानीमहे ॥ 7 ॥

शब्दार्थाः

फलोद्‌गमैः	—	*फलानाम् उत्पत्तिभिः*	—	फलों के आने से
नवाम्बुभिः	—	*नूतनजलैः*	—	(वर्षा के) नए जल से
दूरविलम्बिनः	—	*नीचैः आगताः*	—	नीचे की ओर लटकने वाले
अनुद्धताः	—	*विनीताः*	—	नम्र, शालीन
अभ्युदये	—	*उत्थाने*	—	उन्नति होने पर
सदसि	—	*सभायाम्*	—	सभा में
प्रकृतिसिद्धम्	—	*स्वभावेन एव सिद्धम्*	—	जन्मजात
पुण्यपीयूषपूर्णाः	—	*पुण्यामृतेन सहिताः*	—	पुण्य रूपी अमृत से युक्त
प्रीणयन्तः	—	*तर्पयन्तः*	—	प्रसन्न करते हुए
गुह्यम्	—	*गोपनीयम्, रहस्यम्*	—	गोपनीय रहस्य
निगूहति	—	*गोपयति*	—	छिपाता है
जहाति	—	*त्यजति*	—	छोड़ता है
सन्मित्रलक्षणम्	—	*श्रेष्ठमित्रस्य लक्षणम्*	—	अच्छे मित्र का लक्षण
आरम्भगुर्वी	—	*आरम्भे महती*	—	प्रारंभ में बड़ी, अधिक
खलसज्जनानाम्	—	*दुष्टानां सत्पुरुषाणां च*	—	दुष्टों तथा सज्जनों की
चन्द्रोज्ज्वला	—	*चन्द्रवत् शुभ्राः*	—	चंद्रमा की तरह उज्ज्वल
मूर्धजाः	—	*केशाः*	—	बाल

संस्कृता	—	*परिष्कृता, भूषिता*	—	शुद्ध, अलङ्कृत
परहितम्	—	*परेषाम्, (अन्येषाम्) हितं कल्याणम्*	—	दूसरों के हित को
निरर्थकम्	—	*निष्प्रयोजनम्*	—	निरर्थक
निघ्नन्ति	—	*विनाशयन्ति*	—	मारते हैं
परित्यज्य	—	*त्यागं कृत्वा*	—	छोड़कर, त्याग कर

अस्माभिः किम् अधीतम्

- परोपकारिणः सज्जनाः वृक्षमेघवत् स्वसम्पन्नतया विनतो भूत्वा सर्वेषां हितं कुर्वन्ति।
- महात्मानः स्वभावतः धैर्यशालिनः, क्षमाशीलाः, वाक्पटवः,पराक्रमिणः, यशसः इच्छुकाश्च भवन्ति।
- संसारे एतादृशाः जनाः विरलाः येषां मनसि, वचसि, शरीरे चाऽपि सर्वेषां कृते शुभेच्छा अस्ति।
- सन्मित्रं सदैव स्वमित्रस्य हितं करोति।
- दुष्टानां मित्रता दिनस्य पूर्वार्धछायेव आरम्भेऽधिका क्रमेण च क्षयिणी भवति परं सज्जनानां मित्रता दिनस्य परार्द्धछायेव प्रारम्भे न्यूना पश्चाच्च वृद्धिमती भवति।
- कस्यापि मनुष्यस्य अलङ्करणं केयूरैः सुशोभितैः हारादिभिः च न भवति। सुसंस्कृता वाणी एव सर्वेषां आभूषणमस्ति।
- सज्जना अन्येषां कल्याणं कर्तुमिच्छन्ति, सामान्यजनाः स्वार्थस्य अविरोधेन उपकारं कुर्वन्ति। मनुष्यरूपेण राक्षसाः स्वार्थाय परेषां हितस्य अपघातं कुर्वन्ति परं ये जनाः परहितं निरर्थकमेव घ्नन्ति तेषां कृते तु शब्दकोषे शब्दस्यैव अभावः प्रतीयते।

***

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत

क. तरवः कैः नम्रा भवन्ति?
ख. सन्त उपकारश्रेणिभिः किं प्रीणयन्ति?
ग. आपद्गतं मित्रं को न जहाति?
घ. खलसज्जनानां मैत्री कीदृशी भवति?
ङ. सततं भूषणं किम्?
च. महात्मनां प्रकृतिसिद्धगुणेषु वाक्पटुता कुत्र अपेक्षिता?
छ. समृद्धिभिः केऽनुद्धताः?
ज. कीदृशी वाणी पुरुषं समलङ्करोति?

लिखितः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. सज्जनानां मैत्री कदा लघ्वी कदा च वृद्धिमती भवति?
ख. सन्तः कान् पर्वतीकृत्य निजहृदि विकसन्ति?
ग. पुरुषं का समलङ्करोति?
घ. परोपकारिणां स्वभावः कीदृशः?
ङ. सन्मित्रं स्वमित्रं कस्मात् निवारयति?
च. सत्पुरुषाः कीदृशा भवन्ति?

2. उपयुक्तस्थानं योजयत

क. अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः	स्वार्थाविरोधेन ये।
ख. यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ	प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।
ग. गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति	छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।
घ. दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना	स्वभाव एव एष परोपकारिणाम्।
ङ. केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं	सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।
च. मनसि वचसि काये	हाराः न चन्द्रोज्ज्वलाः।
छ. सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृता	पुण्यपीयूषपूर्णाः।

3. रिक्तस्थानपूर्तिद्वारा अन्वयं पूरयत

क. फलोद्गमैः ______ नम्रा भवन्ति। ______ घना दूरविलम्बिन (भवन्ति)। सत्पुरुषाः ______ अनुद्धताः (भवन्ति)। स्वभाव एवैष ______।

ख. आरम्भगुर्वी क्रमेण ______ पुरा लध्वी ______ च ______ दिनस्य ______ छाया इव खलसज्जनानां ______ (भवति)।

ग. मनसि ______ काये पुण्यपीयूषपूर्णाः ______ त्रिभुवनं प्रीणयन्तः ______ नित्यं पर्वतीकृत्य ______ विकसन्तः कियन्तः ______ सन्ति।

4. क. सन्धिं कुरुत

फल + उद्गमैः = ______

पर + उपकारिणाम् = ______

चन्द्र + उज्ज्वलाः = ______

ख. सन्धिविच्छेदं कुरुत

नम्रास्तरवः = ______ + ______

पूर्णास्त्रिभुवनम् = ______ + ______

सामान्यास्तु = ______ + ______

ग. संयोगं वियोगं च कुरुत

सिद्धम् + इदम् = ______

______ + ______ = लक्षणमिदम्

धैर्यम् + ______ = धैर्यमथ

त्रिभुवनम् + उपकारश्रेणिभिः= ______

परार्थम् + उद्यमभृतः = ______

5. क. श्लोकौ आधृत्य सोपानानि पूरयत

i. प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्

यथा — विपदि धैर्यम्

ii. सन्मित्र लक्षणमिदम्

यथा – पापात् | निवारयति

हिताय

गुह्यं

गुणान्

आपद्गतं च न

काले
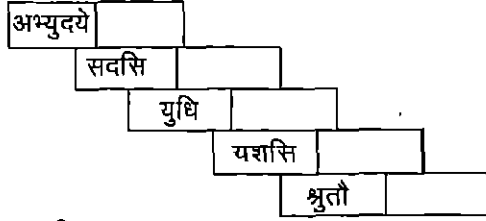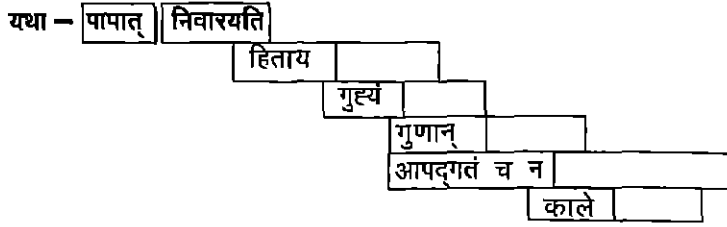
6. उदाहरणम् अनुसृत्य निर्देशानुसारं पदपरिचयं लिखत

	पदानि	मूलशब्दः	विभक्तिः	वचनम्
यथा –	**विपदि**	**विपद्**	**सप्तमी**	**एकवचनम्**
	सदसि	______	______	______
	अभ्युदये	______	______	______
	श्रुतौ	______	______	______
	मनसि	______	______	______
	काये	______	______	______
	मनसि	______	______	______
	हृदि	______	______	______
	युधि	______	______	______
	यशसि	______	______	______
यथा –	उद्गमैः	उद्गम	तृतीया विभक्तिः	बहुवचनम्
	अम्बुभिः	______	______	______
	समृद्धिभिः	______	______	______
	श्रेणिभिः	______	______	______

7. अधोलिखितविशेष्यपदैः सह मञ्जूषातः समुचितविशेषणपदानि योजयत

विशेष्यपदानि	विशेषणपदानि
यथा – तरवः	नम्राः
घनाः	______
सन्तः	______
सत्पुरुषाः	______
हाराः	______
मूर्धजाः	______
वाणी	______
वाग्भूषणम्	______
परार्थघटकाः	______

प्रीणयन्तः, सततम्, संस्कृता, नम्राः, सत्पुरुषाः अनुद्धताः, चन्द्रोज्ज्वलाः, दूरविलम्बिनः, अलङ्कृताः

8. सप्रसङ्गं व्याख्यां कुरुत

क. क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।
ख. अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः।
ग. दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्।

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

भर्तृहरिः 'श्रृंगारशतकम्', 'नीतिशतकम्', 'वैराग्यशतकम' इति शतकत्रयस्य रचयिता। अस्य रचनाकालः 57 ई.पू. सिध्यते। सः एकः योग्यः राजा आसीत् यस्य महिष्याः नाम पिङ्गला आसीत्। तस्य जीवनस्य समस्तपक्षाणां गहनोऽनुभव आसीत्।

ख. ग्रन्थपरिचयः

'नीतिशतकम्' इति कृतिः भर्तृहरेः सर्वश्रेष्ठा रचना। अस्मिन् ग्रन्थे श्लोकसंख्या शतम् अस्ति। एषोऽतीव लोकप्रियः ग्रन्थः। अस्य श्लोकाः प्रसिद्धाः। एषु आचारशिक्षा, नीतिशिक्षा, सज्जनप्रशंसा,

कर्मफलं, विद्यामहिमा, धैर्यम्, परोपकारः, इति विषयाणां उपादेयता वर्णिता। कवेः भाषा सरला, सरसा, सुबोधा चास्ति। विविधैः अलङ्करणैः युक्तानि सर्वाणि पद्यानि गेयानि। परगुणग्राहकाः सज्जनाः विरला एव इति भावोऽधस्तने श्लोके दृश्यताम् –

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा –
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

ग. भाषिकविस्तारः

नञ्-तत्पुरुष-समासः

तत्पुरुषसमासे यदि प्रथमं **न** इति निपातः स्यात् उत्तरपदं च संज्ञा वा विशेषणं वा स्यात् तदा नञ्तत्पुरुषः समासः भवति। **न** यदि स्वरात् पूर्वं भवति तदा **अन्** इति रूपे परिवर्तते परन्तु यदि व्यञ्जनात् पूर्वं भवति तदा **अ** इति रूपे परिवर्तते। यथा –

i. न उद्धताः इति अनुद्धताः
न आरोग्यम् इति अनारोग्यम्
न आयुष्यम् इति अनायुष्यम्
न अभ्यासः इति अनभ्यासः
न आगतम् इति अनागतम्

ii. न ब्राह्मणः इति अब्राह्मणः
न सुखम् इति असुखम्
न योग्यम् इति अयोग्यम्
न क्रोधः इति अक्रोधः
न साधुः इति असाधुः

घ. भावविस्तारः

- अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्।
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्॥ (अभिज्ञा.)
- परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति। (सु.र.भा.)

- परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
  परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

  (विक्रमचरितम्)

- बिभ्रति कायः करुणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन।
- सर्वभूतोपकाराच्च किमन्यत्सुकृतं परम् (कथा)

वाणी

- अर्थभारवती वाणी भजते कामपि श्रियम्। (सु.र.भा.)
- अल्पाक्षररमणीयं यः कथयति निश्चितं स वाग्मी। (सु.र.भा.)
- अवसरपठिता वाणी गुणगणरहितापि शोभते पुंसाम्।
- मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।

***

सप्तमः पाठः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

[प्रस्तुत पाठ 'वेतालपञ्चविंशतिः' नामक कथा संग्रह से लिया गया है जिसमें मनोरञ्जक एवम् आश्चर्यजनक घटनाओं के माध्यम से जीवनमूल्यों का निरूपण किया गया है। इस कथा में जीमूतवाहन अपने पूर्वजों के काल से गृहोद्यान में आरोपित कल्पवृक्ष से सांसारिक द्रव्यों को न माँगकर समस्त संसार के दुःख दूर करने का वरदान माँगता है क्योंकि धन तो पानी की लहर के समान चंचल है, केवल परोपकार ही इस संसार का सर्वोत्कृष्ट तथा चिरस्थायी उपादेय तत्त्व है।]

अस्ति हिमवान् नाम सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्रः। तस्य सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्। तत्र जीमूतकेतुरिति श्रीमान् विद्याधरपतिः वसति स्म। तस्य गृहोद्याने कुलक्रमागतः कल्पतरुः स्थितः। स राजा जीमूतकेतुः तं कल्पतरुम् आराध्य तत्प्रसादात् च बोधिसत्त्वांशसम्भवं जीमूतवाहनं नाम पुत्रं प्राप्नोत्। स महान् दानवीरः सर्वभूतानुकम्पी च अभवत्। तस्य गुणैः प्रसन्नः स्व-सचिवैश्च प्रेरितः स राजा कालेन सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्येऽभिषिक्तवान्। यौवराज्ये स्थितः स जीमूतवाहनः कदाचित् हितैषिभिः पितृमन्त्रिभिः उक्तः – "युवराज ! योऽयं सर्वकामदः कल्पतरुः तवोद्याने तिष्ठति स तव सदा पूज्यः। अस्मिन् अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि नास्मान् बाधितुं शक्नुयात्" इति।

आकर्ण्यैतत् जीमूतवाहनः अन्तरचिन्तयत् – "अहो बत ! ईदृशममरपादपं प्राप्यापि पूर्वैः पुरुषैरस्माकं तादृशं फलं किमपि नासादितं किन्तु केवलं कैश्चिदेव कृपणैः कश्चिदपि अर्थोऽर्थितः। तदहमस्मात् मनोरथमभीष्टं साधयामि" इति।

एवमालोच्य स पितुरन्तिकमागच्छत्। आगत्य च सुखमासीनं पितरमेकान्ते न्यवेदयत् – "तात! त्वं तु जानासि एव यदस्मिन् संसारसागरे आशरीरमिदं सर्वं धनं वीचिवच्चञ्चलम्। एकः परोपकार एवास्मिन् संसारेऽनश्वरः यो युगान्तपर्यन्तं यशः प्रसूते। तदस्माभिरीदृशः कल्पतरुः किमर्थं रक्ष्यते? यैश्च पूर्वैरयं 'मम मम' इति आग्रहेण रक्षितः, तैरिदानीं कुत्र गतम्? तेषां कस्यायम्? अस्य वा के ते? तस्मात् परोपकारैकफलसिद्धये त्वदाज्ञया इमं कल्पपादपं आराधयामि।

अथ पित्रा 'तथा' इति अभ्यनुज्ञातः स जीमूतवाहनः कल्पतरुम् उपगम्य उवाच – "देव! त्वया अस्मत्पूर्वेषाम् अभीष्टाः कामाः पूरिताः, तन्ममैकं कामं पूरय।

यथा पृथ्वीमदरिद्रां पश्यामि, तथा करोतु देवः। भद्रमस्तु ते, व्रज, स्वस्ति तुभ्यम्, लोकाय अर्थिने त्वं मया दत्तोऽसि" इति। एवंवादिनि जीमूतवाहने त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि" इति वाक् तस्मात् तरोरुदभूत्। क्षणेन च स कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य भुवि तथा वसूनि अवर्षत् यथा न कोऽपि दुर्गत आसीत्। ततस्तस्य जीमूतवाहनस्य सर्वजीवानुकम्पया सर्वत्र यशः प्रथितम्।

शब्दार्थाः

हिमवान्	—	*हिमालयः*	—	हिमालय
नगेन्द्रः	—	*पर्वतराजः*	—	पर्वतों का राजा
सानोः	—	*शिखरस्य*	—	शिखर के, चोटी के
कुलक्रमागतः	—	*कुलक्रमाद् आगतः, कुलपरम्परया सम्प्राप्तः*	—	कुल–परम्परा से प्राप्त हुआ
यौवराज्ये	—	*युवराजपदे*	—	युवराज के पद पर
शक्रः	—	*इन्द्रः*	—	इन्द्र
अर्थितः	—	*याचितः*	—	माँगा
अन्तिकम्	—	*समीपम्*	—	पास में
वीचिवत्	—	*तरङ्गवत्*	—	तरङ्ग की तरह
अभ्यनुज्ञातः	—	*अनुमतः*	—	अनुमति पाया हुआ
अर्थिने	—	*याचकाय*	—	माँगने वाले के लिए, भिखारी के लिए
दिवम्	—	*स्वर्गम्*	—	स्वर्ग
वसूनि	—	*धनानि*	—	धन
उपगम्य	—	*समीपं गत्वा*	—	पास में जाकर
दुर्गतः	—	*दुर्गतिम् आपन्नः,*	—	पीड़ित, निर्धन
सर्वजीवानुकम्पया	—	*सर्वजीवेभ्यःकृपया*	—	सभी जीवों के प्रति कृपा से
प्रथितम्	—	*प्रसिद्धम्*	—	प्रसिद्ध हो गया

अस्माभिः किम् अधीतम्

- कञ्चनपुरे जीमूतकेतुनामा विद्याधरपतिः वसति स्म।
- तस्य गृहोद्याने कुलक्रमादागतः कल्पतरुः आसीत्।
- तरोः कृपया सः जीमूतवाहनं नाम पुत्रं प्राप्नोत्।
- एकदा स पितुः समीपं गत्वा परोपकारार्थं कल्पतरोः आराधनाय इच्छां प्रकटितवान्।

- पितुः अनुज्ञया सः कल्पतरवे न्यवेदयत् "माम एकाम् इच्छां पूरय। सर्वा पृथिवी एव अदरिद्रा स्यात् अतोऽहं भवन्तं लोककल्याणाय" ददामि इति।
- तस्मिन् क्षणे एव सः कल्पतरुः उत्पत्य पृथिव्यां धनानि अवर्षत्।
- धनवृष्ट्या कोऽपि दरिद्रः न अतिष्ठत्।
- सर्वजीवानुकम्पया जीमूतवाहनस्य यशः सर्वत्र प्रासरत्।

अभ्यासः

मौखिकः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकनैव पदेन वदत

क. सर्वरत्नभूमिर्नगेन्द्रस्य किं नाम आसीत्?
ख. तत्र कः विद्याधरपतिः वसति स्म?
ग. राजा जीमूतकेतुः कम् आराध्य पुत्रं प्राप्नोत्?
घ. जीमूतवाहनस्य उद्याने स्थितस्य कल्पतरोः किं वैशिष्ट्यम् आसीत्?
ङ. संसारसागरे धनं कीदृक् चञ्चलम्?
च. जीमूतवाहनः कल्पतरुं पृथ्वीं कीदृशीं कर्तुं याचते?
छ. कल्पतरुः दिवं समुत्पत्य किम् अवर्षत्?
ज. जीमूतवाहनस्य यशः सर्वत्र कथं प्रथितम्?

लिखितः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. हिमवतः सानोरुपरि किं नाम नगरं विभाति स्म?
ख. जीमूतवाहनः कीदृशः युवराज आसीत्?
ग. राजा जीमूतकेतुः कैः प्रेरितः जीमूतवाहनं यौवराज्येऽभिषिक्तवान्?
घ. अमरपादपं प्राप्य कैः अर्थोऽर्थितः?
ङ. जीमूतवाहनः पितुराज्ञया कल्पपादपं किमर्थम् आराधयत्?
च. कल्पतरुः भुवि किमर्थं वसूनि अवर्षत्?

2. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितसर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि

क. तस्य सानोरुपरि विभाति कञ्चनपुरं नाम नगरम्। ——।
ख. राजा सम्प्राप्तयौवनं तं यौवराज्ये अभिषिक्तवान्। ——।
ग. अयं तव सदा पूज्यः। ——।
घ. तात! त्वं तु जानासि यत् धनं वीचिवत् चञ्चलम्। ——।
ङ. भद्रमस्तु ते। ——।

3. उदाहरणम् अनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत

क. **यथा – अभ्यनुज्ञातः – अभि + अनु + √ज्ञा + क्त**

यातः	–	√या + क्त
अभीष्टम्	–	____________
आसादितम्	–	+ √सद् + णिच् +
गतः	–	____________
उक्तः	–	√ ब्रू √ वच् +
स्थितः	–	____________
अर्थितः	–	____________
पूरिताः	–	____________
दत्तः	–	____________
त्यक्तः	–	____________
प्रेरितः	–	____________
प्रसन्नः	–	प्र + √सद्
रक्षितः	–	____________

ख. **यथा – समुत्पत्य – सम् + उत् + पत् + ल्यप्**

आलोच्य –आ + √लोच् + ____________

आगत्य –____________

आराध्य –____________

आकर्ण्य –____________

प्राप्य –____________

4. उदाहरणम् अनुसृत्य अधोलिखितानां विग्रहपदानां समस्तपदानि कुरुत

विग्रहपदानि			**समस्तपदानि**
विद्याधराणां	+	पतिः	विद्याधरपतिः
गृहस्य	+	उद्याने	____________

नगानाम्	+	इन्द्रः	________
परेषाम्	+	उपकारः	________
पितुः	+	मन्त्रिभिः	________
जीवानाम्	+	अनुकम्पया	________

ग. संयोगं/विच्छेदं वा कुरुत

यथा – सुखम्	**+**	**आसीनम्**	**=**	**सुखमासीनम्**
________	+	________	=	शरीरमिदम्
किम्	+	अर्थम्	=	________
________	+	________	=	ईदृशममरपादपम्
पृथ्वीम्	+	अदरिद्राम्	=	________

5. पाठम् आधृत्य अधोलिखितपदेभ्यः प्राक् उपयुक्तविशेषणपदानि लिखत

यथा – सर्वकामदः कल्पतरुः

________ फलम्

________ धनम्

________ विद्याधरपतिः

________ कामाः

________ पुरुषैः

________ पितृमन्त्रिभिः

6. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं कथयति

		कः	**कम्**
क.	युवराज! कल्पतरौ अनुकूले स्थिते शक्रोऽपि नास्मान् बाधितुं शक्नुयात्।	________	________
ख.	तात! आशरीरमिदं सर्वं धनं वीचिवत् चञ्चलम्।	________	________
ग.	देव! त्वया अस्मत्पूर्वेषामभीष्टाः कामाः पूरिताः।	________	________
घ.	त्यक्तस्त्वया एषोऽहं यातोऽस्मि।	________	________

ङ 'तथा' इति। ______ ______

च. एकः परोपकार एव अस्मिन् संसारेऽनश्वरः। ______ ______

ii **सप्रसङ्गं व्याख्यां कुरुत**

क. ईदृशममरपादपं प्राप्यापि पूर्वैः पुरुषैरस्माकं तादृशं फलं किमपि नासादितं किन्तु केवलं कैश्चिदेव कृपणैस्तैः कश्चिदपि अर्थोऽर्थितः।

7. **क्षणेन च.......................दुर्गत आसीत् इति ।** सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत –

योग्यताविस्तारः

क. ग्रन्थपरिचयः

'वेतालपञ्चविंशतिका', पञ्चविंशतिकथानां सङ्ग्रहोऽस्ति। अस्य ग्रन्थस्य संस्करणद्वयं प्राप्यते। शिवदासकृतः ग्रन्थः गद्यपद्यमयोऽस्ति परं जम्भलदत्तकृतः गद्यमयः केवलम्। अत्र वर्णितं यत् राजा त्रिविक्रिमसेनाय प्रतिवर्षम् एकः भिक्षुकः रत्नयुक्तं फलमेकं ददाति इति। राजा तस्य भिक्षुकस्य सहायतायै वेतालाधिष्ठितम् एकं शवम् आनेतुं श्मशानं गच्छति। वेतालः मौनं स्थित्वा कथां श्रोतुं राजानम् आदिशति। मार्गे सः वेतालः राज्ञः विनोदार्थं कथामेकां श्रावयति अन्ते तस्य उत्तरं च पृच्छति। राजा शुद्धम् उत्तरं ददाति। स वेतालः पुनः श्मशानं प्राप्नोति। इत्थं पञ्चविंशतिवारम् एषा एव घटना आवृत्ता भवति। वेतालः च राजानं पञ्चविंशतिकथाः श्रावयति ।अतीवरोचकाः भावप्रधानाः विवेकपरीक्षकाः च एताः कथाः। भारतस्य अधिकांशभाषासु अस्य ग्रन्थस्य अनुवादः जातः। अनेन अस्य ख्यातिः लोकप्रियता च सूच्यते।

ख. भाषिकविस्तारः

क्त-क्तवतु-प्रयोगः

क्त – प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भवति।

क्तवतु – प्रत्ययस्य प्रयोगश्च कर्तृवाच्ये भवति।

क्त प्रत्ययः – यथा

सः *जीमूतवाहनः हितैषिभिः मन्त्रिभिः* <u>उक्तः</u>।

कृपणैः कश्चिदपि अर्थः <u>अर्थितः</u>।

त्वया अस्मत्कामाः <u>पूरिताः</u>।

तस्य यशः <u>प्रथितम्</u>।

क्तवतुप्रयोगः — यथा
सः पुत्रं यौवराज्यपदेऽभिषिक्तवान्।
एतदाकर्ण्य जीमूतवाहनः चिन्तितवान्।
सः सुखासीनं पितरं **निवेदितवान्**।
सः जीमूतवाहनः कल्पतरुम् **उक्तवान्**।

ग. ***'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु'*** इति विषयकाः कामनाः

- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
  सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।
- सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
  सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।
- राष्ट्रं नः स्यात् समृद्धं सकलगुणगणैर्भूषिताः स्युः युवानः।
  नेतारो धर्ममुख्या नयविनयनता शासतां भूमिभागम्।।
- अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
  अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत् प्रशस्यते (महा.)
- आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।

अष्टमः पाठः

श्रीकृष्णस्य दौत्यम्

[यह पाठ महान् नाटककार भास द्वारा रचित 'दूतवाक्यम्' नामक नाटक से संकलित किया गया है। बारह वर्ष का बनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास समाप्त होने पर श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास पाण्डवों का संदेश लेकर जाते हैं। दुर्योधन की सभा में दूत श्रीकृष्ण का अपमान होता है, तथापि वे उसकी उपेक्षा कर पैतृकसंपत्ति का बँटवारा करने के लिए पाण्डवों का संदेश देते हैं, जिसे सुनकर क्रोधाविष्ट दुर्योधन पाण्डवों पर आरोप लगाता हुआ उन्हें युद्ध के बिना सुई की नोक जितना भाग भी देना स्वीकार नहीं करता। "अपने हिस्से का राज्य न पाने पर पाण्डव समुद्र तक विस्तृत पृथ्वी का हरण कर लेंगे" कहकर श्रीकृष्ण वहाँ से लौटने लगते हैं तभी दुर्योधन उन्हें बाँधने का आदेश देता है। श्रीकृष्ण अपना विराट रूप दिखाते हैं, जिससे स्वयं न बँधकर वे सभी सभासदों को बाँध देते हैं। अभिमानी दुर्योधन उनके लिए जम्भक, मायावी, कपटी आदि शब्दों का प्रयोग कर अपने उद्दंड स्वभाव का परिचय देता है।]

(ततः प्रविशति काञ्चुकीयः)

काञ्चुकीयः : **जयतु महाराजः। एष खलु पाण्डवस्कन्धावाराद् दौत्येनागतः पुरुषोत्तमो नारायणः।**

दुर्योधनः : **मा तावद्, भो बादरायण! किं किं कंसभृत्यो दामोदरस्तव पुरुषोत्तमः? सः गोपालकस्तव पुरुषोत्तमः? अहो पार्थिवासन्नमाश्रितस्य भृत्यजनस्य समुदाचारः। सगर्वं खल्वस्य वचनम्। आः अपध्वंस!**

काञ्चुकीयः : प्रसीदतु महाराजः। सम्भ्रमेण समुदाचारो विस्मृतः।
(पादयोः पतति)

दुर्योधनः : सम्भ्रान्त इति? आ मनुष्याणामस्त्येव सम्भ्रमः।
उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ।

काञ्चुकीयः : अनुगृहीतोऽस्मि।

दुर्योधनः : इदानीं प्रसन्नोऽस्मि। क एष दूतः प्राप्तः।

काञ्चुकीयः : दूतः प्राप्तः केशवः।

दुर्योधनः : केशव इति? एवमेष्टव्यम् । अयमेव समुदाचारः। भो भो ! दौत्येनागतस्य केशवस्य किं युक्तम्? किमाहुर्भवन्तः? अर्घ्यप्रदानेन पूजयितव्यः केशव इति न मे रोचते। योऽस्य केशवस्य कृते प्रत्युत्थास्यति तमहं दण्डयिष्यामि। बादरायण, प्रवेशय अधुना तं दूतम्।

काञ्चुकीयः : यदाज्ञापयति महाराजः।
(ततः प्रविशति वासुदेवः काञ्चुकीयश्च)

दुर्योधनः : भो दूत !

धर्मात्मजो वायुसुतश्च भीमो –
भ्रातार्जुनो मे त्रिदशेन्द्रसूनुः।
यमौ च तावश्विसुतौ विनीतौ,
सर्वे सभृत्याः कुशलोपपन्नाः।।

वासुदेवः : सदृशमेतद् गान्धारीपुत्रस्य । अथ किम् अथ किम्? कुशलिनः सर्वे भवतो राज्ये शरीरे बाह्याभ्यन्तरे च कुशलमनामयं च पृष्ट्वा विज्ञापयन्ति युधिष्ठिरादयः पाण्डवाः –

अनुभूतं महद्दुःखं सम्पूर्णः समयः स च।
अस्माकमपि धर्म्यं यद् दायाद्यं तद् विभज्यताम्।।

दुर्योधनः : कथं कथं दायाद्यमिति? देवात्मजास्ते नैवार्हन्ति दायाद्यम्।

वासुदेवः : भो राजन्, मा मैवम्। एवं परस्परविरोधस्य विवर्धनेन कुरुकुलं शीघ्रं नामशेषं भविष्यति। तस्मात् रोषमपकृष्य भवान् तदेव कर्तुमर्हति यद् युधिष्ठिरप्रमुखाः प्रणयात् त्वां कथयन्ति।

दुर्योधनः : देवात्मजैर्मनुष्याणां कथं वा बन्धुता भवेत्
पिष्टपेषणमेतावत् पर्याप्तं छिद्यतां कथा।।

वासुदेवः : भो सुयोधन ! किं न जानीषे पाण्डवानां पराक्रमम्? श्रूयताम् –
दातुमर्हसि मद्वाक्याद् राज्यार्धं धृतराष्ट्रज।
अन्यथा सागरान्तां गां हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः।।

दुर्योधनः : कथं कथम् ! हरिष्यन्ति हि पाण्डवाः ! भो परुषवचनदक्ष ! अभाष्यस्त्वम्। अहं त्वद्वचोभिः तृणमपि न दास्ये।

वासुदेवः : भो सुयोधन ! ननु क्षिपसि माम्? गच्छामि तावत्।

दुर्योधनः : कथं यास्यति किल केशव? भो दुःशासनादयः ! बध्यतां केशवः।

वासुदेवः : कथं बद्धुकामो मां किल सुयोधनः? भवतु, सुयोधनस्य सामर्थ्यं पश्यामि।
(विश्वरूपमास्थितः)

दुर्योधनः : **भो दूत ! त्वं देवमायाः सृजसि? नरपतिगणमध्ये अद्य त्वमवश्यमेव बध्यसे। आः तिष्ठेदानीम् ! कथं न दृष्टः केशवः? अयं केशवः। अहो ह्रस्वत्वं केशवस्य ! आः तिष्ठेदानीम्। कथं न दृष्टः केशवः? कथं न दृष्टः केशवः? अयं केशवः, अयं केशवः, सर्वत्र मन्त्रशालायां केशवा भवन्ति। किमिदानीं करिष्ये? भवतु, दृष्टम्। भो भो राजानः। एकेनैकः केशवो बध्यताम्। कथं स्वयमेव पाशैर्बद्धाः पतन्ति राजानः? साधु भो जम्भक ! साधु !**

शब्दार्थाः

दौत्यम्	–	*दूतस्य कार्यम्*	–	दूत का कार्य
स्कन्धावारात्	–	*शिविरात्*	–	छावनी से
दामोदरः	–	*दाम उदरे यस्य सः,*	–	श्रीकृष्ण
गोपालकः	–	*श्रीकृष्णः गोपः*	–	गौओं को पालने (चराने) वाला
पार्थिवाः	–	राजानः	–	राजा
आसन्नम्	–	*निकटम्*	–	पास
समुदाचारः	–	*शिष्टाचारः*	–	शिष्टाचार
आः अपध्वंस	–	निन्द्यः	–	नीच
प्रसीदतु	–	*प्रसन्नः भवतु*	–	प्रसन्न होइए
सम्भ्रमेण	–	*आकुलतया*	–	हड़बड़ी से
अनुगृहीतः	–	*उपकृतः*	–	उपकृत
अर्घ्यप्रदानेन	–	*अर्घ्यरूपेण जलदानेन*	–	अर्घ्य का जल देने से
प्रत्युत्थास्यति	–	*स्वागताय उत्थितः भविष्यति*	–	स्वागत के लिए उठकर खड़ा होगा
धर्मात्मजः	–	*धर्मपुत्रः युधिष्ठिरः*	–	युधिष्ठिर

वायुसुतः	—	*वायुपुत्रः भीमः*	—	वायु का पुत्र, भीम
त्रिदशेन्द्रसूनुः	—	*इन्द्रपुत्रः अर्जुनः*	—	इन्द्र का पुत्र, अर्जुन
अनामयः	—	*आरोग्य*	—	नीरोगता
विज्ञापयन्ति	—	*निवेदयन्ति*	—	निवेदन करते हैं
समयः	—	*सन्धिः*	—	समझौता
दायाद्यम्	—	*पैतृकसम्पत्तिम्*	—	पैतृकसंपत्ति को
देवात्मजाः	—	*देवपुत्राः*	—	देवपुत्र
नैवार्हन्ति	—	*योग्याः नैव सन्ति*	—	योग्य (समर्थ) नहीं है
रोषम्	—	*क्रोधम्*	—	क्रोध को
अपकृष्य	—	*दूरीकृत्य*	—	त्यागकर
युधिष्ठिरप्रमुखाः	—	*युधिष्ठिरादयः*	—	युधिष्ठिर आदि
पिष्टपेषणम्	—	*पिष्टस्य वस्तुनः पेषणम्, पुनरुक्तिम्*	—	बार–बार कहना
गाम्	—	*पृथ्वीम्*	—	पृथ्वी को
धृतराष्ट्रज	—	*दुर्योधन*	—	दुर्योधन
ह्रस्वत्वम्	—	*लघुत्वम्*	—	लघुता को
जम्भक !	—	*कपटिन्, मायाविन्*	—	हे कपटी !

अस्माभिः किम् अधीतम् ?

- दुर्योधनसभायां श्रीकृष्णः दूतरूपेण प्रविशति।
- सः पाण्डवानां दायाद्यविभाजनविषयकं सन्देशं श्रावयति।
- दुर्योधन: व्यङ्ग्यात्मकभाषया कृष्णं "परुषवचनदक्ष" इति सम्बोध्य "तृणमपि न दास्यामि" इति घोषयति।
- अनया घोषणया युद्धस्तु निश्चित: एव इति मत्वा कृष्णः गन्तुम् इच्छति। परं दुर्योधनः कृष्णं बद्धुमादिशति।
- कृष्णः स्वीयं विश्वरूपं प्रकटयति। अन्ते च तस्य अनेकानि रूपाणि भवन्ति।
- कृष्णं बद्धुम् असमर्थो दुर्योधनः विचलितो जायते। कृष्णं बद्धुकामाः च सर्वे राजानः स्वयमेव पाशैर्बद्धाः पतन्ति।
- दुर्योधनोऽपि कृष्णस्य मायया सुतरां लज्जितो भवति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत

क. पुरुषोत्तमो नारायणः दौत्येन कुतः आगतः?

ख. 'गान्धारी' कस्य माता आसीत्?

ग. 'धर्मात्मजः' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

घ. पाण्डवाः कस्य विभाजनम् इच्छन्ति?

ङ सागरान्तां गां के हरिष्यन्ति?

2. कः कं वदति इति वदत

	कः	कम्
यथा – जयतु महाराजः	**काञ्चुकीयः**	**दुर्योधनम्**
क. अयमेव समुदाचारः	________	________
ख. दूतः प्राप्तः केशवः	________	________
ग. सदृशमेतत् गान्धारीपुत्रस्य	________	________
घ. कुरुकुलं शीघ्रं नामशेषं भविष्यति	________	________
ङ अहं त्वद्वचोभिः तृणमपि न दास्ये	________	________

लिखितः

1. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां स्थाने पाठे प्रयुक्तान् शब्दान् लिखत

यथा – एष खलु दूतकार्येण आगतः पुरुषोत्तमो नारायणः (दौत्येन)

क. अहो नृपसमीपमाश्रितस्य भृत्यजनस्य समुदाचारः। ( )

ख. अनेन प्रकारेण एव वक्तव्यम् अयमेव समुदाचारः ( )

ग. तस्मात् क्रोधं दूरीकृत्य भवान् तदेव कर्तुमर्हति यत् युधिष्ठिर – प्रमुखाः प्रणयात् त्वां कथयन्ति। ( )

घ. नृपाणां समूहमध्येऽद्य त्वमवश्यमेव बध्यसे। ( )

ङ. कथं मां बद्धुमना सुयोधनः। ( )

2. संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत

क. वासुदेवः दुर्योधनस्य सभां किमर्थं गतवान्?

ख. काञ्चुकीयेन केन कारणेन समुदाचारो विस्मृत:?

ग. पाण्डवा: वासुदेवेन दुर्योधनं किं विज्ञापयन्ति?

घ. केशव: दुर्योधनं पाण्डवेभ्य: किं दातुम् अकथयत्?

ङ. दुर्योधन: दु:शासनं किमादिशति?

3. तत्पदं रेखाङ्कितं कुरुत

- **यत्र सम्बोधनं नास्ति –**
  भो बादरायण ! भो सुयोधन ! भो परुषवचनदक्ष ! केशव इति
- **यत्र षष्ठी विभक्तिः नास्ति –**
  रोषमपकृष्य, परस्परविरोधस्य, भृत्यजनस्य, केशवस्य
- **यत्र, यत् – प्रत्ययो नास्ति –**
  अभाष्यः, धर्म्यम्, पूज्यम्, दायाद्यम्।

4. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं लिखत

क. **यथा – अनुगृहीतः**	**+**	**अस्मि**	**=**	**अनुगृहीतोऽस्मि**
____________	+	____________	=	प्रसन्नोऽस्मि
यः	+	अस्य	=	____________
ख. **यथा – न**	**+**	**एव**	**=**	**नैव**
मा	+	एवम्	=	____________
____________	+	____________	=	एकेनैकः
ग. **यथा – गोपालकः**	**+**	**तव**	**=**	**गोपालकस्तव**

देवात्मजाः	+	ते	=	__________
__________	+	__________	=	अभाष्यस्त्वम्
घ. **यथा – पार्थिव**	+	**आसन्नम्**	=	**पार्थिवासन्नम्**
देव	+	आत्मजाः	=	__________
__________	+	__________	=	दौत्येनागतः
ङ **यथा – दुः**	+	**योधनः**	=	**दुर्योधनः**
पाशैः	+	बद्धाः	=	__________
__________	+	__________	=	आहुर्भवन्तः

5. घटनाक्रमानुसारं लिखत

क. काञ्चुकीयः वासुदेवं सुयोधनस्य सभां प्रवेशयति।
ख. सुयोधनः काञ्चुकीयाय कुपितो भूत्वा तं सभायाः निर्गन्तुं कथयति।
ग. वासुदेवः सभां प्रविश्य सुयोधनस्य कुशलं पृष्ट्वा पाण्डवानां सन्देशं श्रावयति।
घ. काञ्चुकीयः सुयोधनं दौत्येन पुरुषोत्तमस्य वासुदेवस्य आगमनं ज्ञापयति।
ङ. काञ्चुकीयः क्षमायाचनां कृत्वा केशवस्य आगमनविषये सूचयति।
च. सुयोधनः वासुदेवस्य वचनं पिष्टपेषणमिव मन्यते।
छ. वासुदेवः पाण्डवानां सन्देशं श्रावयित्वा सुयोधनं दायाद्यदानार्थं प्रेरयति।
ज. सुयोधनः वासुदेवं बद्धुं सर्वान् राज्ञः आदिशति।
झ. वासुदेवं बद्धुकामाः सर्वे राजानः पाशैर्बद्धाः पतन्ति।
ञ. वासुदेवः विश्वरूपम् आस्थितः भवति।

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु क्त-प्रत्ययस्य यथोचितं प्रयोगं कुरुत

i. यात्रामार्गे त्वया किं किं __________ (दृश् + क्त)
ii. तव वार्षिकी परीक्षा __________ अस्ति। (आ + सद् + क्त)
iii. शनैः शनैः चलता अपि कच्छपेन गन्तव्यं __________। (प्र + आप् + क्त)
iv. प्रतियोगितायां प्राप्तविजयौ छात्रौ __________ स्तः। (प्र + सद् + क्त)
v. छायावृक्षम् __________ पथिकं मार्गं पृच्छ। (आ + श्रि + क्त)

vi. तव अनेन उपकारेण अहम् __________ अस्मि। (अनु + ग्रह् +क्त)

vii. __________ तस्य तर्कः। (उप + पद् + क्त)

viii. गर्दभाः कुत्र __________ सन्ति? (बन्ध् + क्त)

ix तेन जीवने बहूनि कष्टानि __________। (अनु + भू + क्त)

x. सुयोग्येन महेशेन तु धातुरूपाणि न __________ (वि+ स्मृ + क्त)

7. **कुशलिनः .... पाण्डवाः इति।** सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत –

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

भासः संस्कृतभाषायाः श्रेष्ठो रूपककारोऽस्ति। सः त्रावणकोरनिवासी दाक्षिणात्य आसीत्। तेन त्रयोदशरूपकाणि लिखितानि येषां गवेषणा 1909 खिस्तीये संवत्सरे महामहोपाध्यायेन टी-गणपति-शास्त्रिणा कृता। भासस्य स्थितिकालः 300 ई.पू. मन्यते विद्वद्भिः। दूतवाक्यम्, कर्णभारम्, दूतघटोत्कचम्, उरुभङ्गम्, मध्यमव्यायोगः, पञ्चरात्रम्, अभिषेकः, बालचरितम्, अविमारकम्, प्रतिमानाटकम्, प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, स्वप्नवासवदत्तम, चारुदत्तम् चेति तस्य त्रयोदश रूपकाणि। सूक्तिमुक्तावल्यां राजशेखरो भासस्य स्वप्नवासवदत्तं प्रशंसन् कथयति–

भासनाटकचक्रेऽपि च्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुम्।
स्वप्नवासवदत्तस्य दाहकोऽभून्न पावकः।।

ख. रूपकपरिचयः

'दूतवाक्यं' नाम रूपकमेकाङ्कम् अस्ति। पाण्डवाः श्रीकृष्णं दूतकर्मणि नियुज्य दुर्योधनसभायां सन्धिप्रस्तावाय प्रेषयन्ति। श्रीकृष्णो यदा कौरवाणां समक्षं पाण्डवेभ्योऽर्धराज्यदानप्रस्तावं स्थापयति तदा अभिमानी, दम्भी च दुर्योधनः तं न स्वीकरोति युद्धसङ्केतं च ददाति। सः सभायां श्रीकृष्णस्य अपमानं कृत्वा दुःसाहसं प्रदर्शयति, तं बद्धुं च प्रयतते परम् असफलो जायते।

ग. भाषिकविस्तारः

ष्यञ् प्रत्ययः

ष्यञ् प्रत्ययस्य प्रयोगः भाव कर्मणोः भवति। प्रत्ययस्य 'य' भाग एव अवशिष्यते।

यथा –

दौत्यम्	–	दूत + ष्यञ्	(दूतस्य कर्म)
औदार्यम्	–	उदार + ष्यञ्	(उदारस्य भावः)
शौर्यम्	–	शूर + ष्यञ्	(शूरस्य कर्म भावो वा)
सौख्यम्	–	सुख + ष्यञ्	(सुखस्य भावः)
चौर्यम्	–	चोर + ष्यञ्	(चोरस्य कर्म)

'काम' शब्दस्य प्रयोगविशेषः

समासे 'काम' इति शब्दे परे सति तुमुन् – प्रत्ययस्य मकारस्य लोपो भवति।

यथा –	बद्धुकामः	–	बद्धुं कामः यस्य सः	–	बन्धनस्य इच्छुकः
	पठितुकामः	–	पठितुं कामः यस्य सः	–	पठनस्य इच्छुकः
	द्रष्टुकामः	–	द्रष्टुं कामः यस्य सः	–	दर्शनस्य इच्छुकः
	गन्तुकामः	–	गन्तुं कामः यस्य सः	–	गमनस्य इच्छुकः
	धावितुकामः	–	धावितुं कामः यस्य सः	–	धावनस्य इच्छुकः
	चलितुकामः	–	चलितुं कामः यस्य सः	–	चलनस्य इच्छुकः

स्त्रीलिङ्गे च टाप् (आ) प्रत्ययस्य योगेन –

बद्धुकामा, पठितुकामा, गन्तुकामा, धावितुकामा, चलितुकामा इत्यादयः शब्दाः निर्मीयन्ते।

यत्-प्रत्ययः योग्यः इत्यर्थस्य बोधको भवति –

अभाष्यः	–	भाषितुं योग्यो भाष्यः, न भाष्यः अभाष्यः
सेव्यः	–	सेवितुं योग्यः
खाद्यः	–	खादितुं योग्यः
पेयः	–	पातुं योग्यः
दृश्यः	–	द्रष्टुं योग्यः

घ. संस्कृते न्यायाः

केषाञ्चित् न्यायानां स्पष्टीकरणम् —

- **पिष्टपेषणन्यायः** — पुनरुक्तिदोषः। कृतं कार्यं पौनःपुन्येन कृत्वा व्यर्थमेव समययापनम्; एकस्यैव भावस्य पौनःपुन्येन अभिव्यक्तिर्वा।
- **स्थालीपुलाकन्यायः** — एकेनैव पदार्थेन समुदायस्य बोधः। स्थालीपुलाके एकेनैव तण्डुलेन सर्वेऽपि तण्डुलाः पक्वा इति अनुमीयते तथैव एकेनैव पदार्थेन सकलस्यापि समूहस्य अनुमानमनेन न्यायेन क्रियते।
- **देहलीदीपकन्यायः** — यथा देहल्यां स्थापितेन दीपकेन गृहस्यान्तर्बहिःश्च द्वयोरपि स्थानयोः प्रकाशो जायते तथैव एकेनैव साधनेन एकाधिकप्रयोजनानां साध्यानां कार्याणां वा सिद्धिरनेन न्यायेन क्रियते।

नवमः पाठः

गीतायाः संदेशः

[प्रस्तुत पाठ 'महाभारत' के महत्त्वपूर्ण अंश 'श्रीमदभदगवद्गीता' से संकलित है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण मोहग्रस्त एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ अर्जुन को समस्त दुःखों के

विनाश का उपाय कहते हुए समत्वभाव स्थिरमतित्व, वाङ्मय तप तथा कर्त्तव्यभावपूर्वक प्रदत्त सात्त्विक दान का उपदेश देते हैं। वे उसे छेद, दाह, क्लेदन, शोषण आदि धर्मों से रहित आत्मा के स्वरूप और समत्वभावनापूर्वक कर्त्तव्य पालन का बोध कराते है।]

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ 1 ॥

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ 2 ॥

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।।3।।
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ।।4।।
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।।5।।
दातव्यमिति यद् दानं दीयतेऽनुपकारणे।
देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।6।।
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।7।।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।।8।।
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सङ्गंत्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ।।9।।

शब्दार्थाः

उद्धरेत्	—	*उद्धारं कुर्यात्*	—	उद्धार करें
आत्मना	—	*स्वयमेव*	—	स्वयम् ही
अवसादयेत्	—	*दुःखं प्रापयेत्*	—	दुःख प्रदान करे
युक्ताहारविहारस्य	—	*यः समुचितम् आहारं विहारं च करोति तस्य*	—	जो उचित आहार तथा विहार करता है
युक्तचेष्टस्य	—	*सम्यक् क्रियस्य*	—	उचित क्रिया करने वाला
दुःखहा	—	दुःखनाशकः	—	दुःखों को नष्ट करनेवाला
अनिकेतः	—	*वासस्थानरहितः*	—	बेघर
तुल्यनिन्दास्तुतिः	—	*निन्दाप्रशंसयोः, समभावयुक्तः*	—	निंदा एवं स्तुति में समभाव रखनेवाला

स्थिरमतिः	–	*स्थिरबुद्धिः*	–	दृढ़निश्चयी
धृतिः	–	*धैर्यम्*	–	धैर्य
शौचम्	–	*शुद्धिः*	–	पवित्रता
अद्रोहः	–	*नः द्रोहोऽद्रोहः*	–	द्रोह से रहित
अतिमानिता	–	*अत्यहंकार*	–	अत्यधिक गर्व करना
अनुद्वेगकरं	–	*न उद्वेगकरम् अनुद्वेगकरम्, अक्षोभकरम्*	–	व्याकुल न करने वाला
दातव्यम्	–	*देयम्*	–	देना चाहिए
अनुपकारिणे	–	*न उपकारी अनुपकारी तस्मै*	–	प्रत्युपकाररहिताय प्रत्युपकार रहित
पावकः	–	अग्निः	–	आग
आपः	–	*जलानि*	–	जल
मारुतः	–	*वातः, पवनः*	–	वायु
छिन्दन्ति	–	*कृन्तन्ति*	–	काटते हैं
अवाप्स्यसि	–	*प्राप्स्यसि*	–	प्राप्त करोगे
कार्यम्	–	*करणीयम्, कर्त्तव्यम्*	–	करने योग्य
सङ्गम्	–	*आसक्तिम्, आसक्ति*	–	झुकाव को

अस्माभिः किम् अधीतम्,

- मानवः स्वयमेव आत्मनो बन्धुः शत्रुर्वा भवति।
- युक्तचेष्टाव्यवहारादिसम्पन्नस्यैव जनस्य योगो दुःखापहारको भवति।
- तेजः, क्षमा, धैर्यं, शौचं, द्रोहरहित्यं अतिमानविहीनता चेति दैवी सम्पद् कथ्यते।
- उद्वेगरहितं, सत्यं, प्रियं, हितकारि च वचनं, स्वाध्यायोऽभ्यासश्चेति वाङ्मयं तपः।
- सुखदुःखलाभालाभजयाजयादिषु समभावसम्पन्नो जनः पापादिकं न प्राप्नोति। स्थिरमतिः भक्तिमान् च नरः ईश्वरस्य प्रियो भवति।
- आत्मा शस्त्रैः अछेद्यः अग्निना अदाह्यः जलेन अक्लेद्यः वायुना च अशोष्योऽस्ति।
- अनुपकारिणे दत्तं दानं सात्त्विकं भवति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत**
   क. आत्मना कम् उद्धरेत्?
   ख. युक्ताहारविहारस्य दुःखहा कः भवति?
   ग. अस्मिन् पाठेऽर्जुनाय अन्यत् किं सम्बोधनं प्रयुक्तम्?
   घ. शस्त्राणि कं न छिन्दन्ति?
   ङ. सात्त्विकं दानं कस्मै दीयते?
   च. कर्मणि सङ्गस्य फलस्य च त्यागः कीदृशे मतः?

लिखितः

1. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत**
   क. 'श्रीमद्भगवद्गीता' कस्माद् ग्रन्थाद् उद्धृता?
   ख. योगः केषां जनानां दुःखं हरति?
   ग. कीदृशो नरो भगवतः श्रीकृष्णस्य प्रियः?
   घ. कीदृशं वाक्यं वाङ्मयं तप उच्यते?
   ङ. दैवीसम्पदं प्राप्तस्य जनस्य के के गुणाः भवन्ति?
   च. 'युद्धाय युज्यस्व' इति कः कं प्रति कथयति?
   छ. किं किं त्यक्त्वा नियतं कर्म कुर्यात्?

2. क. **उदाहरणम् अनुसृत्य सन्धिविच्छेदः क्रियताम्**

	पदानि	सन्धिविच्छेदः			पूर्ववर्णः	परवर्णः
यथा –	आत्मनात्मानम्	आत्मना	+	आत्मानम्	आ	आ
	नात्मानम्	______	+	______	__	__
	नातिमानिता	______	+	______	______	
	लाभालाभौ	______	+	______	______	
	जयाजयौ	______	+	______	______	
	ह्यात्मनः,	______	+	______	______	
	क्लेदयन्त्यापः	______	+	______	______	
	इत्येव	______	+	______	______	

ख. अत्र पदेषु सन्धिं कृत्वा समक्षं लिखत

यथा –	आत्मा	+	एव	आत्मैव
	च	+	एव	______
	न	+	एवम्	______
यथा –	योगः	+	भवति	योगो भवति
	प्रियः	+	नरः	______
	ततः	+	युद्धाय	______

3. **अर्थमेलनं कुरुत**

क	ख
युक्तम्	वासस्थानयो रहितः
मौनी	अखेदकरम्
अनिकेतः	पूज्यतायाः अभिमानस्य भावः
अनुद्वेगकरम्	अधोगतिं न प्रापयेत्
अतिमानिता	यथायोग्यम्
नियतम्	निश्चितम्
अवसादयेत्	मौनधारकः

4. **प्रस्तुतपाठात् अधोलिखितभावसम्बन्धिनः श्लोकान्/श्लोकांशान् चित्वा समक्षं लिखत**

क. स्वयमेव आत्मनः उन्नतिं कुर्यात्। ______

ख. तदेव श्रेष्ठं दानं यत् प्रत्युपकाराय न दीयते।

ग. आत्मा अजरोऽमरश्चास्ति। ______

घ. कर्मणि फलासङ्गस्य त्याग एव प्रशंसनीयः। ______

5. **पाठं पठित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत**

क. योगाय उचितःआहारः, उचितः विहारः ______ उचितकाले शयनम् ______ चेति षड्लक्षणानि अपेक्ष्यन्ते।

ख. स्थिरमतेः निन्दायां प्रशंसायाञ्च समभावः, ______ सन्तुष्टः ______ भक्तिमान् चेति षड् लक्षणानि भवन्ति।

ग. वाङ्मयस्य तपसोऽखेदकरं, सत्यं, प्रियं ____________ च वाक्यम् ____________ अभ्यसनम् च इति षड् लक्षणमुच्यते।

घ. दैवीं सम्पदं प्राप्तस्य जनस्य तेजः, क्षमा, ____________ शौचम् अद्रोहः ____________ इति षड्गुणा भवन्ति।

6. अधः प्रदत्तविग्रहवाक्यानां समस्तपदानि रचयित्वा समासनामानि अपि लिखत

विग्रहवाक्यानि	*समस्तपदानि*	*समासनाम*
यथा – सुखं च दुःखं च	**सुखदुःखे**	**द्वन्द्वः**
क. लाभः च अलाभः च	____________	____________
ख. जयः च अजयः च	____________	____________
ग. आहारः च विहारः च	____________	____________
घ. युक्तौ आहारविहारौ यस्य तस्य	युक्ताहारविहारस्य	बहुव्रीहिः
ङ. अविद्यमानः निकेतः यस्य सः	____________	____________
च. स्थिरा मतिः यस्य सः	____________	____________
छ. न उद्वेगकरम्	____________	नञ्तत्पुरुषः
ज. न उपकारिणे	____________	____________

7. क. यथावश्यकं क्रियापदनिर्माणं कुरुत

क. धातुः	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**	**क्रियापदम्**
यथा – उत् + √हृ	विधिलिङ्	प्रथमः	एकवचनम्	उद्धरेत्
√छिद्	लट्	प्रथमः	बहुवचनम्	________
√युज् (कर्मवाच्य)	लोट	मध्यमः	एकवचनम्	________
√दा	लट्	प्रथमः	एकवचन्	________
√वच्	लट्	प्रथमः	एकवचनम्	________
√कृ	लट्	प्रथमः	एकवचनम्	________

ख. **भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत**

i. दहति, धृतिः भक्तिः, स्तुतिः ________

ii. देशे, काले, पात्रे, अनुपकारिणे ___________
iii. वाक्यम्, तपः, एनम्, दानम् ___________
iv. सुखदुःखे, समे, लाभालाभौ, जयाजयौ ___________
v. दीयते, क्रियते, उच्यते, शोषयति ___________

ग. अधोलिखितानां पदानां पर्यायं लिखित्वा वाक्यं रचयत –

निन्दा, सन्तुष्टः, उद्वेगकरम्, पात्रे, सुखम्, लाभः, जयः, पापम्, द्रोहः, मौनी।

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

प्रस्तुतः पाठो महाभारतस्य भीष्मपर्वणि विद्यमानायाः श्रीमद्भगवद्गीतायाः सङ्कलितः। महाभारतं वेदव्यासापरनामधेयेन कृष्णद्वैपायनेन प्रणीतं वर्तते। वेदव्यासः पुराणादीनामनेकेषां ग्रन्थानाम् अपि रचयिता। असौ कौरवपाण्डवानां पितामह आसीत्। स एव वेदमन्त्रान् चतुःसंहितासु विभक्तवान्। यस्माद् हेतोः 'वेदव्यासः' इति तस्य संज्ञा जाता। अनेन महाभारते महाभारतयुद्धस्य कौरवपाण्डवानामैतिह्यस्य वर्णनं कृतम्। अस्मिन् ग्रन्थेऽनेके व्यावहारिका आध्यात्मिकाश्च उपदेशाः विद्यन्ते। अस्यैव अंशभूतायां श्रीमद्भगवद्गीतायां निष्कामकर्मणः आत्मतत्त्वस्य च उपदेशः प्रस्तुतः।

ख. ग्रन्थपरिचयः

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारतस्य अंशो वर्तते, यत्र श्रीवेदव्यासेन श्रीकृष्णमुखारविन्दमाध्यमेन निष्कामकर्मणोऽध्यात्मविद्यायाश्च अपूर्व उपदेशः प्रस्तुतः। अस्मिन् ग्रन्थेऽष्टादश अध्यायाः विद्यन्ते श्लोकानाञ्च सप्तशतं वर्तते। कुरुक्षेत्रे अष्टादशदिवसपर्यन्तं कौरवपाण्डवमध्ये भीषणं युद्धम् अभवत् यस्मिन्, असंख्याः योद्धारः दिवंगताः। मोहग्रस्तम् अर्जुनं युद्धक्षेत्रे श्रीकृष्णः यत् उपदिशति तदत्र अष्टादशाध्यायेषु वर्णितम्।

ग. भाषिकविस्तारः

पर्यायवाचिनः

रिपुः – शत्रुः, अरिः, वैरी
बन्धुः – बान्धवः, मित्रम्, आत्मीयः

आपः	—	जलम्, उदकम्, वारि
मारुतः	—	वायुः, पवनः, अनिलः
पावकः	—	अग्निः, वह्निः, अनलः
उच्यते	—	कथ्यते, भण्यते, गद्यते
अवाप्स्यसि	—	लप्स्यसे, प्राप्स्यसि, अधिगमिष्यसि

घ. भावविस्तारः

ईश्वरभक्ताय निर्देशाः

- सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज॥
  अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥
- अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
  तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीता 18. 66)

आहारः

- आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः॥
  रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥

(श्रीमद्भगवद्गीता 17. 8)

दानम्

- दीयमानं हि नापैति भूय एवाभिवर्धते।
  कूप उत्सिच्यमानो हि भवेत्शुद्धोबहूदकः॥

(स्कंदपुराणम् — मा.कौ. 61)

आत्मा

- वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
  तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥
- न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
  अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥
- आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः

(मनुस्मृतिः 8. 84)

दशमः पाठः

पर्यावरणरक्षणम्

[वर्तमान युग में प्रदूषित वातावरण मानव-जीवन के लिए भयंकर अभिशाप बन गया है। नदियों का जल कलुषित हो रहा है, वन वृक्षों से रहित हो रहे हैं, मिट्टी का कटाव बढ़ने से बाढ़ की समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। कल-कारखानों और वाहनों के धुएँ से वायु विषैली हो रही है। वन्य-प्राणियों की जातियाँ भी नष्ट हो रही हैं। ऐसी परिस्थिति में हमारा कर्तव्य है कि हम पर्यावरण के संरक्षणार्थ उपाय करें। वृक्षों के रोपण, नदियों के जलों की स्वच्छता, ऊर्जा के संरक्षण, वापी, कूप, तड़ाग, उद्यान आदि के निर्माण और उन्हें स्वच्छ रखने में प्रयत्नशील हों ताकि जीवन सुखमय और शांतिप्रद हो सके।]

प्रकृतिः समेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः तर्पयति च सुखसाधनैः। पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः, आकाशश्चास्याः प्रमुखानि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। यथाऽजातश्शिशुः मातृगर्भे सुरक्षितस्तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं, सत्सङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च प्रददाति। प्रकृतिकोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः अग्निभयैः, भूकम्पैः, वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

अतएव प्रकृतिरस्माभिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं स्वयमेव रक्षितं भविष्यति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलाशंसिन ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने एव सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। विविधा विहगाः कलकूजितैस्तत्र श्रोत्ररसायनं

ददति। सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च
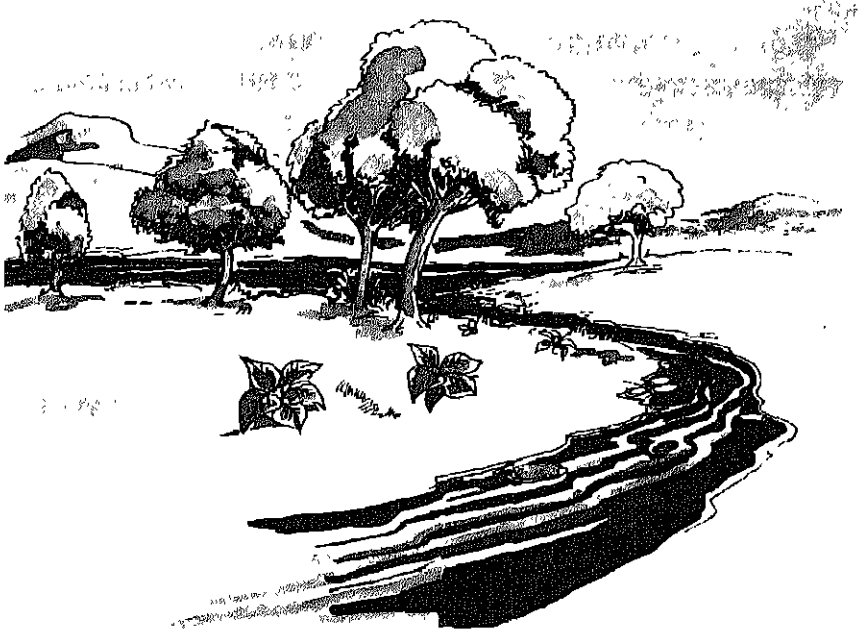
फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति।

परन्तु स्वार्थान्धो मानवस्तदेव पर्यावरणमद्य नाशयति। स्वल्पलाभाय जना बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपात्यते येन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो जायते। नदीजलमपि तत्सर्वथाऽपेयं जायते। वनवृक्षा निर्विवेकं छिद्यन्ते व्यापारवर्धनाय, येन अवृष्टिः प्रवर्धते, वनपशवश्च शरणरहिता ग्रामेषु उपद्रवं विदधति। शुद्धवायुरपि वृक्षकर्तनात् सङ्कटापन्नो जातः। एवं हि स्वार्थान्धमानवैर्विकृतिमुपगता प्रकृतिरेव तेषां विनाशकर्त्री सञ्जाता। पर्यावरणे विकृतिमुपगते जायन्ते विविधा रोगा भीषणसमस्याश्च। तत्सर्वमिदानीं चिन्तनीयं प्रतिभाति।

धर्मो रक्षति रक्षितः इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः। तत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतनविश्रामगृहादिस्थापनञ्च धर्मसिद्धेः स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम्। कुक्कुरसूकरसर्पनकुलादिस्थलचरा, मत्स्यकच्छपमकरप्रभृतयो जलचराश्चापि रक्षणीया, यतस्ते स्थलमलापनोदिनो जलमलापहारिणश्च। प्रकृतिरक्षयैव सम्भवति लोकरक्षेति न संशयः।

शब्दार्थाः

पुष्णाति	–	*पोषणं करोति*	–	पुष्ट करता है
अजात शिशुः	–	*अनुत्पन्न जातकः*	–	पैदा न हुआ शिशु
कुक्षौ	–	*गर्भे*	–	गर्भ में
जलप्लावनैः	–	*जलौघैः*	–	बाढ़ से
वात्याचक्रैः	–	*वातचक्रैः*	–	आँधी, बवंडर
लोकमङ्गलाशंसिनः	–	*समाजकल्याणकामाः*	–	जनता के कल्याण को चाहने वाले
श्रोत्ररसायनम्	–	*कर्णामृतम्*	–	कान को अच्छा लगने वाला
गिरिनिर्झराः	–	*पर्वतानां प्रपाताः*	–	पहाड़ों से निकलने वाले झरने
यन्त्रागाराणाम्	–	*यन्त्रालयानाम्*	–	कारखानों के
अपेयम्	–	*पातुम् अयोग्यम्*	–	जो पिया न जा सके
वृक्षकर्तनात्	–	*वृक्षाणाम् उच्छेदात्*	–	पेड़ों के काटने से
देवायतनम्	–	*देवालयः, मन्दिरम्*	–	मन्दिर
स्थलमलापनोदिनः	–	*भूमिमलापसारिणः*	–	भूमि की गन्दगी को दूर करने वाले

अस्माभिः किम् अधीतम्?

- पृथिवी, जलं, तेजो, वायुराकाशश्चेति प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि।
- एतैः तत्त्वैरेव पर्यावरणस्य रचना भवति।
- प्रदूषणविरहितमेव पर्यावरणं जनानां लाभाय वर्तते।
- अद्य मानवः स्वार्थेन पर्यावरणं प्रदूषयति विविधाः समस्याश्च जनयति।
- यथा धर्मो रक्षति रक्षितः तथैव पर्यावरणमपि रक्षितमेव अस्माकं रक्षां करोति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकेनैव पदेन वदत

क. प्रकृतिः केषां संरक्षणाय यतते?
ख. जनाः किमर्थं बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति?
ग. मानवः कुत्र सुरक्षितस्तिष्ठति?
घ. पर्यावरणं स्वयं कस्य रक्षणेन रक्षितो भविष्यति?
ङ. सुरक्षितं पर्यावरणं कुत्र उपलभ्यते?
च. शुद्धवायुः कस्मात् सङ्कटापन्नो जातः?
छ. कीदृशः धर्मः रक्षति?

लिखितः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत

क. प्रकृत्याः प्रमुखतत्त्वानि कानि सन्ति?
ख. अस्मभ्यं सांसारिकजीवनसुखं, सत्सङ्कल्पं च कः ददाति?
ग. मत्स्यादीनां जलचराणां नाशः कस्मात् कारणात् जायते?
घ. वने शीतलमन्दसुगन्धवनपवनाः किं वितरन्ति?
ङ. पर्यावरणे विकृतिमुपगते किं भवति?

2. अधोलिखितपदेषु सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत

क.	**यथा —**	**परि**	**+**	**आवरणम्**	**=**	**पर्यावरणम्**
		तानि	+	एव	=	________
		________	+	________	=	इत्यार्षवचनम्
ख.	**यथा —**	**च**	**+**	**अस्याः**	**=**	**चास्याः**
		स्वार्थ	+	अन्धाः	=	________
		________	+	________	=	यन्त्रागारः
		मत्स्य	+	________	=	मत्स्यादीनाम्
ग.	**यथा —**	**आकाशः**	**+**	**च**	**=**	**आकाशश्च**
		सामग्रीम्	+	च	=	________
		________	+	________	=	जलचराणाञ्च

घ. **यथा –** **क्षणेन** + एव = **क्षणेनैव**
धर्मस्य + एव = ______
______ + ______ = प्रकृतिरक्षयैव

3. उदाहरणानुसारं पदरचनां कुरुत

क. **उदाहरणम् – जले चरन्ति इति** **जलचराः**
स्थले चरन्ति इति ______
खे चरन्ति इति ______
निशायां चरन्ति इति ______
वने चरन्ति इति ______

ख. **न पेयम् इति** **अपेयम्**
न वृष्टिः इति ______
न सुखम् इति ______
न दुःखम् इति ______

4. विशेषणानां मेलनं उपयुक्त विशेष्यैः सह कुरुत

विशेषणानि	***विशेष्यानि***
प्रमुखानि	पर्यावरणम्
सांसारिकम्	वायुः
सुरक्षितम्	तत्त्वानि
निर्मलम्	जीवनसुखम्
शुद्धः	जलम्

5. उदाहरणम् अनुसृत्य यथानिर्देशं पदनिर्माणं कुरुत

क. यथा – √चिन्त् + अनीयर् = चिन्तनीयः
√रक्ष् + अनीयर् = ______
वि + √______ + ______ = वितरणीयः
______ + √ पद् + णिच्+ ______ = प्रतिपादनीयः

6. निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत

यथा – स्वार्थान्धो मानवोऽद्य पर्यावरणं नाशयति **(बहुवचने)**

- स्वार्थान्धाः मानवाः अद्य पर्यावरणं नाशयन्ति।
- अस्मिन् पर्यावरणे सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्।
  (बहुवचने)
- अजातशिशवः मातृगर्भेषु सुरक्षिताः भवन्ति। (एकवचने)
- वनपशवः ग्रामेषु उपद्रवं कुर्वन्ति (एकवचने)
- गिरिनिर्झराः निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति (द्विवचने)

7. **रचनाभ्यासः**

क. **पाठं पठित्वा पर्यावरणरक्षणार्थं भवन्तः/भवत्यः कान् कान् प्रयत्नान् करिष्यन्ति** इति पञ्चवाक्यैः लिखन्तु –

यथा – अहं विषाक्तं जलं नद्यां नैव पातयिष्यामि।

i.

ii.

iii.

iv.

v.

ख. **पर्यावरणरक्षणमपि ………………… स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम् इति।** सम्यक् पठित्वा प्रश्नद्वयं रचयत

योग्यताविस्तारः

क. च्वि प्रत्ययप्रयोगः अभूततद्भावे च्वि-या स्थितिः पूर्वं न स्यात् तदुत्पत्त्यर्थे च्वि-प्रत्ययस्य प्रयोगः क्रियते। च्वि-प्रत्ययस्य प्रयोगः केवलं अस्-भू-कृ-धातुभ्य एव भवति। प्रत्ययस्य इकारस्य दीर्घत्वं जायते। यथा –

अङ्गीकृतम्	–	अनङ्गीकृतम् अङ्गीकृतम् (अस्वीकृतं स्वीकृतम्)
कृष्णीक्रियते	–	अकृष्णः कृष्णः क्रियते
ब्रह्मीभवति	–	अब्रह्मा ब्रह्मा भवति

ख. अधोलिखितयोः शब्दयुग्मयोः भेदः दर्शनीयः

सङ्कल्प	–	सत्सङ्कल्प
आचारः	–	सदाचारः

जनः	—	सज्जनः
सङ्गतिः	—	सत्सङ्गतिः
मतिः	—	सन्मतिः

ग. **आर्षवचनम्** — महर्षे कथनं। महर्षिप्रोक्तं वचनम् इत्यर्थः

आर्षं वचनम् — कर्मधारयसमासः।

घ. **पञ्चतत्त्वानि** —

पृथिवी, जलम्, तेजः, वायुः आकाशः च एतानि पञ्चतत्त्वानि यैरिदं शरीरं निर्मितम्।

ङ. **पशुपक्षिणां ध्वनयः** —

बुक्कनं	(कुक्कुरस्य)
कायनं	(काकस्य)
रम्भनं	(गवां)
गर्जनं	(सिंहस्य)
नदनं	(गजस्य)
फूत्कारः	(सर्पस्य)
रेभनं	(महिष्याः)
चीभनं	(चटकायाः)
ह्रेषणं	(अश्वस्य)

च. **पर्यावरणसम्बधिनः एते श्लोकाः पठनीयाः स्मरणीयाश्च** —

- पर्यावरणस्य जनकाः वृक्षाः वन्दनीयाः आसन् अतः अस्माकं संस्कृतौ वृक्षाणामुत्पाटनं वर्जितमासीत् —
  दशकूपसमा वापी दशवापीसमः ह्रदः।
  दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।। (मत्स्यपुराणम्)
- तुलसी इति पादपः धार्मिकदृष्ट्या तु पूज्यः एव चिकित्सादृष्ट्या चाऽपि रक्षणीयः। गृहप्राङ्गणे तु अवश्यं रोपणीयः। तुलसी वायुप्रदूषणम् अपनयति इति निगदितं पुराणेषु वैद्यकग्रंथेषु च —
  'तुलसी' कानने चैव गृहे यस्यावतिष्ठते।
  तद्गृहं तीर्थमित्याहुः नायान्ति यमकिंकराः।।
  'तुलसी' गंधमादाय यत्र गच्छति मारुतः।

दिशोर्दश पुनात्याशु भूतग्रामाश्चतुर्विधान्।। (पद्योत्तरखण्डम्)
तुलसीरसः विषमज्वरं नाशयति —
पीतो मरीचिचूर्णेन तुलसीपत्रजो रसः।
द्रोणपुष्परसोप्येवं निहन्ति विषमं ज्वरम्।। (शार्ङ्गधरः)

- **वृक्षारोपणस्य महत्त्वम्**

देवलोकगतस्यापि नाम तस्य न नश्यति।
अतीतानगतांश्चैव पितृवंशांश्च भारत।।
तारयेद् वृक्षरोपी तु तस्माद् वृक्षान् प्ररोपयेत्।
तस्य पुत्रा भवन्त्येव पादपा नात्र संशयः।।

एकादशः पाठः

वाङ्मनःप्राणस्वरूपम्

[प्रस्तुत पाठ छान्दोग्योपनिषद् के छठे अध्याय के पञ्चम खण्ड पर आधारित है। इसमें मन, प्राण तथा वाक् के संदर्भ में रोचक विवरण प्रस्तुत किया गया है। उपनिषद् के गूढ़ प्रसंग को बोधगम्य बनाने के उद्देश्य से इसे आरुणि एवं श्वेतकेतु के संवादरूप में प्रस्तुत किया गया है। आर्ष-परंपरा में ज्ञान-प्राप्ति के तीन उपाय बताए गए हैं उनमें परिप्रश्न भी एक है। यहाँ गुरुसेवापरायण शिष्य वाणी, मन तथा प्राण के विषय में प्रश्न पूछता है और वत्सल आचार्य उन प्रश्नों के उत्तर देते हैं।]

श्वेतकेतुः – भगवन् ! श्वेतकेतुरहं वन्दे।

आरुणिः – वत्स ! चिरञ्जीव।

श्वेतकेतुः – भगवन् ! किञ्चित्प्रष्टुमिच्छामि।

आरुणिः – वत्स ! किमद्य त्वया प्रष्टव्यमस्ति?

श्वेतकेतुः – भगवन् ! प्रष्टुमिच्छामि किमिदं मनः?

आरुणिः – वत्स ! अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः तन्मनः।

श्वेतकेतुः – कश्च प्राणः?

आरुणिः – पीतानाम् अपां योऽणिष्ठः स प्राणः।

श्वेतकेतुः – भगवन् ! केयं वाक्?

आरुणिः – वत्स ! अशितस्य तेजसा योऽणिष्ठः सा वाक्। सौम्य ! मनः अन्नमयं, प्राणः आपोमयः वाक् च तेजोमयी भवति इत्यप्यवधार्यम्।

श्वेतकेतुः — भगवन् ! भूय एव मां विज्ञापयतु।

आरुणिः — सौम्य ! एष उपदिशामि। सावधानं शृणु। मथ्यमानस्य दध्नः योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। तत्सर्पिः भवति।

श्वेतकेतुः — भगवन् ! व्याख्यातं भवता घृतोत्पत्तिरहस्यम्। भूयोऽपि श्रोतुमिच्छामि।

आरुणिः — एवमेव सौम्य ! अश्यमानस्य अन्नस्य योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। तन्मनो भवति। अवगतं न वा?

श्वेतकेतुः — सम्यगवगतं भगवन् !

आरुणिः — वत्स ! पीयमानानां अपां योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति स एव प्राणो भवति।

श्वेतकेतुः – भगवन् ! वाचमपि विज्ञापयतु।

आरुणिः – सौम्य ! अश्यमानस्य तेजसो योऽणिमा, स ऊर्ध्वः समुदीषति। सा खलु वाग्भवति । वत्स! उपदेशान्ते भूयोऽपि त्वां विज्ञापयितुमिच्छामि यदन्नमयं भवति मनः, आपोमयो भवति प्राणस्तेजोमयी च भवति वागिति। किञ्च यादृशमन्नादिकं गृह्णाति मानवस्तादृशमेव तस्य चित्तादिकं भवतीति मदुपदेशसारः। वत्स ! एतत्सर्वं हृदयेन अवधारय।

श्वेतकेतुः – यदाज्ञापयति भगवन्। एष प्रणमामि।

आरुणिः – वत्स ! चिरञ्जीव। तेजस्वि नावधीतमस्तु।

शब्दार्थाः

प्रष्टुम्	–	*प्रश्नं कर्तुम्*	–	प्रश्न करने के लिये, पूछने के लिए
प्रष्टव्यम्	–	*पृच्छाविषयीकरणीयम्*	–	पूछने योग्य
अशितस्य	–	*भक्षितस्य*	–	खाये गये
अणिष्ठः	–	*लघिष्ठः, लघुतमः*	–	अत्यन्त लघु अथवा सर्वाधिक लघु
अन्नमयम्	–	*अन्नविकारभूतम्*	–	अन्न से निर्मित
आपोमयः	–	*जलमयः*	–	जल से निर्मित, जल में परिणत
तेजोमयः	–	*अग्निमयः*	–	अग्नि का परिणामभूत
अवधार्यम्	–	*अवगन्तव्यम्*	–	समझने योग्य
विज्ञापयतु	–	*प्रबोधयतु,*	–	समझाइये
भूयोऽपि	–	*पुनरपि*	–	एक बार और
समुदीषति	–	*समुत्तिष्ठति, समुद्याति, समुच्छलति*	–	ऊपर उठता है
सर्पिः	–	*घृतम्, आज्यम्*	–	घी
अश्यमानस्य	–	*भक्ष्यमाणस्य, निगीर्यमाणस्य*	–	खाये जाते हुए
उपदेशान्ते	–	*प्रवचनान्ते*	–	व्याख्यान के अन्त में
तेजस्वि	–	*तेजोयुक्तम्*	–	तेजस्विता से युक्त
अवधीतम्	–	*अधिगतम्,*	–	पढा गया

अस्माभिः किम् अधीतम् ?

- श्वेतकेतुः आचार्यम् आरुणिं उपगम्य अभिवादनानन्तरम् आशीर्वचनं प्राप्य मनः स्वरूपविषये पृच्छति।
- आरुणिः कथयति यत् खादितस्य अन्नस्य योऽणिष्ठः वर्तते तदेव मनः।
- तदा सः प्राणविषये पृच्छति आरुणिश्च प्रत्यवदति यत् पीतानां जलानाम् यो अणिष्ठः स प्राणो वर्तते।
- तदनन्तरं वाग्विषये श्वेतकेतोः प्रश्नं श्रुत्वा आचार्योऽशितस्य तेजसोऽणिष्ठं तत्त्वं वाक्रूपेण प्रतिपादयति।
- आरुणिः एतदपि बोधयति यत् मनोऽन्नमयं, प्राणः आपोमयः, वाक् च तेजोमयी इति।

अभ्यासः

मौखिकः

1. लघुवाक्यैः प्रश्नोत्तराणि वदत

क. श्वेतकेतुना अभिवादितः आचार्यः आरुणिं किम् अवदत्?
ख. मनः कस्य अणिष्ठः?
ग. पीतानाम् अपाम् प्राणः कीदृशः कथितः?
घ. अन्नमयं किं भवति?
ङ. प्राणः अपां विकारो भवति तेजसां वा?
च. आरुणिः श्वेतकेतवे कमाशीर्वादं दत्तवान्?

लिखितः

1. रिक्तस्थानं कोष्ठकदत्तवैकल्पिकशब्देन पूरयत

क. अशितस्यान्नस्य योऽणिष्ठः (तत् मनः/स प्राणः/सा वाक्) भवति।
ख. मथ्यमानस्य दध्नः योऽणिमा स (ऊर्ध्वः/नीचैः/तिर्यक्) समुदीषति।
ग. मथ्यमानस्य दध्नः अणिमा (सर्पिः/जलं/दुग्धं) भवति।
घ. स एव प्राणो भवति यो (अपाम्/तेजसाम्/अन्नानाम्) अणिमा।
ङ. अन्नमयं भवति (मनः/वचः/प्राणतत्त्वम्)
च. यदद्य श्रुतं तत् (हृदयेन/मा/यथारुचि) अवधारय।

2. उदाहरणानुसारेण निम्नलिखितक्रियापदानां यथानिर्दिष्टं रूपं लिखत

क. **√प्रच्छ + तुमुन् = प्रष्टुम्**
ख. √अश् + तुमुन् =
ग. वि + आ + √ख्या + तुमुन् =
घ. वि + √ज्ञा + णिच् + तुमुन् =
ङ. √वन्द् + तुमुन् =
च. √जीव् + तुमुन् =

3. यथानिर्देशं पदनिर्माणम् कुरुत

यथा – वन्द्, (आ.) लट्लकारः, उत्तमपुरुषः, एकवचनम् – वन्दे

जीव्, लोट् लकार, म.पु., एकवचनम् – ________

वि (उप.) + ज्ञा + णिच् प्रत्ययः, लोट् लकार, प्र.पु., एकवचनम् ________

सम् (उप.) + उत् (उप.) इष् (गतौ, दिवादिगणः) लट् ल., प्र.पु., एकवचन ________

अव (उप.) + धृ + णिच् प्र., लोट् लकार, म.पु., एकवचनम्

4. प्रकृति प्रत्ययसंयोगपूर्वकं उदाहरणमनुसृत्य पदनिर्माणं कुरुत

प्रकृतिः	**प्रत्ययः**	**संयोगेन निर्मितं पदम्**
यथा – √प्रच्छ्	**तव्यत्**	**प्रष्टव्यम्**
√अश्	क्त	________
वि (उप0) + आ0 (उप0)	+ √ख्या क्त	________
वि (उप) + √ज्ञा + णिच्	+ तुमुन्	________
√पा	क्त	________
√पा (कर्मवाच्ये)	शानच्	________

5. 'क' भागे लिखितानां पदानां समक्षं 'ख' भागे लिखितेषु पदेषु उचितं पदं चित्वा विपर्यायं लिखत

ऊर्ध्वम्	–	गरिष्ठः
अणिष्ठः	–	न किमपि
इच्छामि	–	अधः
सर्वम्	–	अनवधीतम्
अवधीतम्	–	नेच्छामि

6. उदाहरणम् अनुसृत्य प्रदत्तक्रियापदानि प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

यथा – अहं स्वदेशं सेवितुम् इच्छामि।

क. ________________________ उपदिशामि।

ख. ________________________ प्रणमामि।

ग. ________________________ आज्ञापयामि।
घ. ________________________ पृच्छामि।
ङ. ________________________ विज्ञापयामि।
च. ________________________ उपदिशामि।
छ. ________________________ अश्नामि।
ज. ________________________ अवगच्छामि।

7. पाठम् आधृत्य अधोलिखितं गुरुशिष्यसंवादं पूरयत

गुरुः – मथ्यमानस्य ________ योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति। तत् ________ भवति।

शिष्यः – भगवन् ! ________ भवता ________। भूयोऽपि ________।

गुरुः – सौम्य! अश्यमानस्य ________ योऽणिमा स ऊर्ध्वः________ भवति। अवगतं न वा।

शिष्यः –________ अवगतं भगवन्।

गुरुः – वत्स ! ________ अपां योऽणिमा स एव ________ भवति । एतत्सर्वम् ________ हृदयेन।

शिष्यः – यदाज्ञापयति ________ । एष ________।

योग्यताविस्तारः

क. ग्रन्थपरिचयः

छान्दोग्योपनिषद् उपनिषद्वाङ्मयस्य एकं बहुमूल्यं रत्नम् अस्ति। इयम् उपनिषद् सामवेदीयस्य तलवकारस्य ब्राह्मणस्य भागो विद्यते। अस्या वर्णनपद्धतिः वैज्ञानिकी युक्तियुक्ता चास्ति। अस्याम् आत्मज्ञानेन सह तदुपयोगिकर्मण उपासनायाश्च सम्यग् वर्णनं वर्तते। इयम् अष्टसु अध्यायेषु विभक्ता। अस्याः षष्ठेऽध्याये 'तत्त्वमसि' इत्येतद् अधिकृत्य विस्तरेण विवेचनं विद्यते।

ख. भावविस्तारः

आरुणिः स्वपुत्रं श्वेतकेतुम् उपदिशति अन्नमशितं त्रेधा विधीयते। तस्य यः स्थविष्ठो धातुः सः पुरीषं भवति यो मध्यमः सः मांसं भवति, योऽणिष्ठः सः मनः। आपः पीतास्त्रेधा

विधीयन्ते — तासां यः स्थविष्ठो धातुः सः मूत्रं भवति, यो मध्यः सः लोहितं, योऽणिष्ठः सः प्राणः। तेजोऽशितं त्रेधा विधीयते — तस्य यः स्थविष्ठो धातुः सोऽस्थि भवति, यो मध्यमः सः मज्जा, योऽणिष्ठः सा वाक्।

अद्यते इति अन्नम्। अन्नं वै मनः। न्यायेन सत्यरक्षणेन च अर्जितम् अन्नं सात्त्विकं भवति। तद्भक्षणेन मनः सात्त्विकं भवति। दूषितभावनया अन्यायेन च अर्जितम् अन्नं राजसं तामसं वा भवति। तद्भक्षणेन च मानवस्य मनोऽपि राजसं तामसं वा भवति।

आपोमयो प्राणः। जलमेव जीवनं लोके। तैलघृतादिभक्षणात् वाक् विशदा भाषणादिकार्येषु च समर्था भवति। अतः तेजोमयी वाक्।

- *अन्नमयं हि मनः, आपोमयः प्राणः तेजोमयी वाक् षोडशकलः पुरुषः। यदि सः पञ्चदशदिनानि यावत् भोजनं न करोति, जलं च न पिबति तर्हि तस्य षोडशकलासु केवलम् एकैव कला अवशिष्टा भवति। यथा इन्धने प्रजवलिते एकोऽपि खद्योतमात्रोऽवशिष्टोऽङ्गारो न बहु दहेत् तथैव अन्नपानरहितो जनो वेदज्ञानं कर्तुं समर्थो न भवति। अतः श्वेतकेतुः यदा प्रतिदिनं भोजनं कृत्वाजलं च पीत्वा स्वपितुः समक्षम् उपस्थितोऽभवत् तदा असौ ऋग्वेदादीनां सर्वेषां ग्रन्थानां सर्वाणि विस्मृतान्यपि उत्तराणि दातुं समर्थो जातः। अतः मनोऽन्नमयं, प्राणो जलमयः, वाक् च तेजोमयी इति सर्वथा सत्यमेव।*

ग. भाषिकविस्तारः

मयट्-प्रत्यय *प्राचुर्यार्थे प्रयुज्यते।*

यथा —	शान्ति	+	मयट्	=	शान्तिमयः
	आनन्द	+	मयट्	=	आनन्दमयः
	सुख	+	मयट्	=	सुखमयः
	तेजः	+	मयट्	=	तेजोमयः

मयट् प्रत्ययस्य प्रयोगो विकारार्थेऽपि क्रियते —

यथा —	मृत्	+	मयट्	=	मृण्मयः
	स्वर्ण	+	मयट्	=	स्वर्णमयः
	लौह	+	मयट्	=	लौहमयः

जलम्

जीवयति लोकान् जलम् – पञ्चभूतान्तर्गतभूतविशेषः।

पर्यायवाचिनः – वारि, पानीयम्,उदकम्, उदम्, सलिलम्, तोयम्, नीरम्, अम्बु, अम्भस्, पयस्।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्तं हि जीवनम्।
तोयाभावे पिपासार्तः क्षणात्प्राणैर्विमुच्यते।।

ल्यप् प्रत्ययप्रयोगः

निरीक्ष्य	–	निर्	+	ईक्ष्	+	ल्यप्
आदाय	–	आ	+	दा	+	ल्यप्
विधूय	–	वि	+	धू	+	ल्यप्
अतिक्रम्य	–	अति	+	क्रम	+	ल्यप्

मनस्

	एकवचनम्	*द्विवचनम्*	*बहुवचनम्*
प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पंचमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसोः	मनस्सु
सम्बोधन	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

अनुरूप शब्दाः – अम्भस्, पयस्, यशस्, तेजस्, नभस्।

द्वादशः पाठः

जटायूरावणयुद्धम्

[प्रस्तुत पाठ्यांश आदिकवि वाल्मीकि-प्रणीत रामायण के वनकांड से उद्धृत किया गया है जिसमें जटायु-रावण-युद्ध का वर्णन है। सीता का करुण विलाप सुनकर पक्षिश्रेष्ठ जटायु उनकी रक्षा के लिये दौड़ पड़ते हैं। वे रावण को परदाराभिमर्शनरूप निन्द्य दुष्कर्म से विरत होने का उपदेश देते हैं, परंतु रावण की मनोवृत्ति को अपरिवर्तित देख, उस पर भयावह आक्रमण भी करते हैं। तीखे नखों तथा पञ्जों से महाबली जटायु रावण के शरीर में अनेक घाव कर देते हैं तथा उसके विशाल धनुष को भी चरणों के प्रहार से खंडित कर देते हैं। टूटे धनुष वाला, मारे गये अश्वों तथा सारथी वाला रावण विरथ होकर, पृथ्वी पर गिर पड़ता है। कुछ क्षणों के अनन्तर ही क्रोधांध रावण जटायु पर प्राणघातक प्रहार करता है परंतु पक्षिश्रेष्ठ जटायु भी उस पर चञ्चु-प्रहार करके, उसकी बायें भाग की दशों भुजाओं को क्षत-विक्षत कर देते हैं।]

सा तदा करुणा वाचो विलपन्ती सुदुःखिता।
वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्शायतलोचना ॥1॥

जटायो पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत् ।
अनेन राक्षसेन्द्रेण करुणं पापकर्मणा ॥2॥

तं शब्दमवसुप्तस्तु जटायुरथ शुश्रुवे ।
निरीक्ष्य रावणं क्षिप्रं वैदेहीं च ददर्श सः ॥3॥

ततः पर्वतशृङ्गाभस्तीक्ष्णतुण्डः खगोत्तमः।
वनस्पतिगतः श्रीमान्व्याजहार शुभां गिरम् ॥4॥
निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात्।
न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥5॥
वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी।
न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि ॥6॥
तस्य तीक्ष्णनखाभ्यां तु चरणाभ्यां महाबलः।
चकार बहुधा गात्रे व्रणान्पतगसत्तमः ॥7॥
ततोऽस्य सशरं चापं मुक्तामणिविभूषितम्।
चरणाभ्यां महातेजा बभञ्जास्य महद्धनुः ॥8॥
स भग्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः।
अङ्केनादाय वैदेहीं पपात भुवि रावणः ॥9॥
संपरिष्वज्य वैदेहीं वामेनाङ्केन रावणः।
तलेनाभिजघानाशु जटायुं क्रोधमूर्च्छितः ॥10॥
जटायुस्तमतिक्रम्य तुण्डेनास्य खगाधिपः।
वामबाहून्दश तदा व्यपाहरदरिन्दमः ॥11॥

शब्दार्थाः

ह्रियमाणाम्	–	*नीयमानाम्*	–	ले जाई जाती हुई, अपहरण की जाती हुई
राक्षसेन्द्रेण	–	*दानवपतिना*	–	राक्षसों के राजा द्वारा
परदाराभिमर्शनात्	–	*परस्त्रीदूषणात्*	–	पराई स्त्री के दोष से
विगर्हयेत्	–	*निन्द्यात्*	–	निन्दा करनी चाहिए
धन्वी	–	*धनुर्धरः*	–	धनुर्धर
कवची	–	*कवच धारी*	–	कवच को धारण किए हुए
शरी	–	*बाणधरः*	–	बाण को लिए हुए

वैदेहीम्	–	*सीताम्*	–	सीता को
व्रणान्	–	*प्रहारजनित स्फोटान्*	–	प्रहार (चोट) से होने वाले घावों को
बभञ्ज	–	*भग्नं कृतवान्*	–	तोड़ दिया
पतगेश्वरः	–	*जटायुः*	–	जटायु (पक्षिराज)
विधूय	–	*अपसार्य*	–	दूर हटाकर।
भग्नधन्वा	–	*भग्नं, धनुः यस्य सः*	–	टूटे हुए धनुष वाला।
हताश्वः	–	*हताः अश्वाः यस्य सः*	–	मारे गए घोड़ों वाला।
आदाय	–	*गृहीत्वा*	–	लेकर
अभिजघान्	–	*हतवान्*	–	मार डाला।
आशु	–	*शीघ्रम्*	–	शीघ्र ही।
तुण्डेन	–	*चञ्च्वा, मुखेन*	–	चोंच के द्वारा
खगाधिपः	–	*पक्षिराजः*	–	पक्षियों का राजा
अरिन्दमः	–	*शत्रुदमनः, शत्रुनाशकः*	–	शत्रुओं को नष्ट करने वाला

अस्माभिः किम् अधीतम् ?

- रावणेन हृता सीता जटायुं सहायतार्थम् आह्वयति, सीतावचनं श्रुत्वा जटायुः तत्र गच्छति रावणं च परदाराभिमर्शनात् मतिं निवर्तयितुं कथयति।
- यदा रावणः जटायोः वार्तां न स्वीकरोति तदा युद्धे जटायुः रावणस्य शरीरे स्वनखाभ्याम्, चरणाभ्याम् च व्रणान् अकरोत्। रावणस्य सशरं चापं महद्धनुः च स्वपक्षाभ्यां बभञ्ज।
- क्रोधवशात् रावणः वैदेहीं संगृह्य एव जटायुं मारयितुम् उद्यतः अभवत्।
- जटायुः रावणस्य दश वामबाहून् व्यपाहरत्।

अभ्यासः

मौखिकः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन वदत

क. "जटायो ! पश्य" इति का वदति?
ख. वैदेही शब्दः कस्मै प्रयुक्तः?
ग. तीक्ष्णनखाभ्यां व्रणान् कः अकरोत्?
घ. पतगेश्वरः रावणस्य कीदृशं चापं सशरं बभञ्ज?
ङ. हताश्वो हतसारथिः रावणः कुत्र अपतत्?

2. कः कम् अवदत्

	कः	कम्
यथा — पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत्	**सीता**	**जटायुम्**
क. वृद्धोऽहम् त्वं युवा	______	______
ख. युध्यस्व यदि शूरोऽसि	______	______
ग. न तत्समाचरेद्धीरो	______	______
घ. न चाप्यादाय कुशली वैदेहीं मे गमिष्यसि	______	______

लिखितः

1. तत्पदं रेखाङ्कितम् कुरुत

क. यत् नपुंसकलिङ्गे नास्ति —
पापकर्मणा, चरणाभ्याम्, पक्षाभ्याम्

ख. यत् जटायोः विशेषणम् नास्ति —
वृद्धः, सरथः

ग. यत् रावणस्य विशेषणम् नास्ति —
युवा, कवची, धन्वी, तीक्ष्णनखः

2. श्लोकांशान् मेलयत

क	ख
न तत्समाचरेद्धीरो	करुणं पापकर्मणा

चकार बहुधा गात्रे	व्याजहार शुभां गिरम्
भग्नधन्वा विरथो	बभञ्ज पतगेश्वरः
वनस्पतिगतः श्रीमान्	हताश्वो हतसारथिः
चरणाभ्यां महातेजा	यत्परोऽस्य विगर्हयेत्।
अनेन राक्षसेन्द्रेण	व्रणान् पतगसत्तमः

3. जटायुरावणयुद्धस्य वृत्तान्तम् अत्र एकेन बालकेन अव्यवस्थितरूपेण लिखितम्। एतद् व्यवस्थितं कुरुत

क. जटायुः रावणस्य गात्रे तीक्ष्णनखाभ्याम् व्रणान् कृतवान्।

ख. भग्नधन्वा हतसारथिः रावणः भूमौ अपतत्।

ग. जटायुः रावणं कथयति – वैदेहीम् आदाय कुशली न गमिष्यसि।

घ. सीता जटायुम् साहाय्यार्थम् आह्वयति।

4. रावणस्य जटायोश्च विशेषणानि सम्मिलितरूपेण एकेन छात्रेण लिखितानि तानि पृथक्-पृथक् कृत्वा लिखत

युवा, सशरः, वृद्धः, हताश्वः, महाबलः, पतगसत्तमः, भग्नधन्वा, महागृध्रः, खगाधिपः, क्रोधमूर्च्छितः, पतगेश्वरः, सरथः, कवची, शरी

	रावणः	**जटायुः**
यथा –	**युवा**	**वृद्धः**
	______	______
	______	______
	______	______
	______	______
	______	______
	______	______
	______	______
	______	______

5. संधिम्/संधिविच्छेदं कुरुत

क. **यथा – च** + **आदाय** = **चादाय**

	हत	+	अश्वः	=	______
	______	+	______	=	बभञ्जास्य
	______	+	______	=	अङ्केनादाय
	तुण्डेन	+	अस्य	=	______
	खग	+	______	=	खगाधिपः
ख.	वृद्धः	+	अहम्	=	वृद्धोऽहम्
	शूरः	+	असि	=	______
	______	+	______	=	ततोऽस्य
	सः	+	______	=	सोऽच्छिन्नत्
	______	+	______	=	सोऽवदत्
	वीरः	+	______	=	वीरोऽसि

6. 'क' स्तम्भे लिखितानां पदानां पर्यायाः 'ख' स्तम्भे लिखिताः। तान् मेलयत्

क	*ख*
कवची	अपतत्
आशु	पक्षिश्रेष्ठः
विरथः	पृथिव्याम्
पपात	कवचधारी
भुवि	शीघ्रम्
पतगसत्तमः	रथविहीनः

7. अधोदत्तायाः मञ्जूषायाः समुचितविपर्यायान् चित्वा पदानां समक्षं लिखत

मन्दम्, पुण्यकर्मणा, हसन्ती, युवा, अनार्य,
अनतिक्रम्य, प्रदाय, देवेन्द्रेण, प्रशंसेत्, दक्षिणेन

पदानि	विपर्यायाः
क. विलपन्ती	______
ख. आर्य	______
ग. राक्षसेन्द्रेण	______

घ. पापकर्मणा ________
ङ. क्षिप्रम् ________
च. विगर्हयेत् ________
छ. वृद्धः ________
ज. आदाय ________
झ. वामेन ________
ट. अतिक्रम्य ________

- **अधोलिखितविशेषणपदानि प्रयुज्य संस्कृतवाक्यानि रचयत**

क. ________ (तीक्ष्णतुण्डः)
ख. ________ (शुभाम्)
ग. ________ (कवची)
घ. ________ (खगाधिपः)
ङ. ________ (हतसारथिः)
च. ________ (वामेन)
छ. ________ (आयतलोचना)

योग्यताविस्तारः

क. कविपरिचयः

महर्षि वाल्मीकिः आदिकाव्यस्य रामायणस्य रचयिता। एकदा तमसातीरं गतः वाल्मीकिः एकेन व्याधेन हतं क्रौञ्चं दृष्ट्वा द्रवितचित्तो जातः। सहसा तन्मुखात् या पद्यमयी वाक् निर्गता सैव रामायणस्य बीजम्। तत् पद्यमस्ति —

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

एषः शोकः एव श्लोकरूपेण परिणतः जातः। एतद्विषये कालिदासः कथयति —

महर्षेः 'शोकः श्लोकत्वमागतः'

ख. ग्रन्थपरिचयः

रामायणं महर्षेः वाल्मीकेः प्रथमा अनुपमा च काव्यकृतिः। अस्यां कविना दशरथनन्दनस्य श्रीरामस्य समग्रं चरितम् उपवर्णितम्। रामायणे सप्तकाण्डानि चतुर्विंशतिसहस्रं च श्लोकाः सन्ति। अत्र अनुष्टुप् छन्दसः प्राधान्यं विद्यते।

ग. भावविस्तारः

जटायुः – अरुणस्य सम्पाती जटायुश्च द्वौ पुत्रौ आस्ताम्। जटायुः पञ्चवटीकाननस्य पक्षिणां राजा आसीत्। एकस्मिन् वृक्षे स्थित्वा अयं बुद्धिकौशलेन स्वपराक्रमेण च शासनं करोति स्म। यदा रावणः छलेन सीताम् अपाहरत्, तदा तस्याः विलापं श्रुत्वा जटायुः तस्याः रक्षणार्थं रावणेन सह युद्धमकरोत् वीरगतिं च प्राप्तवान्। एवं धर्मरक्षकत्वात् जटायुः भारतीयसंस्कृतेः महानायकः मन्यते।

घ. जटायोः सीताविषयकसूचनाप्रदायकं वचनम् रामं प्रति

यामोषधीमिवायुष्मन्नन्वेषसि महावने।
सा च देवी मम प्राणा रावणेनोभयं हृतम्॥

ङ. भाषिकविस्तारः

वाक्यप्रयोगाः

गिरम्	–	छात्रः मधुरां गिराम् उवाच।
खगः	–	खगः आकाशे शनैः शनैः उत्पतति।
पतगेश्वरः	–	पक्षिराजः जटायुः पतगेश्वरः अपि कथ्यते।
कवची	–	कवची नरः शत्रुप्रहाराद् रक्षितः भवति।
शरी	–	शरी रावणः निःशस्त्रेण जटायुना आक्रान्तः।
विधूय	–	वीरः शत्रुप्रहारान् विधूय अग्रे अगच्छत्।
व्रणान्	–	चिकित्सकः औषधेन व्रणान् विरोपितान् अकरोत्।
हतसारथिः	–	हतसारथिः रावणः कोपम् उपागतः।
पपात	–	वृक्षः कुठारेण छिन्नः सन् भूमौ पपात।
तुण्डेन	–	शुकाः तुण्डेन तण्डुलान् खादन्ति।
व्यपाहरत्	–	जटायुः रावणस्य बाहून् व्यपाहरत्।
अभिजघान	–	रामः वने अनेकान् राक्षसान् अभिजघान।
आशु	–	स्वकार्यम् आशु सम्पादय।

च. स्त्रीप्रत्ययाः

- करुणा, दुःखिता, शुभा, नीचा, रक्षणीया
- विलपन्ती, यशस्विनी, वैदेही, कमलपत्राक्षी
- युवतिः

उपरिदत्तपदेषु **प्रथमपंक्तौ** टाप् प्रत्ययः **द्वितीयपंक्तौ** ङीप् प्रत्ययः **तृतीयपंक्तौ** च ति प्रत्ययः।
पुल्लिङ्गशब्देभ्यः स्त्रीलिङ्गपदनिर्माणे टाप्-ङीप्-ति-प्रत्ययाः प्रयुज्यन्ते।
एतेषु टाप् प्रत्ययस्य आ अवशिष्यते ङीप् प्रत्ययस्य च ई अवशिष्यते।

उदाहरणानि

	पुल्लिङ्गम्				**स्त्रीलिङ्गम्**
	करुण	+	टाप्	=	करुणा
	दुःखित	+	टाप्	=	दुःखिता
	शुभ	+	टाप्	=	शुभा
	नीच	+	टाप्	=	नीचा
	रक्षणीय	+	टाप्	=	रक्षणीया
	प्रथम	+	टाप्	=	प्रथमा
	मूषक	+	टाप्	=	मूषिका
	बालक	+	टाप्	=	बालिका
	अश्व	+	टाप्	=	अश्वा
	वत्स	+	टाप्	=	वत्सा
	वर्धमान	+	टाप्	=	वर्धमाना
▪	विलपन्	+	ङीप्	=	विलपन्ती
	हसन्	+	ङीप्	=	हसन्ती
	यशस्विन्	+	ङीप्	=	यशस्विनी
	मानिन्	+	ङीप्	=	मानिनी
	वैदेहः	+	ङीप्	=	वैदेही
	मानुषः	+	ङीप्	=	मानुषी
	कमलपत्राक्षः	+	ङीप्	=	कमलपत्राक्षी
	राजन्	+	ङीप्	=	राज्ञी
	विद्वस्	+	ङीप्	=	विदुषी
	श्रीमन्	+	ङीप्	=	श्रीमती
▪	युवन्	+	ति	=	युवतिः

शब्दकोशः

अच्छिनत् – छिद् + लङ् प्र. पु. एक. व. अकर्तयत्। काटा, काट डाला।

अजातशिशुः – (अजातश्चासौ शिशुः,कर्मधारय पु.प्र.ए.व.) अनुत्पन्नः जातकः। उत्पन्न न हुआ बालक।

अट्टम् – अट्ट. पु. द्वि. ए. व. अट्टालिकाम्। अटारी।

अतिक्रम्य – अति + क्रम् + ल्यप्। उल्लंघ्य। लांघ कर।

अद्रोहः – न द्रोहः। प्र. ए. व.। शत्रुताया अभावः, शत्रुता रहित।

अधिरोढुम् – अधि + रुह् + तुमुन्, अव्यय, उपरिगन्तुम्, अधिरोहणं कर्तुम्। चढ़ने के लिए।

अधीतवान् – अधि + इङ् + क्तवतु, पु. प्र. ए. व., अध्ययनं कृतवान्। पढ़ा।

अनन्तरूप – अनन्तानि रूपाणि यस्य सः , बहुव्री., अनेक रूपों वाले, असंख्य रूपों वाले।

अनिकेतः – नास्ति निकेतः यस्य सः। बहुव्रीहि प्र. ए. व.,· वासस्थान रहितः , बेघर।

अनुद्धताः – न उद्धता। नञ् तत्पु. पु. प्र. बहुव्री.,शालीनाः। शालीन।

अनुष्ठिते – अनु + स्था + क्त, विशे. सप्तमी ए. व.। सम्पादिते। करने पर।

अनुद्वेगकरम् – न उद्वेगकरम्। नञ् तत्पु. प्र. एक. व.। अक्षोभकरम्, व्याकुल न करने वाले, प्रसन्न करने वाला।

अन्तकः – अन्त + क, पु. प्र. ए. व., संहर्त्ता, यमराज।

अपायः – अप + इ + अच् पु. प्र. ए. व. विघातकतत्वम्। विनाशक, विनाश।

अपेयम् – न पेयम्, नञ् तत्पु. नपुं. प्र. ए. व.। पातुम् अयोग्यम्। न पीने योग्य।

अभिलक्ष्य – अभि + लक्ष् +ल्यप्, अव्य.। विचार्य। देखकर, सोचकर

अभिजातस्य – अभि + जन् + क्त, षष्ठी, एक. व., उत्तमकुले जातस्य, उत्तम कुल में पैदा होने वाले का।

अभिमर्शनात् – अभि + मृश् + ल्युट्, पञ्च. एक. व.। संस्पर्शात्। छूने से, स्पर्श से।

अभ्युदये – अभि + उत् + इण् + अच्, पु. सप्त. ए. व.। उत्थाने। उन्नति होने पर।

अभूवम् – भू, लङ् उ. पु. ए. व., अभवम् – मैं हुआ।

अरिंदमः – अरि + दम् + खच् (मुम् का आगम) शत्रुहन्ता। शत्रुओं को नष्ट करने वाला।

अर्थितः – अर्थ् + क्त, विशे. प्र. ए. व. याचितः। मांगा।

अवसादयेत् – अव + सद् + णिच्, विधिलिङ् प्र. पु. एक. व., खेदयेत्। व्याकुल करे, दुःखी करे।

अवाप्तुम् – अव + आप् + तुमुन्, अव्य.। प्राप्तुम्। पाने के लिए।

अवाप्स्यसि – अव् + आप् + लृट् म. पु. एक. व.। प्राप्स्यसि। प्राप्त करोगे।

आकर्ण्य – आ + कर्ण् + ल्यप्, अव्य.। श्रुत्वा। सुनकर।

आख्याति – आ + ख्या, लट् प्र. पु. ए. व.। कथयति। कहता है।

आञ्जनेयम् – अञ्जना + ढक्, पु. द्वि. ए. व., अञ्जनायाः पुत्रं हनुमन्तम् इत्यर्थः। अञ्जनिपुत्र हनुमान् को।

आत्मना – आत्मन् + पु. तृ. एक. व.। स्वयमेव। स्वयम्।

आदाय – आ + दा + ल्यप्। गृहीत्वा। लेकर

आदिदेवः – पु. प्र. ए. व., प्रथमः देवः । पहला देवता।

आरम्भगुर्वी – आरम्भे गुर्वी, सप्त. तत्पु. स्त्री. प्र. ए. व.। आरम्भकाले महती। आरंभकाल में बड़ी।

आलापः – आ + लप् + घञ् , पु. प्र. ए. व., वार्तालापः, बातचीत।

उच्यते – ब्रू-वच् + यक्, प्र. पु. ए. व., कर्मवाच्य, कथ्यते। कहा जाता है।

उद्भ्रान्तः – उद् + भ्रम् + क्त, विशे., पु. प्र. ए. व.। पथभ्रष्टः। भ्रमित।

उद्धृत्य – उत् + हृ + ल्यप्। उत्थाप्य। उठाकर।

उद्धरेत् – उत् + हृ, विधि. प्र. पु. एक. व.। उत्थापयेत्। उद्धार करे, उठाए।

उन्मीलितम् – उत् + मील् + क्त, विशे. नपुं. प्र. ए. व., उन्मेषितम् खुला हुआ (आँख)

उपायः – उप + इ + अच् पुं. प्र. ए. व., साधनम्। साधन, तरीका

उपैति – उप + इण्, लट्, प्र. पु. ए. व., प्राप्नोति, समीपं गच्छति। प्राप्त करता है, समीप जाता है।

एधेते – एध्, आत्म., लट्, प्र. पु. द्वि. व.। वर्धेते। दो बढ़ते हैं।

कल्लोलोच्छलन-ध्वनिः – कल्लोलानाम् उच्छलनं कल्लोलोच्छलनं तस्य ध्वनिः, ष. तत्पु., पुं. प्र. ए. व. ध्वनिः। तरङ्गोच्छलनस्य शब्दः। लहरों की आवाज।

कवची – कवचः अस्ति अस्य इति, कवचधारी। कवच पहना हुआ व्यक्ति।

कारणं कारणानाम् – हेतूनां ये हेतवः तेषामपि हेतुः, मूलभूतो हेतुः इत्यर्थः। कारणों का कारण।

कुक्षौ – कुक्षि, पु. स. ए. व.। गर्भे। गर्भ में।

कुटुम्बिभिः – कुटुम्बिन्, पु. तृ. ब. व.। परिवारजनैः। परिवार के लोगों द्वारा।

कुलक्रमादागत – कुलस्य क्रमः कुलक्रमः , कुलक्रमात् आगतः कुलक्रमादागतः, विशे,। वंशपरम्परातः सम्प्राप्तः। वंशपरम्परा से प्राप्त।

कुर्वाणम् – कृ + शानच्, पुं. द्वि. ए. व.। कुर्वन्तम्। काम करते हुए व्यक्ति को।

क्लेदयन्ति – क्लिद् + णिच् , लट्, प्र. पु. ब. व.। खेदयन्ति। गीला करते हैं, पसीने से नहाते हैं।

क्लेश्यमानः – क्लिश् + णिच् + यक् + शानच्, पुं. प्र. ए.व.। सन्ताप्यमानः। कष्ट उठाता हुआ।

खगाधिपः – खगानाम् अधिपः, ष. तत्पु.। पक्षिराजः। पक्षियों का राजा।

खरः – खरो नाम राक्षसः, दूषणस्य भ्राता। दूषण का भाई, खर नामक राक्षस।

खलसज्जनानाम् – खलाः च सज्जनाः च खलज्जनाः तेषाम्, पुं. ष. ब. व.। दुष्टानां सत्पुरुषाणां च। दुर्जनों एवं सज्जनों का।

गच्छतः – गम् + शतृ, वि. पुं., ष. ए. व.। चलतः। जाते हुए का।

गतस्पृहाः – गता स्पृहा येभ्यः ते, बहुव्री., पुं. प्र. ब. व. निष्कामाः, इच्छा रहिताः। ऐसे व्यक्ति जिनकी इच्छाएं समाप्त हो गई हों।

गमिष्यसि – गम् + लृट्, म. पु. ए. व.। यास्यसि। जाओगे।

गर्हितः – गर्ह् + क्त, वि. पु. प्र. ए. व.। निन्दितः। निंदनीय।

गिरिनिर्झराः – गिरीणां निर्झराः, ष. तत्पु. पुं. प्र. ब. व., पर्वतानां प्रपाताः। पहाड़ी झरने।

गुह्यम् – गुह् + यत्, नपुं., प्र. ए. व.। गोपनीयम्, रहस्यम्। गोपनीय।

गोपालकाः – गवां पालकाः, ष. तत्पु., पुं. प्र. ब. व. गोचारकाः। गौ चराने वाले, गौ का पालन करने वाले।

चन्द्रोज्ज्वलाः – चन्द्र इव उज्ज्वलाः, कर्मधारय, पुं. प्र. ब. व.। चन्द्रवत् शुभ्राः। चन्द्रमा के समान सफेद।

छिन्दन्ति – छिद् + लट्, प्र. पु. ब. व.। विदारयन्ति। छिन्न भिन्न कर काटना।

जनजागरणाय – जनानां जागरणाय, ष. तत्पु., नपुं. च. ए. व.। जनानां प्रबोधनाय। लोगों में जागृति पैदा करने के लिए।

जन्मसिद्धः – जन्मना सिद्धः, तृ. तत्पु., विशे., पुं. प्र. ए. व.,जन्मतः एव प्राप्तः। जन्म से प्राप्त।

जयाजयौ – जयश्च अजयश्च तौ जयाजयौ। द्वन्द्व समास, विजयपराजयौ। जीत और हार।

जलप्लावनैः – जलस्य प्लावनैः , ष. तत्पु., नपुं. तृ. ब. व.। जलौघैः। बाढ़।

जलोच्छलनध्वनिः–जलस्य उच्छलनं जलोच्छलनं तस्य ध्वनिः, ष. तत्पु., पुं. प्र. ए. व.। जलोर्ध्वगते शब्दः। पानी के उछाल की आवाज।

जहाति – हा त्यागे, लट्, प्र. पु. ए. व.। त्यजति। छोड़ता है।

ज्ञातिजनैः – ज्ञातेः जनैः, ष. तत्पु. स., पुं. तृ. ब. व.। बन्धुबान्धवैः। जाति-बिरादरी वाले, रिश्तेदारों द्वारा।

ततम् – तन् + क्त, नपुं. प्र. ए. व.। विस्तृतम्, व्याप्तम्। फैलाव।

तथाविधम् – तथा विधा यस्य सः तम्, बहुव्री. स., पुं. द्वि. ए.व. तादृशम्। उस तरह, उस प्रकार।

तपश्चर्यया – तपसः चर्या तया, ष. तत्पु. स्त्री. तृ. ए. व., तपश्चरणेन। तपस्या करने के द्वारा।

तपस्यारतः – तपस्यायां रतः, सप्त. तत्पु., पु. प्र. ए. व.। तपश्चरन्। तपस्या में लीन।

तिष्ठ – स्था + लोट् , म. पु. ए. व.। ठहरो।

तुण्डेन – तुण्ड, तृ. ए. व.। चञ्च्वा। चोंच द्वारा।

दग्ध्वा – दह् + क्त्वा , अव्य., भर्ज्जनं कृत्वा। जलाकर।

दीयते – दा + यक्, प्र. पु. ए. व.। प्रदीयते। दिया जाता है।

दुःखहा – दुःखं हन्ति इति। दुःख + हन् + क्विप्, प्र. ए. व., दुःखनाशकः। दुःख नाश करने वाला।

दुर्बुद्धिः – दुष्टा बुद्धिर्यस्य सः, बहुव्री. पुं. प्र. ए. व.। दुर्मतिः। दुष्ट बुद्धि वाला।

दूरविलम्बिनः – दूरं विलम्बिनः, पुं. प्र. ब. व.। नीचैः आगता। दूर लटके हुए। दूर ऊपर से नीचे आने वाले

देवायतनम् – देवानाम् आयतनम्, ष. तत्पु., नपुं. प्र. ए. व.। देवालयः, मन्दिरम्, मंदिर, देवता का घर

देशभक्तः – देशस्य भक्तः, ष. तत्पु., पुं. प्र. ए. व.। राष्ट्रप्रेमयुक्तः। देशभक्त।

धन्वी – धन्वं अस्ति अस्य इति। धन्व + इनि। धनुर्धरः। धनुष धारण करने वाला।

धीवरैः – पुं. तृ. ब. व.। मत्स्यजीविभिः। मछुआरों के द्वारा

धृतिः – धृ + क्तिन्, प्र. ए. व.। धैर्यम्। धैर्य।

नगेन्द्रः – नगानाम् इन्द्रः, ष. तत्पु., पुं. प्र. ए. व.। पर्वतराजः। पर्वतों का राजा।

नवाम्बुभिः – नवानि अम्बूनि नवाम्बूनि, तैः, कर्मधारय, नपुं. तृ. ब. व.। नूतनजलैः। ताजा जल से।

निक्षिप्तः – नि + क्षिप् + क्त, विशे. पुं. प्र. ए. व., न्यस्तः। फेंका हुआ, रखा हुआ।

निर्गन्धाः — निर्गतः गन्धः येभ्यः ते, बहुव्री. विशे., पुं. प्र. ए. व. गन्धरहिताः। गन्ध से रहित। बिना खुशबू वाले।

निगूहति — नि + गुह्, लट्, प्र. पु. ए. व.। गोपयति। छिपाता है।

निःश्वस्य — निः + श्वस् + ल्यप्, अव्य., श्वासं गृहीत्वा। लम्बी साँस लेकर।

निवर्तय — नि + वृत्, लोट्, म. पु. ए. व.। निवृत्तां कुरु। वापस करना, लौटाना।

नीयते — नी + यक्, आत्मने, लट् प्र. पु. ए. व.। उह्यते। ले जाया जाता है।

नीयमानम् — नी + यक् + शानच्, विशे., पु, द्वि. ए. व.। उह्यमानम्। ले जाते हुए को।

पक्त्वा — पच् + क्त्वा, अव्य.। पाकं कृत्वा। पकाकर।

पक्षबलेन — पक्षाणां बलेन, ष. तत्पु. नपुं. तृ. ए. व., पक्षशक्त्या। पंखों की ताकत से।

पतगसत्तमः — पतगेषु सत्तमः। सप्त. तत्पु.। पक्षिश्रेष्ठः। पक्षियों में श्रेष्ठ।

पपात — पत् + लिट्, प्र. पु. ए. व.। पतितः। गिरा था।

पयोमुखम् — पयः मुखे यस्य तम्, बहुव्री., विशे., नपुं. द्वि. ए.व. मुखे दुग्धयुक्तम्। दूध से युक्त मुँह वाले।

पराधीनैः — परेषाम् अधीनैः, ष. तत्पु. पुं. तृ. ब. व.। परतन्त्रैः। दूसरे के अधीन व्यक्तियों द्वारा।

परोपकारैकाधियः— परेषाम् उपकारे एका धीर्येषाम् ते, तत्पु. विशे. प्र. बहु. व.। परहितबुद्धयः। दूसरों का भला चाहने वाले।

पारतन्त्र्यम् — परतन्त्र + ष्यञ् नपुं, प्र. ए. व.। पराधीनता। परतंत्र।

पारतन्त्र्यदुःखम् — पारतन्त्र्यस्य दुःखम्, ष. तत्पु. नपुं. द्वि. ए. व.। पराधीनतायाः क्लेशम्। पराधीनता का कष्ट।

प्रकटीकरोति — प्रकट + च्वि + करोति, लट्, प्र. पु. ए. व. अप्रकटं प्रकटं करोति। समक्ष प्रकट करता है।

प्रकृतिसिद्धम् – प्रकृत्या सिद्धम्, तृ. तत्पु., नपुं, प्र. ए. व.। स्वभावेन एव सिद्धम्। स्वाभाविक गुण।

प्रखरबुद्धिः – प्रखरा बुद्धिर्यस्य, सः बहुव्री., पुं. प्र. ए. व., तीव्र बुद्धिः। तीक्ष्ण बुद्धिवाला।

प्रथितम् – प्रथ् + क्त, विशे., नपुं. प्र. ए. व.। प्रसृतम्। प्रसिद्ध।

प्राणिति – प्र. + अन्, लट्, प्र. पु. ए. व.। श्वसिति। साँस लेता है।

पितृचरणैः – पितुः चरणैः , ष. तत्पु. पु. तृ. बहु. व.,पितृपादैः। पिता द्वारा।

प्रीणयन्तः – प्रीण + णिच् + शतृ, पुं. प्र. बहु. व.। तर्पयन्तः। प्रसन्न करते हुए।

पुण्यपीयूषपूर्णाः– पुण्यपीयूषम्, तेन पूर्णाः , तृ. तत्पु.,पुं. प्र. बहु.व.,पुण्यामृतेन सहिताः। पुण्यरूपी अमृत से पूर्ण।

पुराणः – विशे., पुं. प्र. ए. व., सनातनः, पुरातनः। प्राचीन, पुराना

पुष्णाति – पुष्, लट्, प्र. पु. ए. व.। पोषणं करोति। पोषण करता है।

फलोद्गमैः – फलानाम् उद्गमैः, ष. तत्पु. पुं. तृ. बहु. व.। फलानाम् उत्पत्तिभिः। फलों के आने से।

बभञ्ज – भंञ्ज् + लिट्, प्र. पु. ए. व.। भग्नं चकार। तोड़ा।

बाहुल्येन – बहुल + ष्यञ् , नपुं. तृ. ए. व.। प्राचुर्येण। अधिकता से, प्रचुर मात्रा के कारण।

भग्नधन्वा – भग्नं धनुः यस्य, बहुव्री. स.। नष्टधन्वा। टूटे हुए धनुष वाला।

भ्रान्तः – भ्रम् + क्त, विशे., पुं. प्र. ए. व. भ्रमयुक्तः। भ्रमित बुद्धि वाला व्यक्ति।

भुवि – भू-सप्त. ए. व.। पृथिव्याम्। पृथ्वी पर, भूमि में।

(भूमौ)शयिष्यसे– शीङ् + लृट्, म. पु., ए. व.। पृथिव्यां पतिष्यसि। जमीन पर सोओगे, गिरोगे।

मन्तव्यः – मन् + तव्यत्, विशे., पुं., प्र. ए. व.। स्वीकरणीयः। विचार, मत।

मूर्धजाः – मूर्धन् + जन् + ड, मूर्ध्नि जायन्ते इति मूर्धजाः। पुं. प्र. बहु. व.। केशाः। सिर के बाल।

यन्त्रागाराणाम् – यन्त्राणाम् आगाराणि तेषां, ष. तत्पु., नपुं., ष. बहु. व.। यन्त्रालयानाम्। यन्त्रों के घरों का।

युक्तस्वप्नाव बोधस्य – स्वप्नश्च अववोधश्च – स्वप्नावोधौ। युक्तौ स्वप्नावोधौ यस्य,तस्य। बहुव्री. स.। नियमितशयनजागरणस्य। जिसकी नींद एवं जागरण नियमित हो।

युक्तचेष्टस्य – युक्ताश्चेष्टा यस्य, तस्य। बहुव्री. स.। ष. ए. व.। नियमितक्रियस्य। जिसकी क्रियाएं नियमित हों।

युक्ताहार – युक्तः आहारो विहारश्च यस्य, तस्य। बहुव्री. स.। षष्ठी. ए. **विहारस्य** व.। नियमितक्रियाकलापस्य। ऐसे व्यक्ति का जिसका आहार विहार संतुलित हो।

युज्यस्व – युज् + लोट् , म. पु. ए. व.। प्रवृत्तो भव। तुम तैयार रहो।

युध्यस्व – युध् + लोट् , म. पु. ए. व.। युद्धं कुरु। युद्ध करो।

रामस्यार्थे – रामस्य कृते। राम के लिए।

रुणत्सि – रुध्, लट्–, म. पु. ए. व.। निवारयसि। रोकते हो।

रौद्रकर्मणा – रौद्रं कर्म यस्य स रौद्रकर्म, तेन रौद्रकर्मणा, तृ. ए.व.। घोरकृत्येन। भयंकर कर्म द्वारा।

लाभालाभौ – लाभश्च अलाभश्च तौ लाभालाभौ। द्व.. स.। लाभ एवं हानि।

लोकमङ्गला- शंसिनः – लोकस्य मङ्गलं लोकमङ्गलम्, तस्य आशंसिनः,ष. तत्पु., पुं. प्र. बहु. व.। समाजकल्याणकामाः। समाज का भला चाहने वाले।

वञ्चनम् – वञ्च् + ल्युट्, नपुं. प्र. ए. व.। प्रवञ्चना, ठगी।

व्रणान् – व्रण-द्वि. ब. व., क्षतानि। घाव।

वात्याचक्रैः – वात्यानां चक्रैः , ष. तत्पु.,नपुं. तृ. ब. व.। वातचक्रैः। झंझावात, अन्धड़।

वाङ्मयम्(तपः)– वाक् + मयट्, नपुं. प्र. ए. व.। वाण्याः तपः। वाणी का तप (संयम)

विगर्हयेत् – वि + गर्ह्, विधिलिङ्, प्र. पु. ए. व.। निन्देत। निंदा करे।

विदधत् – वि + धा + शतृ, विशे.। कुर्वतः। करते हुए।

विभक्ते – वि + भज् + क्त, विशे. पुं. स. ए. व.। विभाग युक्ते। विभाजित होने पर।

विमृश्य – वि + मृश् + ल्यप्, अव्य.। विचार्य, विचार कर।

विरथः – विगतो रथो यस्य। बहुव्री. स.। रथविहीनः। रथ से रहित।

व्यपाहरत् – वि + अप् + आ + हृ। लङ् प्र. पु. ए. व.। उत्खातवान्। दूर करना, हरण करना।

व्यापादयितव्या – वि + आ + पद् + णिच् + तव्यत्, विशे., पुं. प्र.बहु. व.। मारयितव्याः। मारने योग्य व्यक्ति

वीचिवत् – वीचि + वत्। तरङ्गवत्। लहरों से युक्त, लहरों की तरह

वेत्ता – विद् + तृच्, विशे. पुं. प्र. ए. व.। ज्ञाता-जानकार।

वेद्यम् – विद् + यत्, विशे. नपुं. प्र. ए. व.। ज्ञातुं योग्यम्। जानने योग्य।

वैदेहीम् – विदेहस्य अपत्यं, स्त्री. वैदेही, तां वैदेहीम्, द्वि. ए. व.,सीताम्। सीता को।

वैदुष्यम् – विद्वस् + ष्यञ्, नपुं. द्वि. ए. व.। पाण्डित्यम्। विद्वत्ता।

वृक्षकर्तनात् – वृक्षाणां कर्तनं वृक्षकर्तनम् तस्मात्। ष. तत्पु. नपुं. प्र. ए. व.। वृक्षाणाम् उच्छेदात्। वृक्षों के कटने से।

वृत्तिः – वृत् + क्तिन्, स्त्री. प्र. ए. व.। जीविका ,जीवन का साधन

शरी – शरः अस्ति, अस्य इति। शरयुक्तः। तीर लिए हुए।

शौचम् – शुच् + अण्, प्र. ए. व., पवित्रता। स्वच्छ। सफाई।

श्रोत्ररसायनम् – श्रोत्रयोः रसायनम्, ष. तत्पु., नपुं, प्र. ए. व.। कर्णामृतम्। कानों के लिए सुखकर।

सदसि – सदस्, नपुं, स. ए. व., सभायाम्। सभा में।

सन्मित्रलक्षणम् – सद् मित्रं सन्मित्रम्,तस्य लक्षणम्, ष. तत्पु. नपुं. प्र. ए. व., श्रेष्ठमित्रस्य लक्षणम्। अच्छे मित्र के लक्षण।

समत्वभावना – तेषां भावना, ष. तत्पु. स्त्री. प्र. ए. व., प्रेम्णः परस्परं सहकारित्वस्य समत्वस्य च भावः। प्रेम, परस्पर सहयोग एवं समानता की भावना।

समाचरेत् – सम् + आ + चर, वि. लि., प्र. पु. ए. व.। आचरणं कुर्यात्। आचरण करे।

सविमर्शम् – विमर्शेन सह सविमर्शम्, तद् यथा स्यात्तथा अव्य, विचार पूर्वकम्। विचारपूर्वक।

सवैलक्ष्यम् – वैलक्ष्येण सह सवैलक्ष्यम्, तद् यथा स्यात्तथा, (अव्य) सलज्जम्। लज्जा से युक्त।

सशरम् – शरेण सहितम्, बाणसहितम्। बाणों के साथ

सहासम् – हासेन सह सहासम् तद् यथा स्यात् तथा। अव्य.,सस्मयम्। मुस्कराहट के साथ।

सम्भ्रमः – सम्+ भ्रम् + घञ्, पुं. प्र. ए. व., समादरः सम्मानजन्य घबराहट – हड़बड़ी।

संस्कृता – सम् + सुट् (स) + कृ + क्त, संस्कृत + टाप्, स्त्री. प्र. ए. व., परिष्कृता, भूषिता। संस्कार युक्त स्त्री व व्यक्ति।

सहस्रकृत्वः – सहस्रवारम्, अनेकशः। हजार बार – अनेकों बार।

स्थलमलाप-नोदिनः – स्थलानां मलं स्थलमलम् तस्य उपनोदिनः, ष. तत्पु., पु. प्र. ब. व.। भूमिमलापसारिणः। पृथ्वी के मल को दूर करने वाले।

स्थावरजङ्ग-मानाम् – स्थावराणिजङ्गमानि चेति स्थावर जङ्गमानि तेषाम्,। चराचराणाम्, जड़चेतनानाम्। जड़ और चेतन का।

स्थिरमतिः – स्थिरा मतिर्यस्य सः। बहुव्री. स. निश्चलबुद्धिः। दृढ़ मति वाला व्यक्ति।

स्थीयताम् – स्था + यक्, लोट्, प्र. पु. ए. व.। अवस्थानं क्रियताम्। रुकिए, बैठिए।

स्नेहसहयोग- – स्नेहश्च सहयोगश्च समत्वं च इति स्नेह सहयोगसमत्वानि,।

स्वसङ्कल्पसा-तत्येन – स्वस्य सङ्कल्पः स्वसङ्कल्पः तस्य सातत्येन, ष. तत्पु, स., नपुं. तृ. ए. व., स्वचिन्तनपरम्परया। अपने संकल्पों की निरंतरता से।

सादट्टहासम् – अट्टहासेन सह साट्टहासम्, तद् यथा स्यात्तथा। अव्य. अट्टहासपूर्वकम्– जोर से हँसना, खुलकर हँसना।

सात्त्विकम् – सत्त्व + ठञ्, नपुं. प्र. ए. व., सत्त्वगुणयुक्तम्। अच्छाईयुक्त

सिकता – स्त्री. प्र. ए. व., वालुका, रेत

सुखदुःखे – सुखं च दुःखं च ते – सुखदुःखे, द्व. स.। सुख और दुःख।

सुहृदाम् – सुहृत्, पुं., ष. ब. व., मित्राणाम्। मित्रों का।

सूक्ष्मदृष्टिः – सूक्ष्मा दृष्टिर्यस्य, बहुव्री पुं. प्र. ए. व.। विवेकपूर्णदृष्टिः। पैनी नजर, बारीकी से देखना।

हतसारथिः – हतः सारथिर्यस्य, बहुव्री. स.। हतसूतः। जिसका सारथि नष्ट हो गया हो।

हताश्वः – हता अश्वा यस्य, बहुव्री. स.। नष्टतुरगः। जिसका घोड़ा नष्ट हो गया है।

हतोत्साहेषु – हतः उत्साहः येषां, तेषु, बहुव्री. स., नपुं. स. वि., ब. व.। उत्साहहीनेषु। उत्साहरहित व्यक्तियों में।

हिमवान् – हिम + मतुप्, पुं. प्र. ए. व.। हिमालयः। हिमालय।

हेतुफले – हेतुः फलं च इति हेतुफले, द्व. स., नपुं., द्वि., वि. द्वि. व., कारणं कार्यं च। कारण एवं फल।

ह्रदम् – ह्रद, पुं. द्वि. ए. व.। जलाशयम्। तालाब।

ह्रियमाणाम् – ह्र + यक्, शानच्, स्त्री., नीयमानाम्। ले जायी जाती हुई को।